

लेखक

'हीना'—नाम देखि बहुतो पाठक चौंकला। अरबीक हीना मैथिलीक मेहदी नामे विख्यात अछि। मेहदी जखन फुलाइत अछि त' फूलक सौरभे समस्त परिवेश सुरभित भेल रहैछ। एकर पात पीसि महिलागण अपन हाथ मे लगबैत छथि। ई सौभाग्यक प्रतीक थिक, सिंगारक साधन थिक, सौन्दर्यबर्धक थिक।

हीना प्रेमकथा थिक। प्रेम जे मनुष्य कें मनुष्यत्व प्रदान करैछ, उदार बनबैछ, त्यागक शिक्षा दैछ। प्रेम जे सत्य थिक, शाश्वत थिक, सुन्दर थिक, निर्मल-निश्छल-निर्विकार थिक। प्रेम जाति-धर्म वा भौगोलिक सीमा मे आबद्ध नहि रहैछ। हीना-शिबू, मंगली-गंगा, पल्लवी-ललित एकर उदाहरण छथि।

हीना सनफ्रान्सिसको सँ साधुपुरा आबि हीरा बनि जाइत छथि। हीरा जे अनमोल रत्न थिक, धैर्यक प्रतीक थिक। हीरा मौसी धैर्यक शेष सीमाधरि अडिग-अविचलित रहि अपन नामक सार्थकता सिद्ध करैत छथि। आ हीराक पहिचान त' कोनो जौहरीए कें होएत छैक, केदार बाबू से जौहरी छथि ताइ मे संदेहक गुंजाइस नहि।

हीना सन अद्भुत-अभूतपूर्व कथाक सिरजनहार छथि केदार नाथ चौधरी। नवाग्रही-नवोन्मेषी! अपन बाट अपने बनबैत चलनिहार, मुदा समयक संग, आवयश्कताक आलोक मे। मैथिलीक प्रथम सिनेमा 'ममता गाबय गीत' प्रदर्शनक प्रयास मे 'अबारा' उपाधि सँ विभूषित भेल छला। प्रकारान्तर सँ हिनक आबारगी मैथिलीक लेल आशीर्वाद भेल, अन्यथा हीना केना भेटैत! केदार बाबू मैथिली साहित्यानुरागी लग तते परिचित छथि, तते पठित-प्रशंसित छथि जे हिनक पोथी साल लगैत-लगैत दोसर संस्करणक बाट जोहए लगैछ। हीना 'मिथिला दर्शन' मे धारावाहिक भावे प्रकाशित भेल अछि आ पाठक लोकनि जाइ तरहें एकर प्रशंसा कएलनिहें से शब्द मे व्यक्त करब संभव नहि। विश्वास अछि जे एकर सौरभे मैथिली साहित्यक परिवेश सदा-सर्वदा सुरभित रहत। कामना जे केदार बाबूक द्वितीय शैशव हिनक द्वितीय यौवनक रूप मे चिरभास्वर रहए!

(रामलोचन ठाकुर)



इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली



हीना

केदार नाथ चौधरी



हीना

केदार नाथ चौधरी



हीना

केदार नाथ चौधरी



इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

ISBN : 978-81-89450-84-7

हीना

© लेखक

रचनाकार : केदार नाथ चौधरी
हिडन कॉटेज, बंगाली कॉलोनी
लहेरियासराय, दरभंगा–846001
मोबा. : 93349 30715



प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
डब्ल्यू.जेड. 322, जेल रोड, नांगल राया, नई दिल्ली–110046
मोबा. : 09350951555; ई-मेल : indicainfo@gmail.com

दोसर संस्करण : 2020

मूल्य : ₹ 250/- टका

आवरण-चित्र
इंडिका इन्फोमीडिया

मुद्रक
आर. प्रिंट हाउस, हरिनगर, नई दिल्ली–110064

Heena : A Hindi Fiction by Kedar Nath Choudhary; Price: Rs. 250/-

हमर कहब अछि

अपने पढ़ल-लिखल छी, साहित्यप्रेमी छी, कोनो पोथी भेटल तँ ओहिपर आँखि बुलयबाक लुतुक अछि, तँ हमर परामर्श होयत, जँ आगाँमे जरूरी काज ठानल हो तँ कृपया एकरा छूबी नहि। छूलहुँ तँ ओ काज गेल, ई चिहुटि लेत। बिच्चेमे जँ मोड़ि देबै तँ हम बूझब, अहाँ की छी! श्री केदारनाथ चौधरीक आने उपन्यास जकाँ इहो पोथी चुम्मक थिकनि।

बाढ़िक लीलासँ ई उपन्यास शुरू भेल अछि। प्राकृतिक बाढ़ि तँ अछिए, सामाजिक बाढ़िक लीला सेहो देखब, जकर उत्ताल तरंगमे सभकिछु सना गेल अछि। एक दिस रेतमे भसैत सगर नगरसँ सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, विचार समरस भेल मिथिलाक एक छोटछीन गाममे अबैत अछि आ चानी पीटि जाइत अछि तँ दोसर दिस गामक जड़ताकेँ, एकरसताकेँ, गोलैसी आ आपसी वैमनस्यकेँ अपन लहरिमे समटि हलचल मचबैत सुदूर कोनो महानदमे भसा दैत अछि। बाढ़ि परिवर्तन अनैत अछि।

साधुपूरा, मिथिलाक बज्र देहात, छोटछीन गाम, सयक भीतरे आबादी। अनुसूचित जातिक बस्ती। ओही जातिक समाज, ओकरे कथा। मुदा सौंसे संसार समा गेल अछि ओहि गामक कथामे—देश-विदेश सभ। प्रेम-स्नेह, मेलजोल, झगड़ा-फसाद, शासन-प्रशासन, खेलधूप, गीत-कवित्त, नाटक-संगीत, शिक्षा-दीक्षा, इतिहास-समाजशास्त्र, राजनीति-पत्रकारिता, धर्म-दर्शन, राग-त्याग, विरह-मिलन—की नहि अछि! आ कतेक जीवन्त अछि! केहन सटीक अछि!

हीरा-शीबू, मंगली-गंगा, पल्लवी-ललित—एहि तीनू जोड़ाक दुनू इकाइ भिन्न-भिन्न नस्लक रहितहुँ, तकर बीचक राग-अनुरागकेँ, सम्बन्ध-सरोकारकेँ तेहन बारीकीसँ जोड़ल गेल अछि जे कथी ले' कनेको कतौ बेउरेब लागत! हीरा मौसी भने ईरानी माय आ मध्यप्रदेशी मुस्लिम पिताक संतान रहथु एवं पल्लवी उत्तरप्रदेशी बाला, साधुपूरा आबि विशुद्ध मैथिल भ' गेलीह। गंगाक अंकमे मंगलीयोकेँ मंगले-मंगल भेलैक। कोबी टिपिकल चरित्र, खाँटी मैथिल। नाटक आ कबडीक खेड़िये ग्राम्य सौन्दर्य एवं हीरा मौसीक गृहसज्जामे नगरीय अभिजात्यक दर्शन। अनेक उपकथा, सभ एक सूतमे गाँथल। परिणति सुखान्त।

कहलहुँ ने, सौंसे संसारकेँ, संसारक नीक-बेजायकेँ, शाश्वत आ सामयिक समस्याकेँ मिथिलाक एक छोटछीन गाममे, एहि पोथीक गनल पन्नामे, आनिक' राखि देलनि अछि लेखक। आब, अहाँ जँ पाठक छी, असल पाठक छी तँ भ्रमण करू एहिमे, रस लिय', ज्ञान बढ़ाउ। नहि छी तँ बनू। बन' पड़त अहाँकेँ।

(डॉ. भीमनाथ झा)

1.

देहातक जीवन, शांत आ मधुर। खेत मजदूरक एकहिटा सपना; भदइ कदइ, रब्बी फब्बी मुदा अगहन राजा। कातिक मासक कृष्ण पक्षक आरम्भ। साधुपूरा गामक पुबरिया च’र। दृष्टि जतय तक जायत धानक झुमैत हरियरी सँ पाटल धरती। जीव मात्र कैँ सभ तरहक तृप्ति, नचैत उमंग। किएक त’ धानक फसिल बहुत बरखक बाद फाटिक’ उपजल छल। तँ अगहन राजाक आकुल प्रतीक्षा। चाउर सँ कोठी भरत, नार-पुआर सँ खरिहान। मनुक्ख संगे मालजालक भरि बर्खक बुतात।

आजुक युग मे खेत सँ भरल च’र मे ठाम-ठाम पर बोरिंग अबस्से देखबै। तजबा बान्हक सटल एकटा बोरिंग। बोरिंग लग खर-खरहीक एकचारा घर। घरक सामने हरौथ बाँसक बत्ती सँ बनल मचान। मचान पर बैसल साधुपूरा गामक एक गोट नवजवान। तन्दुरुस्त आ सुन्दर कायाक मालिक। दुपहरियाक अन्तिम वेला आ कातिक मासक स्थिर भेल पवन मेँ सिहरन। मोन आ शरीर मे मादकता भरैक सभटा जोगार। प्रकृति पल्लव जकाँ कोमल। धानक गम्हरायल सीस मुग्धा नायिका जकाँ सुगन्धि पसारने झूला-झुलैत-मचलैत। नवजवानक नाम छल गंगा यादव। धोती, गंजी आ गरदनि मे कारी रंगक बद्धी। उमेर लगभग बीस बर्ख। गंगा एखन स्वयं प्रकृतिक अंग बनल चुपचाप मचान पर बैसल सामने टकटक देखि रहल छल। ओकर मोन कोनो बातेँ उधिया रहल छलै। बात की रहै तकर तसफिया के करत? मुदा कोनो एहन बात अबस्से रहै जे गंगा कैँ पुलकित कैने छलै। रहि-रहि क’ ओ अपन ठोर सँ सीटी बजा रहल छल।

पता नहि, गंगा सामने दूर मे की देखलक जे ओ एकाएक चंचल भ’ उठल। पूब मे जतय क्षितिज निर्लज्ज भेल धरती कैँ अपन आलिंगन मे पजियौने छल, ठीक ओहीठाम उज्जर-उज्जर फेन जकाँ किछु उधिया रहल छलै। गंगा ओहि फेन कैँ आँखि चिआरि-चिआरि क’ एक क्षण तक देखैत रहल। फेर साकांक्ष भेल, मचान सँ कुदि क’ नीचा आबि ठाढ़ भेल आ धरफड़ाइत तजबा बान्हक उपर पहुँचल। गंगा कंठ मेँ बलजोरी हवा भरलक आ जोर-जोर सँ चिचिआयल—अरौ बाप रौ बाप! जयनत्था बाहाक सुलिश गेट टूटि गेलै रौ बाप! बाढ़ि आबि रहल छौ। पड़ाइ जो रौ! पड़ा कैँ

अपन-अपन जान-प्राण बचबै जो रौ!

गंगा यादवक चिचिएनाइक असरि अबिलम्ब भेलै। धानक सीसक बोन सँ सैकड़ो मनुक्खक मूड़ी उगि गेलै। खेतक आरिए-आरिए छिड़िआयल स्त्री-पुरुष, धिया-पूताक अनघोल सँ च’र भरि गेलै। एक दोसरा कँ हाक पाड़ब, चिचिया-चिचिया के समाद कहब आ ताहू परसँ ई की केलहक हौउ भगवान, साधुपूराक नीक नसीब तोरा देखल नइँ गेल’ हौउ परमेसर...’ बजैत लोकक सामूहिक कन्ना-रोहट सँ सम्पूर्ण बाध भरि गेल। महीस, गाय, बड़द आ बकरीक डोरी तिड़ने लोकक झुंड बफारि कटैत अपन-अपन घर दिस बिदा भेल। किछु काल पहिने तक च’र मे जे महाशांति व्याप्त छल तकरा मनुक्ख एवं पशुक सम्मिलित चिकरब-भोकरब चीरि-फाड़ि क’ राखि देलक।

आब आगाँ की हेतै? जे हेतै से बुझल जेतै। एखन पड़ा, पड़ा क’ जान बचा। एक लग्गा ऊँच रच्छसबा बाढ़ि आबि रहल छौ तकरासँ बँच, प्राणक रक्षा कर। तजबा बाँध बड़ उच्च। अंग्रेजक बनाओल बाँधक उपर उभर-खाभर, सोझ-टेढ़, एकपेड़िया रस्ता। ओही एकपेड़िया रस्ता पकड़ने गंगा फूल स्पीड मे दौड़ल जा रहल छल। कनिकबे आगाँ बाँध दू फाँक मे विभक्त आ तकर बीच मे मोनि। मोनि एतेक ने गहींर जे ओकर पानि बैशाखो मे सुखाइत नहि छल।

गंगा अपना गति मे ब्रेक मारलक। ब्रेक कने जोर सँ दबा गेलै। गंगाक देहक बैलैन्स गड़बड़ा गेलै। ओकर अपना उपर कन्ट्रोल नहि रहलै। ओ खसल आ ऑंघरा गेल। कहुना के ओ फेर सँ ठाढ़ भेल। बान्हक काते-कात कातिक मासक नरम-नम दूभि राति भरि ओस पीबि-पीबि जवान बनल। जखने जवान तखने ओहि दूभि पर पिछड़ब अनिवार्य। गंगाक पयर दूभि पर पड़लै। ओ पिछड़ल आ बान्हक नीचाँ गुड़क’ लागल।

गंगा कँ होश भेलै। होश भेला पर देखलक जे ओ सिनुरिया काकीक मझिली बेटी मंगली कँ भरि पाँज पकड़ने ठाढ़ अछि। गंगा सभ दिन सँ ढील धोती पहिरैत छल। एखन ओकर धोती खुजि क’ एक लग्गा हटल माटि मँ लेढ़ायल-फेकायल रहै।

मंगली सेहो गंगा कँ भरि पाँज क’ पकड़ने छलि। गंगा एवं मंगलीक आँखि मे मात्र चारि आँगुरक दूरी। मंगलीक काजर पोतल आँखिमे ने लाज आ ने संकोच। मात्र ठोर पर हँसी झिझिरकोना खेलाइत। पसरल बत्तीसी मे सपनाक स्वाद। मंगलीक गोल-गोल चेहरा मे एहन भाव जेना ओकरा अनायास खुशीक असर्फी भेटि गेल होइक।

प्रेमक किलोल कर’बला दृश्य किछुए काल तक रहलै। तखने थोड़बे हँटल

सिनुरिया काकीक प्रलाप शुरू भ' गेलै—देखै जाहक हौउ गामक लोक! ई गंगवा बहुत दिन सँ हमर बेटी पर धपा रहल छल। आइ ओकरा मौका भेटलै आ सोझक' ओ अनर्थ कैऐ देलकै। माय गइ माय! कोना क' ई सरधुआ मंगली कैँ चहुटने छै? एकरा कोनो गत्तर मे लाजो छइ की नइँ?

गंगा आब पूर्ण होश-हबास मे आबि चुकल छल। ओकरा अपन धोती दिस धियान गेलै। 'अरौ सार नहि तन' बजैत, ओ धोती दिस झपटल। गंगाक अन्डरवीयर जहिं-तहिं मसकि गेल रहै, ठेहुन से छिला गेल रहै। मुदा कोनो बात पर बिना धियान देने ओ धोती कैँ अपन देह मे लपेटलक आ लजायल नजरिए मंगली दिस तकलक। मंगलीक आँखि सँ पराग झहरि रहल छलै।

सिनुरिया काकीक आशीषक बरखा भइए रहल छल। मुदा साधुपूरा गामक लोक कैँ ओहि दिस धियान नहि। सभ मनुक्ख बेकल। कियो चिल्हका पजियौने, कियो मालजालक गरदामी पकड़ने। खास क' जनानी अपन-अपन नूआक फाँड़ बन्हने बफारि कटैत गाम दिस पड़ा रहलि छलि। आपातकाल मे प्राण रक्षा करब सभ सँ जरूरी। तखन सिनुरिया काकीक प्रलाप सुनैत के?

सिनुरिया काकीक स्टॉक मेहक सभटा गारि निंघटि गेलै। मुदा गंगा आ मंगलीक प्रेमक बाजा बाजिए रहल छलै। सिनुरिया काकीक तामसक धधरा आरो धधकि उठलै। ओ मंगली कैँ ठेकना क' खोँखियाइत बाजलि—हगै धोंछी, हगै निरलज्जी! कोना बेनग्न भेल गंगवा तोरा मे घुसिआयल छलौ, से गामक सभटा लोक देखलकैए। तोँ कनिकबो त' लाज कर गइ छुच्छी? चल छौंड़ी गाम पर। ओतहि तोहर जवानीक कुटिया-पिसिया क' देबौ। तोहर गत्तर-गत्तर तोड़िक' राखि देबौ। तोहर चानि पर अंगोर ढारि देबो। बेलज्ज कहीं के!

नव जवानी मे गजब के ताव होइत छैक। सिनुरिया काकीक गारिक एकोटा फकरा ने गंगाक कान मे ढुकलै आ ने मंगलीक ताकब मे बाधा उत्पन्न केलकै। दूनू अहि संसार सँ बिलग अपन-अपन प्रेमक दुनियाँ मे उब-डूब करिते रहल। ताहि काल एहन समाखा बनि गेल जे प्रायः सृष्टिकर्त्ता अपन सृष्टि कायम रखैक औजार एवं लूरिक प्रदर्शन कहीं तखनहि ने क' देथि! सिनुरिया काकीक माथ पर जेना कियो इनहोर मांड़ ढारि देने होइ तेना ओ तिलमिलाइत बाजलि—हौ गामबला सब, हमर पंचैती क' दहक। देखहक गंगबाक करतूत? हे दीनानाथ, हे परमेसर! आब अहि गामक छौंड़ीक इज्जति कोना बचतै? दाइ गे दाइ! एहन अनर्थ कहिओ ने देखने छलियै।

तखने दुमसिया छागर कैँ कन्हा पर टँगने अपसियाँत बचकुन ओतए पहुँचल।

गंगाक जिगरी यार बचकुन ठमकि क' टाढ़ भ' गेल आ सिनुरिया काकीक अलापक प्रयोजन ताक' लागल। ओकरा तत्काल सभ बातक मर्म बूझ' मे आबि गेलै। ओ एक क्षण लेल अपन दोस्त गंगा दिस तकलक, फेर मंगली कैँ निहारलक। मंगलीक गोल-गोल गाल पर फतिंगा बैसल छलै। बचकुन सिनुरिया काकी कैँ चुप करैत कहलक—साओनक बाढ़ि सोनमाँ होइ, भादवक बाढ़ि किछु-किछु होइ आ आसिनक बाढ़ि किछु ने होइ। हगै काकी, ई छियौ कातिकक बाढ़ि। ताहू मे बाढ़ि एहन ने जबर्दस्त जे खेतक अन्न-संगे कोठीक अन्न सेहो दहा जेतौ। तखन? तखन सवाइएक आस ने? आब सवाइ देतै के? सवाइ लेल गंगेक आंगन मे जेबहिन ने? गंगाक बाबा माने मालिक बाबा सभ सँ धनिक, सभ सँ मातवर। गंगा अपन बाबाक दुलरुआ पौत्र, साधुपूरा गामक राजकुमार। गंगा कनेक मंगली कैँ छुबिए लेलकै त' कोन बज्जर तोरा कपार पर खसि पड़लौ? हगै काकी, एखन पहिने पड़ा क' जान त' बचो। जान-प्राण बाँचि जेतौ तखन पंचैती करबैत रहिहेँ।

बचकुनक बातक प्रभाव सिनुरिया काकी पर पड़लै। ओकर भविष्य डरे थरथरा क' वर्तमान मे आबि गेलै। सिनुरिया काकी चुप भ' गेलि। भयक कारणे ओकर उपरका दाँत निचका दाँतक पिसिया कर' लगलै। ठीके त' बचकुनमा कहलकए। खेत महक अन्न गिरलाक बाद ई हरशंखा बाढ़ि घरे-घर ढुकतै। नुआ-बस्तर संगे कोठी महक मुट्ठी-दू मुट्ठी अन्न कैँ सेहो चाटि जाएत। बचतै की? किछु ने बचतै। तखन त' गंगे बाबाक दुआरि पर पेटकुनियाँ दिए पड़तै ने? बेकारे ने गंगा मालिक कैँ गारि पढ़ि देलियै। सिनुरिया काकी कैँ अफसोच भेलै। ओ अपन ठोर कैँ लुत्ती सँ दागि देबा लेल मोने-मोन प्रण कैलक।

बाढ़ि लगीच आबि चुकल रहै। ओकर कानक पर्दा फाड़ैबला हहेनाइ डेराओन भ' चुकल रहै। सिनुरिया काकी मंगलीक डेन पकड़ि ओकरा घीचैत गाम दिस बिदा भ' गेलि।

साधुपूरा गामक लोक लेल बाढ़ि बिभीषिका नहि, जीवनक एकटा अनिवार्य हिस्सा छल। अबेर-सबेर ई एबे करैत आ अपन लीला देखेबे करतै। पीड़ापुर, बथनाहा आओर साधूपूरा पीड़ापुर पंचायतक तीन गोट गाँव। पीड़ापुर मे सभ किछु, जेना पक्की सड़क, बसक अड्डा, बाजार, स्कूल, पोस्ट ऑफिस, थाना, कनेटा अस्पताल, ग्रामीण बैंक आ पसिखाना। ओकर सटले बथनाहा गाम, मुसलमानक बस्ती, दू-दू टा मस्जिद।

साधुपूरा एक किलोमीटर पूब। सम बर्खक बाढ़ि सँ ध्वस्त भेल हकन्न कनैत कच्ची सड़क। ने बिजली आ ने आधुनिक जगतक कोनो टा तमासा। गामक एक मात्र अवलम्ब ठक्कन यादव।

ठक्कन यादव अर्थात् मालिक बाबाक वयस अस्सी-पचासी आ की ताहू सँ बेसिए। मुदा शरीर आओर मोन सँ नीरोग। हुनक दू गोट बालक भिखू यादव एवं गोनर यादव। दुनू संतान स्वर्गीय भ' चुकल रहथिन। भिखूक एकटा बेटा ललित यादव एखन पटना मे पढ़ैत छथि। गोनर कैँ दू गोट संतान। पैघ गगन यादव, चरफरिया आ सम्प्रति पीड़ापुर पंचायतक मुखिया। गगन कैँ राजनीतिक चसक, दस तरहक काज, गाम-घर एवं परिवार सँ अलग-थलग ओ पीड़ापुरक अपन नीजक आवास मे रहैत अछि। गगन सँ तेरह बर्खक छोट गंगा यादव अपन बाबाक बुढ़ाड़ीक एकमात्र लाठी गामे मे रहैत अछि। साधुपूरा गामक तीन-चौथाइ खेत, गाछी-बिरछी, परती-पराँत ठक्कन यादवक मरौसी।

तीन-चारि पुस्त पुरान, मुदा नाम नवकी पोखरि। पोखरिक दक्षिण भाग मे लगभग दस बिघाक डीह। ओतहि पोखरियापाटन पक्का मकान भेल मालिक बाबाक हवेली। हवेलीक आगाँ अइ कात सँ ओइ कात तक पसरल बड़ीटा खरिहान। खरिहान नीपल-पोतल आ ओकर कातेकात नार-पुआरक टाल पतियानी मे ठाढ़।

जनी जाइत मे भिखू आ गोनरक विधवा, पुतहु मे गगन यादवक पत्नी पार्वती। बाँकी सभटा नोकर-चाकर, दाइ-टहलनी सँ मालिक बाबाक आंगन-दलान भरल-पूरल चहल-पहल।

मालिक बाबाक हबेलीक पश्चिम राधा-कृष्णक मंदिर, चहर-दिबारी सँ घेरल आ फुलबारी सँ सजल। सामने पोखिरि मे पक्का घाट, साफ-सुथरा, खलखल हँसैत। मंदिरक पश्चिम धात्रीक विशाल गाछ, जकर जड़ि मे जलढरीक स्थान। तकर सटले पश्चिम चुनल-चुनल आम, कटहर, जामुन, नारियल एवं नेबोक मनमोहक बगीचा। सबहक अन्त मे वंशीबटक गाछ। तकर जड़ि मे एक गोट सुन्दर, स्वच्छ, शांत पवित्र सिकमी घर। ओहि घर मे रहैत छथिन हीरा मौसी। हीरा मौसी अति वृद्धा महिला छथि आ हुनक जड़ि-छीप द' गामक लोक कैँ किछुओ ने बुझल छैक। मुदा साधुपूरा गामक सभटा मनुक्ख हीरा मौसीक घरक रस्ता जयबा काल राधा-कृष्ण मंदिरक संगहि ओहू घर कैँ प्रणाम अबस्से क' लैत छल। किएक यौ? अरे, गामक सबसँ आदरणीय मालिक बाबा जाहि हीरा मौसीक आदरेटा नहि एक तरहेँ पूजा तक करैत छथिन, तनिका आन कियो अवहेलना कोना क' सकैत छल?

बाँकी साधुपूरा गामक आबादीक घर-आंगन निचला जमीन मे, जे बाढ़ि अबिते पानि मे डुबि जाइत छल। थोड़े हटल एकटा आओर टीला सदृश उचाँस जमीन जतय मुसहर जातिक वास। तकर बहुत हटल, बुझि लिअ बथनाहा गामक सटल, डोम जातिक अलगे निवास स्थान। मनुहारि साँझक स्याह भेल झलफली पसरि चुकल

रहै। गामक सभटा मनुक्ख मालिक बाबाक खरिहान मे जमा भ' गेल छल। सबहक मालजाल खरिहानक एक कात बन्हा गेल छल। जकर जे किछु बचल-खुचल नुआँबस्तर छल से सैंता गेल छल। गामक अनेरुआ एवं पोसुआ कुकूरक हँज तक मालिक बाबा आश्रय मे पहुँचि चुपचाप बैसि गेल छल। ओहो त' गामेक हिस्सा, ओकरो कौर भेटबे करतैक। सभ कँ बुझल रहै आ ई एक तरहक परिपाटी बनि चुकल छलै जे जाबे तक बाढ़िक रेड़ा रहतै ताबे तक मालिक बाबा दिस सँ साधुपूरा गामक प्रत्येक प्राणी कँ भोजन एवं आश्रय भेटिते रहतै। मालिक बाबाक बखारी मे सबहक हिस्सा। मालिक बाबा सबहक प्राण, सबहक भगवान।

एखन मौगी आ मनसाक अलग-अलग झुण्ड। सभक ठोर सिअल। धिया-पूता सेहो सहमल। निस्तब्ध राति मे बाढ़िक गर्जना। सभक छाती दरकि रहल छलै। सभकँ अपन-अपन चिंता। नुआ-बस्तरक गप्प नहि, बुतातक सेहो फिकिर नहि। तखन कोन बातक घुड़घुड़ी? यौ, कहुना घर-आंगन दहाइ सँ बाँचि जाए। मुदासे अइ बेरुक बाढ़ि मे नहिए बचतै। नेपालक छोड़ल पानि मे ततेक ने प्रवाह होइत छैक जे सभ किछु कँ नाश कइएक' छोड़तै। जरलाहा जयनत्था बाहाक सुलिश गेटक बनलै पटौनी कर' लेल आ बनि गेलै जानक दुश्मन। सुलिश गेटक मरम्मति सभ साल होइत छै। मुदा निरमलीक बालु आ सीमेन्टक जोड़न मे कतेक दम्म जे बाढ़िक बेग कँ सहतै? जाए दिऔ, जे होइत छै तकरा होब' दिऔ। अइ ठामक लोकक नसीब मालिक बबाक हाथ मे सुरक्षित छै। तखन चिंता कथीक? मथफोड़ौअलि कथी लेल?

मालिक बाबाक कर्मचारीक फौज मे जेठ कमतीआक नाम भेल कारी मंडल। कारी मंडल पाँच हाथक जवान मुदा मौँछ पाकल। कारीमंडल आवाज देलनि—कत' छएँ रौ बचकुनमा? एमहर आ। मालिक बाबाक आदेश सुन। दू-तीन गोट हैंड लाइट जरा दहीन। अन्हरिया जेना समूचा संसारे कँ छापि लेने होअय। खरिहान मे किछुओ ने सुझैत छैक। ऊपर सँ बाढ़ि जमदूत बनल झपट्टा मारि रहल छै।

बचकुन जातिक पासी, मुदा ओ ताड़-खजूर पर सँ कटिया नै उतारै अछि। ओ पीड़ापुर बाजार मे साइकिल मरम्मतिक दोकान खोलि लेने अछि। बचकुनक टक्करक मिस्तरी ओहि परगमा मे दोसर नइँ छल। बचकुन छड़पि क' कारी मंडलक लग पहुँचल आ बाजल—हैइए हम आबि गेलहुँ यौ कमतीआ बाबू! लाइट कत' अछि। सबहक मेन्टल ठीक छै की ने? तेल त' सभ लाइट मे भरले हेतै? हँ, हँ पोकर त' चाहबे करी। बिना पोकरक सार लाइट जरत कोना?

बचकुन एक-एक क' तीन गोट लाइट जरा देलक। चारूकात इजोत छिड़िया गेलै। प्रकाश होइतहि दुखक अन्त। सभ कँ संतोख भेलै। ऊपर दलान मे गंगा अपन

बाबा लग अलग कुर्सी पर बैसल छल। ठीक सामने दलानक नीचाँ ओलती मे मंगली बैसलि छलि। ओतहि गामक आरो छौंड़ी सभ सेहो बैसलि छलि। मंगली जेना अरहुलक बीच टुह-टुह लाल गुलाबक फूल, सौन्दर्यक रानी। सुआइत गंगा मतवाला बनल अछि? एखन लाइटक इजोत मंगलीक आंगी कैँ चिरैत ओकर गोरकी चमड़ी कैँ चमकौने छल। गंगाक नजरि मंगलीक पयरक पाजेब पर अटकल रहै।

मालिक बाबाक देबानजी रहथि कल्लू मरड़। जन-बौनिहारक हाजरी, आमद-खर्चक हिसाब, खाता-खेसरा संग कट्ठा-धूरक नापी सभटा काज हुनके जिम्मा। बुझि लिअ' ओ मालिक बाबा दरबारक टोडरमल छलाह। कल्लू अपन चश्मा तकलनि, अपन कान पर चश्माक सुतरीबला डोरी बन्हलनि आ गिनती-मिलान शुरू कैलनि—सुरजू, बलबा रामजी हजरा, असर्फिया, रतिचना, महिन्द्रा दुसध टोली सँ, धनुक टोली सँ रामा, विदेसरा, जुगला, सुखीता, बदरा, मोहना। सभ ठीक। आब ततमा मे बौएलाल, नथुनिया। हँ, हँ सभटा लोक आबि चुकल अछि। गुदरिया उठि क' बाजल—देबान बाबू, मलहटोली सँ हम, अनुपा, सरुपा, लखना मधुरिया आ रमविलसा। फेर चमर टोलीक गुमनियाँ, खतबे टोलक अवधीया आओर हजामक हेड नुरखुरवा अपन-अपन टोलक हाजरी नोट करौलक। कनेकाल तक गिनती-मिलानक काज होइत रहल। कोनो अंदेसा बला बात नहि। पुरुष महिला आ तकर नेना-भुटका कियो ने छूटल। सभ कैँ इतमीनान भेलै। ठक्कन यादवक परिवार समूचा साधुपूरा गामे। कियो छूटि ने जाए सैह छल मालिक बाबाक हुकूम। जनी जाइत, धिया-पूत, मालजाल सभटा सुरक्षित मालिक बाबाक खरिहान मे पहुँचि चुकल छल।

ताहीकाल खरिहानक उत्तर-पूब कोन जतय अन्हार जकाँ रहै, हल्ला भेलै। की बात छै हौ? कियो खौं-खौं करैत जवाब देलक-जगताक गोला बड़द अपन पगहा तोड़ि देलकैए। ओ सभटा मालजाल कैँ हरकौने छैक।

जगता अपन बड़द दिस दौड़ल। फुदरा ओतहि बैसल रहि गेल। ओ टस सँ मस नहि भेल। तकर कारण रहै। ओकरा जगता संगे भजैत रहैक एक दिन हरबाहिए काल ओकरा जगताक गोला बड़द उठा क' पटकि देने छलै। फुदराक डाँड़क किल्ली छिटकि गेल रहै। ओकर घरबाली अदावनबाली महिनो तक झाड़-फूक करबितै रहलै तखन कहुना क' ओ उठि क' ठाढ़ भेल छल। फुदरा जगता संग बड़दक भजैत तोड़ि लेने छल।

सभ तरहक होहल्ला शांत भेल। मालिक बाबाक खासम खास खबास मटरा चिचिआयल—भातक अन्तिम बट्टुक उतरि गेल अछि। दालि कने पनिगर छै तैँ चुल्हिए पर भफा रहलैए। मुदा भोजन कैँ तैयारे बुझू। सभ पतियानी मे बैसि जाउ।

अपन-अपन थारी-लोटा सोझाँ मे क' लिअ। परसिया लेल, कत' छह हौ अधिकलाल, खुबलाल आ छेदीलाल। तीनू भाइ फाँड़ बान्हि लैह आ एमहर आबि जाह। हे, हे, ओमहर आगाँ दिस जुनि जाइ जाह। ओमहर गोबरक खादि छै।

मटरा किछु आरो बजितय, मुदा लाइट लग उड़ैत फतिंगा मे सँ एकटा ओकर मुँह मे पैसि गेलै। मटरा ठामे बैसि गेल आ वैए-वैए कर' लागल।

साधुपूरा एकटा छोटसन गाम। एखन किछु लोक काज-धन्धा लेल बाहर गेल छल। गामक कुल जनसंख्या सयक भीतरे। सभक खेनाइ पिनाइ भ' गेल। सभ खरिहाने मे एत ओत' सूति रहत। मालजालक सेहो सल्तनत क' देल गेलै। बकरीक की करबै? ओ त' राति भरि मेमियाइते रहतै। देखियौ ने, पोसुआ आ अनेरुआ सभटा कुकूर बिना झगड़ने अपन-अपन हिस्साक कौर खा रहल अछि। आपातकालमे सभ कैँ मिलिजुलि क' रहबाक छै, से ओकरो सभ कैँ बुझल छैक।

मालिक बाबा सभ काज सँ निश्चिन्त भेलाह। ओ आरामकुर्सी सँ उठि आँगन दिस बिदा भेलाह। बाबा आब भोजन आ विश्राम करताह। मटरा हुनक पाछाँ-पाछाँ बिदा भेल। मुदा ताहिकाल बाध दिस सँ एकटा टाहि अयलै। बाढ़िक हहेनाइ कम भ' गेल रहै। मुदा ओकर लहरि एखनो गाम-घर, गाछ-वृक्ष मे ठक्कर मारिए रहल छलै, अपन माथ फोड़िए रहल छलै। बाढ़िक लहरि पर आरूढ़ टाहि मे एहन स्वर-लहरी छल जेना टाहि देनिहार गोहारि क' रहल होथि—हमरा बचाउ, हम डूबि रहल छी।

टाहि सुनिते मालिक बाबा थकमका क' ठाढ़ भ' गेला। हुनक कोमल हृदय व्यथित भ' गेलनि। हुनका संगहि समुच्चा साधुपूरा पीड़ा मे कराहि उठल।

सभ कैँ बुझल छै जे ई टाहि देनिहार के छथि। ई थिकाह शिवू बाबा। साधुपूरा गाम मे दू गोट अनजान अद्भुत प्राणी रहैत छथि। बंशीबट गाछक नीचाँ सिकमी घर मे सितार बजबैत हीरा मौसी आ गामक बाध मे आरोह एवं अवरोह स्वरलहरीक मध्य विचरण कर' वला शिवू बाबा। यद्यपि शिवू बाबा अही गामक निवासी छथि, मुदा हिनका ने घर छनि आ ने आंगन। हिनकर कुटुम्ब-सम्बन्धी सेहो कियो नहि छनि। ई असगरे छथि आ बाधे मे रहैत छथि। कखनो काल कइएक मास लेल ई विलुप्त भ' जाइत छथि आ फेर अपने सँ प्रगट भ' कोनो खत्ता मे पड़ल रहैत छथि। हिनका ने जाड़ होइत छनि आ ने लू लगैत छनि। ई की खाइत छथि, की पिबैत छथि ककरो किछु ने बुझल छैक। डाँड़ मे धोती, खुजल-उघार देह आ मुखमंडल पर पसरल अतीतक एकाग्रता। कहिओ काल शिवू बाबाक कंठ सँ सप्तक स्वर अन्तरा मे पिराओल बहराइत अछि जकरा सुनि साधुपूराक सभटा प्राणी वेसुध भ' जाइत अछि। शिवू बाबा अपना मे एतेक दुख किएक समेटने छथि? के कहत? मुदा अहि

जिज्ञासाक समाधान छैक। ई अनुमान नहि, कल्पना नहि, एकदम सँ सत्य छैक जे मालिक बाबा कैँ हीरा मौसी आ शिवू बाबा द' रत्ती-रत्तीक बात बुझल छनि। मुदा मालिक बाबा सँ अहि बातक जिज्ञासा करथिन के? ककरा मे एतेक साहस छैक, सामर्थ छैक?

अएँ हौ, शिवू बाबा अइ बेरुका बाढ़ि मे कहूँ उकरू मे त' नहि फँसि गेलाह? हे ईश्वर! हुनकर खोज-पुछारि होयब जरूरी छै। सभटा लोक साकांक्ष भ' गेल। धिया-पूता सेहो कान पाथि देलक। मालिक बाबा त' दू डेग आगाँ बढ़ि थरथराय लगलाह अछि। मटरा मालिक बाबाक मुखमंडल पर पसरल चिंता आ व्याकुलता देखि स्वयं उद्विग्न भ' गेलए। समूचा गामे शिवू बाबाक कुशल जानबाक लेल अधीर भ' गेल।

अनठैला सँ काज नहि हेतौ। शिवू बाबाक खोज करब जरूरी छौ। बाढ़िक ज्वार सँ बँचल जा सकैत अछि। मुदा मालिक बाबाक दया, स्नेह एवं करुणाक बाढ़ि सँ बचब मुश्किल। एखन मालिक बाबाक वेदना समस्त गामबासीक हृदयक शूल बनि गेल छल।

तत्काल गामक चुनल-चुनल छौंड़ा सभ एक ठाम जमा होब' लागल। बचकुन गंगाक खोज मे लागि गेल। गंगा मंगलीक पछोर पकड़ने हीरा मौसीक घर दिस गेल छल।

मंगली हीरा मौसीक घर सँ बाहर आबि अन्हार मे ठाढ़ गंगा कैँ कहलक–शिवू बाबाक टाहि मौसीक कान तक पहुँचि गेलए। आब ओ बेकल भेलि राति भरि उपासे मे रहथिन। अँए यौ, शिवू बाबाक खोज करै लेल अहि बाढ़ि मे जेतै के? अहाँ जेबै ने? अहाँ मालिक छियै तइयो अहाँ के जैबाक चाही। हम मौसी सँ माँगि क' टर्च अनने छी, हैए लिअ।

मंगली पछिला चारि-पाँच बर्ख सँ मौसीक सेवा मे अछि। मौसीक प्रभाव मंगली पर नीक जकाँ पड़ि चुकलैए। मंगलीक सोचब, बाजब आ पहिरब-ओढ़ब गामक आन-आन छौंड़ी सँ भिन्न भ' गेलैए। मंगली कैँ मौसीक पसिन्न-नापसिन्न द' नीक जकाँ बुझल छै। गाम मे एकाएक बाढ़ि प्रवेश कयने छल। बाढ़ि सँ भेल नोकसान सभ सहत, मौसियो सहती। मुदा शिवू बाबाक क्षति की मौसी बर्दास्त क' सकतीह? कथमपि नहि। मंगली चिन्ता मे डुबलि गंगा दिस ताकि रहल छलि।

मंगलीक आग्रह गंगाक मनोरथ। गंगा टॉर्च लेने आपस भेल। राधा-कृष्ण मंदिर लग ओकरा बचकुन भेटलै। दुनू दोस्त अपना मे मंत्रणा कैलक, विचार कैँ स्थिर कैलक आ तखन खरिहान मे आपस आयल। खरिहान मे छेदिया, मधुरिया आ

कोबिया तैयार भेल ठाढ़ छल। गंगा आ बचकुन कैँ देखि छेदिया बाजल–आब अइ कोबियाक अगत्तीपना देखिऔ। सभ काज मे ई अगिले मांगि पर रहत। एकरा ने दम छै आ ने लूरि। एखुनका बाढ़िक मुकाबला कर' मे खतरे-खतरा, जान जैबाक डर। तखन कोबिया संग जयबा लेल जिद्द पसारने अछि। अहि डरपोकहा कैँ संग ल' जेबा मे कहूँ हमसभ ने बाढ़ि मे भसिया जाइ, तकर हमर भय भ' रहल अछि।

कोबीक असली नाम छल सीताराम चौपाल। ओकर बाप सुरता चौपाल मालिक बाबाक छोटका कमतिया छल। सीताराम शरीर सँ कमजोर मुदा बुद्धि सँ तेजगर छल। ओ सतमा तक पढ़ल छल आ नित्य पीड़ापुर हाइ स्कूलक हिन्दीक टीचर सदानन्द झा 'दीन' कैँ उठौना दूध पहुँचबैत छल। दीनजी मैथिली भाषाक मूर्धन्य कवि छलाह। सीताराम दीनजीक आन-आन तरहक टहल-टिकोरा सेहो क' दैत छल, तैँ ओ हुनकर अतिशय कृपाक भागी बनि गेल छल। दीन जी कविता रचना करथि आ श्रोताक अभाव मे सीतेराम कैँ अपन कविता सुना मोन कैँ हल्लुक करैत छलाह। कवि सम्मेलन मे कइएक बेर टोका-टाकी, धक्कम-धुक्का, मुक्कम-मुक्का एवं जुत्ता-जुतौअलि तक भ' जाइत छलै। दीन जी एक तरहँ अपन रक्षार्थ सीताराम कैँ कवि सम्मेलन मे ल' जाए लगलाह। हिन्दी मे कहबी छै ''रसरी आबत जात है शील पर होत निशान।'' अनेक कविक समागमक कारणे सीताराम चौपालक हृदय मे मैथिली कविता रूपी कमल-पुष्पक प्रस्फुटन होब' लगलै। पीड़ापुर सँ अपन गाम ऐबा काल ओ तुकबन्दीक नांगरि पकड़ि कविता बना-बना क' गाछ-बृक्ष, चिड़ै-चुनमुनी कैँ सुनाब' लागल। एकदिन ओ साहस कैलक आ अपन बनाओल कविता दीनजी कैँ सुनौलक। दीनजी सीतारामक कविता सुनलनि आ ओकर प्रतिभा कैँ नमन कैलनि। सीतारामक कविता मे मात्राक मलहम लगा एवं अलंकारक चमत्कारी बिन्दी साटि दीनजी अपन भृत्यक कविता कैँ अधिक धारदार आ मुखर बना देलनि। अहि तरहँ खाँटि झा मिसिरक कवि-सम्मेलन मे चौपाल नामक कवि कैँ ठाढ़ क' दीनजी सभक प्रशंसाक भागी बनि गेलाह। ओतबे नहि, दीनजी सीतारामक नवीन नामाकरण सेहो कैलनि। सीताराम आब कवि चूड़ामणि चौपाल नाम सँ प्रसिद्ध भ' गेल। कवि चूड़ामणि चौपाल निधोख कवि सम्मेलन मे जाए लागल। ओकर जेहन केहनो कविता होइक, चौपाल टाइटिलक दुआरे कवि सम्मेलन मे कविता पाठ करैक सभ सँ पहिने ओकरे आग्रह कएल जाए लगलै।

अइ तरहँ बहुत समय बीति गेल आ कवि चूड़ामणि चौपालक प्रसिद्धि चारूकात पसरैत रहल। ओइ दिन कवि चूड़ामणि चौपाल दीनजी सँ प्राप्त डोपटा कैँ कन्हा पर राखि कवि-सम्मेलन मे पहुँचल छल। सभ दिन जकाँ ओकरा सभ सँ पहने कविता

पाठ करक नोत देल गेलै। ओ अपन 'सभ किछु अहि मरुआक दोबर' शीर्षक कविता पाठ आरम्भे कयने छल। मंच पर लगभग मोट-दुब्बर सय गोट कवि छलाह। मंच कविक भार सहि नहि सकल आ तरतरा क' टूटि गेल। कवि चूड़ामणि चौपालक छातीक दू-तीन गोट हड्डी टूटि गेलनि।

सुरता चौपाल कँ अपने बेटाक गितविधि द' बुझल नइँ छलै से बात नहि छल। कम उमिर मे छौंड़ा कूद-फान करिते अछि, नाटक-सर्कस देखिते अछि। तँ सुरता अपन बेटा पर अधिक ध्यान नहि देने छल। अस्पतालक उपचारक समय सुरता कँ अपन पुत्र कँ कवि बनि जैबाक बातक पता चललै। कवि बनि जायब एक तरहक रोग भेल आ अहि रोग मे छातीक हड्डी टूटि जाइत छैक। दवाइ-दारूक खर्च, बोनि बरदा क' अस्पताल ओगरब आ बेटा कँ कवि बनि जायब, सुरताक दिमाग गरमा गेलै। ओ अपन अवारा बेटा कँ चेतबैत कहने छल—आब जँ दूध पहुँचैबाक लेल पीड़ापुरक मास्टर लग गेलएँ त' छातीक बचलाहा हड्डी तोड़ि देबौ।

ताहि दिनक बाद सीतराम फेर सँ महीसक चरबाहि कर' लागल। जाहि समय मे ओ कविता गढ़ै छल, साधुपूरा गाम मे ओकर नाम कविजी आ पुनः कोबीजी पड़ि गेल रहै। बाद मे कोबी नामे ओ एतेक ने ख्याति प्राप्त क' लेलक जे ओकर असलका नाम नीक जकाँ हेरा' गेलै।

छेदियाक आपत्ति कँ खारिज करैत बचकुन कहलकै—संगे जाइ छै ने त' जाए दहीन। बेसी खचरपना करैत त' कोबिया कँ बाढ़ि मे कतौ भसिया देबै।

मालिक बाबाक पौत्र गंगा, गंगाक दोस्त बचकुन, कोबी, छेदिया आ मधुरिया कुल पाँच बीछल जवान शिवू बाबाक खोज मंडलीक सदस्य बनल। तैयारी शुरू भेल। डोरी-पगहा आनल गेल आ काज जोगरक ओकर रस्सा बनाओल गेल। पाँचो वीर पुरुष अपन-अपन डाँड़ मे रस्सा लपेटलक। सभक हाथ मे लाठ पकड़ा देल गेलै। कोबी हाथक लाठी ओकर देहक ओजन सँ कमे रहैक। कोन ठेकान हिंसक जानवर सँ पाला पड़ि जाइ। मधुरिया अलग सँ सहत सेहो ल' लेलक। कोबी अपन देहक कुरता निकालि फतुरनक बेटी कमली कँ देब' लागल ताहि काल एक मात्र जरैत हैंडलाइट भुकभुका क' मिझा गेलै। दू गोट लाइट पहिने मिझा गेल रहै। चारूकात खूब अन्हार पसरि गेलै। बचकुन अपन डाँरक रस्सा खोलि लाइट लग पहुँचल आ ओकरा कनठी देब' लागल। लाइट भक द' जरि गेलै। सभ दिस इजोत पसरि गेल। तखन कोबी कमलीक गाल सोहरबैत ओकरा दुलार क' रहल छल। प्रत्येक पुरुषक सफलताक पाछाँ नारीक हाथ रहैत छैक। कमली सम्प्रति कोबीक यश, कीर्ति एवं प्रतिष्ठाक प्रेरणा छलि। ओकर एबज मे कोबी अपन दुनू महीसक गोबर कमली कँ फ्री दैत छल।

बजरंगबलीक जयकाराक नारा दैत मंडली पानि मे उतरल। बगराहा डोभ तखन मैझिली बाध, कतरही बाध—तकर चिकनी माटि पर पएर पिछड़तौ मुदा डर नहि करिहँ। थाल मे आंगुर घँपि क' चल। डोभ भेटतौ त' सावधान, च'रक डोभ बड़ गहींर, लग्गा भरि गहींर पानि मे जैबाक अंदेशा। मुदा होशियार खोज मंडली कँ कोनो परवाहि नहि छैक। उत्तर-पूब कोन मे फैटकी बाध। ओहि ठामक जमीन ऊँच। केहनो बाढ़िक बाप ने अबै, फैटकी बाधक जमीन जगले रहैत अछि। ओमहरे सँ शिवू बाबाक टाहि आयल छलै। खोज मंडली फैटकी बाध कँ ठेकना क' आगाँ बढ़ि रहल छल।

खोज मंडलीक अन्तिम ठेकाना कतेक दूर? मुश्किल सँ आध कोस। मुदा एखन बाढ़िक रेड़ा मे एकर दूरी बुझि लिअ सुल्तानगंज सँ बाबाधाम। पानिक वेग मे धरती पर पयर रोपब कठिन। मुदा मालिक बाबाक प्रति समर्पण आओर शिवू बाबा लेल स्नेह। साधुपूरक लोक अहि दूनू जीवित भगवानक लेल जँ प्राणक निछावर कर' पड़तै त' करतै। तखन परवाहि कथीक? बाबा बैद्यनाथ पर धियान धरू आ आगाँ पानि कँ चिरैत बढ़ैत रहू।

एकाएक कोबी बफारि कटलक—अरौ बाप रौ बाप! देखहक ने, मुर्दा भसिआइत एमहरे आबि रहल छौ। ई अबस्से कोनो नेपाली बोकोक लाश हेतै? बुजहक यरबे! फाटक खोलि पानि बहबैक मजा।

सभक आगाँ गंगा आ सभक पाछाँ बचकुन। गंगाक गरदनि मे मंगलीक देल तीन सेलबला टॉर्च लटकल छलै। गंगा भिजले हाथे टॉर्चक स्वीच दबलक आ अपन गरदनि कँ टेढ़ क' टर्चक फोकसिंग कँ सोझ कैलक। तखन बाजल—मुर्दा नहि ढँग छै। ढँग मे मुदा गीदर अथवा खिखिरक लाश सटल छै।

चुमना खेतक आड़ि मे गीदर, खिखिर आ साँपक सहस्रो बील। सभ किछु कोबी देखने छल। ओकर करेजक धुकधुकी तेज भ' उठलै। 'बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय।' कोबीक अपन कयल छोट-पैघ पाप मोन पड़' लगलै। आपतकाल ज्ञानचहु जन्मै छैक। भय एवं पश्चाताप मिश्रित भाव सँ ग्रसित कोबी छेदिया कँ भरि पाँज क' पकड़ि लेलक।

छेदियाक शरीरक साइज ठमकल। ओ गामे मे लटगेनाक दोकान करैत अछि। किलो-दू किलो कँ घुसकबैत-घुसकबैत ओकर सभ आंगुर मे पचास ग्रामबरोबरि ठेला भ' गेल रहै। पानि मे भिजला सँ सभटा ठेला मे ओकरा टीस मारैत छलै। ओही बिसबिसाइत ठेला बला अंगुरीक मुट्ठी सँ छेदिया कोबीक कनपट्टी मे ठुस्सा मारैत चिचिआयल—ई सार कोबिया, अपनो डुबत आ हमरो डुबाओत।

मधुरिया जातिक मलाह। ओ मोने-मोन रोहु, भाकुर, बुआरी कँ तराजू पर तौलि

रहल छल। बाढ़ि अएला सँ गामक पोखरि, खत्ता आ बाधक मोनि, डोभ माँछ सँ भरि जाइत छै। छोटका-छोटका चभच्चा त' माँछक खाने बनि जाइत अछि। मगर मधुरियाक कल्पना मे व्यवधान भेलै। कोबी छेदियाक बदला मधुरियाक गरदनि पकड़ि कराह' लागल—मधुरी भाइ हौ मधुरी भाइ! हमरा बचाब हौ मधुरी भाइ! हमरा डाँड़ मे गहुमन साँप हबकने अछि हौ मधुरी भाइ! आब हम नहिए बाँचब रौ बाप।

ठीके मे कोबीक डाँड़ मे डरकस जकाँ साँप लेपटायल रहै। मधुरी साँप कैँ तीड़ि क' कोबियाक डाँड़ सँ अलग केलक आ बाजल—ई सार ढौंढ़ छी। एकरा बीख होइते ने छै, मुदा ई खिसिआह बड़ भारी। सही मे ई कोबियाक डाँड़ मे हबक्का मारने छलै।

मधुरिया घिरनी जकाँ घुमबैत साँप के दूर फेकलक। फेर कोबी कैँ तजबीज कैलक। कोबीक गरदनि कैँ सोझ करैत मधुरिया बाजल आब लिअ, कोबिया डरे बेहोश भ' गेलैए। आब एकरा की करबै?

सही मेँ ढौंड़क हबक्का दुआरे कोबीक प्राण निकलल त' नई रहै मुदा निकलै लेल उताहुल भ' गेल छलै। कोबी मधुरियाक गरदनि मे लटकल, ठोर पटपटबैत बेहोश भ' गेल छल।

खोज मंडली असमंजस मे फँसि गेल। छेदिया अकछा गेल छल, कहलक—हम त' पहिने सभ कैँ चेता देने रही। कोबिया अधकपारि अछि। आब लिअ, झंझट ठाढ़ भ' गेल ने?

बचकुन सभ सँ होशियार आ काबिल। ओ जुगुत भिरौलक आ ताहि अनुसारे छेदिया आ मधुरिया कैँ तरकीब बुझौलक। छेदिया आ मधुरिया अपन-अपन लाठी कैँ सोझ क' कोबीक दूनू काँख बाटे पइसा ओकरा टानि लेलक। कोबीक मूड़ी सोझ त' नइँ रहलै मुदा पानिक उपरे लटकल रहलै। खोज मंडली बाधा कैँ पार करैत अपन लक्ष्यक लेल यात्रा शुरू कैलक।

आब कोन कठिन एवं परिश्रम बले खोज मे चलल मंडली फैटकी बाधक उतरबरिया धूर लग पहुँचल छल तकर ज्ञान कोबी कैँ नहि भ' सकलै। ओकरा जखन होश भेलै, भक टुटलै तखन पूब दिस सूर्यक किरण फूटि गेल रहै। कोबी कैँ सुगबुगाइत देखि बचकुन कहलकै—आब भामट समट रौ कोबिया! उठि क' बैसि जो।

कोबी उठल आ चहुँदिसि तकलक। मात्र तीन-चारि लग्गा हटल शिवू बाबा बैसल छलाह। ओतइ गंगा हुनका मे सटल बैसल छल। शिवू बाबाक दहिना हाथ गंगाक माथ पर छल जेना ओ गंगा के आशीर्वाद द' रहल होथि। कोबी उठि क' ठाढ़ भेल आ शिवू बाबाक लग मे जयबाक लेल डेग उठौलक। बचकुन ओकर हाथ पकड़ि

ठामे बैसा देलकै आ कहलकै—गंगा कैँ छोड़ि कियो बाबा लग नहि जेतै।

कोबी अचकचाइत बाजल—अँए यौ, शिवू बाबा त' जिविते छथि।

धोती लपेटने उघारे देहे शिवू बाबा प्रायः कोबीक बाजब सुनि लेलनि। ओ भभाक' हँसि देलनि। हुनकर नाद सँ निकलल निर्दोष हँसीक ध्वनि सँ सभटा जड़-चेतन तरंगित भ' उठल। खोज मंडलीक सदस्यक चेहरा दमकि उठलै। बाढ़ि जेना आयल छल तहिना चल गेल रहए। बाधक हरीतिमा थोड़-बहुत उजड़ि गेल रहै। खेलाइत धिया-पूताक समूह जकाँ ठाम-ठाम पर धानक गम्हराएल सीस ऑंघरा-पाँघरा गेल रहै। मुदा नोकशान नहिएक बरोबरि भेल रहै।

बचकुन, मधुरिया, छेदिया एवं कोबी धरम-करम सँ कोसो हटल अत्यन्त साधारण संस्कारक मनुक्ख छल। सबहक अपन-अपन स्वभाव तथा मनोवृत्ति रहै। मुदा शिवू बाबाक साक्षात दर्शन सँ सब कैँ अजीबे आनन्दक अनुभूति भ' रहल छलै। शिवू बाबाक नाद सँ बहरायल ध्वनि एवं हुनक दिव्य छवि तखन सबहक लेल एहन भाव उत्पन्न कैलक जेना सभ निराकार ब्रह्मक साक्षात्कार क' रहल होअय। सबहक अन्तरात्माक अवर्णनीय प्रेम-सुधा-रस मे डूबि गेल छल। बाबाक आँखि अर्धमुदित छल, वाणी मूक छल, मात्र कंठ सँ निकलल ध्वनि जेना शब्द-फूल बनि झहरि रहल छल। प्रेमक डगर पर चलनिहार धरतीक समस्त ऐश्वर्यक स्वामी होइत अछि। प्रकृति एवं प्रकृतिक अवयव सदिकाल ओकर सहायेक रहैत छैक।

2.

यौ राउत कका, तोँ त' हमर बाप कैँ देखने छलहक ने? हमर बाप कैँ मरना बहुत दिन भ' गेलैक। ओकर चेहरा केहन रहै, से तोरा मोन छऽ की ने?

—हँ रौ छेदिया, हमरा तोहर बापक चेहरा नीक जकाँ मोन अछि। मुदा से बात तोँ किएक पूछि रहल छए?

—आब कका की कहिअ, मुदा कह' त' पड़बे करत। काल्हि भुलनाक बाप रमेसरा सँ हम दोकानक उधारीक तगेदा कयने रहियैक। जवाब मे ओ कहलक जे उधारीक चर्चा बेकारे करैत छएँ। तोहर मुह तोहर बाप सनक लगैत छौ। तइपर हम कहलियै जे हम अपन बापक जनमल छी। हमर मुह उचिते हमर बाप सनक लागत ने, अइ मे अजगुत बला गप्प की भेलै?

तइपर काका हौ, रमेसरा तेहन ने बात कहि देलक अछि जे हम चिंता मे पड़ि गेलहुँए। ओकर कहब मोताबिक जखन मृत्यु लगीच आबि जाइत छैक तखन बेटाक मुह हुबहू बाप सनक भ' जाइत छै। रमेसराक कहब अनुसारे हमर मुह हमर बाप सनक भ' चुकल अछि आ हम मासक भीतरे जयसियाराम भ' जाएब। रमेसराक गप्प सुनि हमर मोन मे गिरगिटिया पैसि गेलए। राति मे ने खा भेल आ ने निन्ने भेल। पयर पटकैत-पटकैत भोर केलहुँ। तोँ गामक पुरान आ काबिल मनुक्ख छऽ, तैँ पूछि रहल छिअह। रमेसराक कहब की सत छैक?

प्रश्न कैनिहार छेदियाक परिचय भेटि चुकल अछि। मुदा राउत सँ हमसभ अपरिचित छी। करीब चालिस बर्ख पहिलुका घटना थिक। बज्र दुपहरिया रहै। आकाश सँ लू बरसि रहल छलै। ठक्कन यादव कुर्सी पर बैसल छलाह। खबास मटरा पंखा होंकि रहल छल। ताही घड़ी कतहु सँ बौआइत एकगोट पन्द्रह-सोलह बर्खक छौंड़ा ओतए आयल छल आ ठक्कन यादवक सोझाँ मे ठाढ़ भ' गेल छल। भयंकर गर्मीक अछैतो ओ खद्धरक धोती आ कारी रंगक कुर्ता पहिरने छल। ओकरा दहिना हाथ मे कनेटा पाथरक टुकड़ा रहै। ओकर चेहरा भाव-शून्य आ सपाट छलै। मटरा पुछने रहै-तोहर नाम?

—राउत।

—तोँ कत’ सँ अयलाहे?

राउत कोनो जवाब नहि देलक। मटरा आरो प्रश्न केलकै। मुदा राउत चुप्पे रहल आ स्थिर दृष्टिएँ हाथक पाथर दिस तकैत रहल छल। अन्त मे ठक्कन यादव पुछने रहथिन—तोँ एतय काज करबएँ?

आँखिक नजरि केँ नीचाँ झुका’ क’ राउत मालिक बाबाक चरबाह बनि गेल छल। काले क्रमे बड़दक तीन, गायक दू आओर महीसक दू, कुल सात चरबाहक राउत हेड बनि गेल। ओकरा भोजन, वस्त्र एवं मालजाल घर महक मचान अवास भेटि गेल रहै। जहिना राउतक कोनो परिचय नहि रहै, तहिना ने ओकर किछु मांग रहै आ ने लिप्सा। ओ संतुष्ट छल। हाथक पाथर केँ खरिहानक एक कात पीपर गाछक जड़ि मे ओ स्थापित क’ लेने छल आ प्रत्येक दिन स्नान कैलाक बाद ओहि पर फूल-चानन चढ़ा ओकर पूजा करैत छल। बाँकी समय मे राउत इमानदारी सँ मालजालक सेवा करैत अपन जीवन बिता रहल छल। ओकर पूर्ण नाम रहै राउत आ गामक सभ लोक राउत कका कहि आदरक संग सम्बोधन करैत छल।

साधुपूरा सँ पीड़ापुर जैबाक कच्ची सड़कक दक्षिणबारी काते-कात दूर-दूर तक पसरल मालिक बाबाक कलम-गाछी। आम, कटहर, लीची, बड़हर आ तकर संगे सीसो, चह, जीमर एवं जमुनीक गाछ सँ भरल। कलमक सटले लगभग दू बीघा जमीन मे खरहोरि। खरहोरिक काते-कात बिटगर बाँसक जंगल। कलमबाग मे कोनो उपद्रव नहि। मालिक बाबाक सम्पत्ति सँ सबहक बेगरताक पूर्ति होइत छल। मालिक बाबाक कृपा सँ साधुपूरा खुशहाल छल।

एखन सम्पूर्ण बाध मे धानक फसिल लहलहा रहल छल। तैँ मालिक बाबा एवं गामक सभटा मालजाल कलम-बागक लगे चरै लेल अबैत छल।

कलमबाग मे एक कात गामक छौंड़ा सभ कुस्ती लड़बाक ले अखाड़ा खुनने छल। अखाड़ा सँ कने हटल महु गाछक जड़ि मे राउत बैसल छल। भोरुका समय रहै। एमहर-ओमहर चारूकात मालजाल चराउर क’ रहल छल। ओतहि छेदिया पहुँचल छल आ राउत केँ अपन चिंता सँ अवगत करा रहल छल। छेदियाक बात सुनि सदिकाल चुप रहबला राउत केँ हँसी लागि गेलै। ओ हँसिते छेदिया केँ कहलक—एखन तोहर मुह तोहर बाप सनक नहि, सपनौर सनक लगैत छौ।

—अयँ हौ राउत कका, तोँ मजाक त’ नहि करैत छऽ? सपनौर? सपनौर केहन होइत छै?

राउत हाथक इशारा करैत कहलकै—एखन अखाड़ाक कात मे गंगा मालिकक मीटिंग चलि रहल छै। ओतहि जो आ सपनौर केहन होइत छै से हुनका सँ पुछिहँ।

ओ तोरा सभ किछु बुझा देथुन।

छेदिया सुथनी सनक मुह बनौने गंगा लग पहुँचल। तखने मीटिंगक बीच सँ एकटा छौंड़ा ठाढ़ भ' आ हाथ नचा-नचा क' घोषणा कैलक—सभ बातक निर्णय भ' गेल। बाढ़ि अबेर क' अएलै मुदा नोकसान अधिक नहि भेलै। गंगा मालिकक हुकूम भ' गेलैए। अहू बेर अपन गाम मे आन साल जकाँ दिआबातीक एक दिन पहिने नाटक आ एक दिन बाद कबड्डीक खेला हेबे करतैक। कबड्डी खेला लेल त' हम आइए पीड़ापुर जा क' चैलेंज ठोकि दैत छियै।

छेदिया सपनौर केहन होइत छै से बुझ' लेल परेशान छल। ओ गंगा लग पहुँचि मुह बौलक। मुदा तखने सभ दिन जकाँ हहाइत कोबी पहुँचल आ चिचिआइत बाजल—अहाँ सभ एतय मीटिंग क' रहल छी आ ओमहर जुलूम भ' रहल अछि। एतय चहुँदिसि तकियौ? गामक एकोटा छौंड़ी के देखैत छियैक? देखबै कोना, सभटा छौंड़ी अपन-अपन जवानीक पैमाइस करा रहल अछि।

ओहि दिन मीटिंग काल एकटा असामान्य बात अबस्से भेल रहै। जतय छौंड़ाक झुण्ड रहए ओतए लगपास मे छौंड़ीक झुण्डक रहब अनिवार्य। की बात भेल रहै जे एकोटा छौंड़ी ओतय घास छील' नहि आयलि छलि। सभ कैँ आश्चर्य भ' रहल छलै, मुदा गंगा मालिकक सोझाँ मे बजैत के?

सभ छौंड़ा चकित छल आ दम सधने कोबीक बात सुनि रहल छल। कोबी आगाँ कहलक—बाढ़िक समाचार एकट्ठा कर' लेल दरभंगा सँ स्थानीए टी.भी.क कैमरामैन, अखबारक संवाददाता आ आकाशवाणीक वाचक आयल अछि।

सभटा गामक छौंड़ी नवकी पोखरिक उतरबारी कात माथ पर मोटा उठौने पानि मे ठाढ़ि अछि। कैमरामैन पानि मे पैसि सभ छौंड़ीक पीन पयोधर कैँ ठेकना-ठेकना क' फोटो खीचि रहलैए।

सदानन्द झा 'दीन'क अनुकम्पा सँ कोबी कैँ विद्यापतिक कविताक पीन पयोधर संगहि आन-आन धरोहरक अर्थ बुझल भ' गेल रहैक। मुदा साधुपूराक छौंड़ा सभकैँ पीन पयोधर माने हाथ भेलै आ की पयर, तइ द' किछुओ ने बुझल छलै। कोबीक कहब अनुसारे पोखरि लग कोनो गड़बड़बला बात भ' रहलैए, तकर अनुमान क' छौंड़ाक हँसेरी नवकी पोखिरि दिस दौड़ल।

नवकी पोखरिक उतरबरिया मोहार पर लोकक भीड़। सही मे साधुपूराक तमाम बीछल-बीछल छौंड़ी माथ पर मोटरी उठौने पानि मे ठाढ़ि छलि। ओना त' सभटा छौंड़ीक अंग-अंग सँ महमही टपकि रहल छलै, मुदा मंगलीक रूपक बात अजबे रहैक। मंगलीक अनमोल सौन्दर्य आकर्षणक केन्द्र छल। कारी-कारी केश पीठ पर

छिड़िआयल, सीटल भौंह, पैघ-पैघ पिपनी सँ छाड़ल पौड़कीक आँखि, नचैत डिम्हा सँ बरिसैत श्रृंगार रसक बरखा, पातर ठोर पर लौकैत मुस्की, गरदनिक पृष्ठभाग मे काम-कलाक चिकनाहटि, लाल-लाल आंगी मे अपसियाँत यौवनक गुम्बज आ हाथक चूड़ी-कंगनक खनखनाहटि दरभंगा सँ आयल कैमरामैन, संवाददाता एवं वाचक सभ कैँ सम्मोहित कयने छल। सभटा आगन्तुकक मोन आ आँखि मंगली मे लुधकल छल।

कैमरामैन माथक जुल्फी कैँ टारैत मंगली कैँ निर्देश द' रहल छल–''एक हाथ से माथे का गठरी को पकड़ो और दूसरे हाथ से साड़ी को ऊपर टानो?''

ओहुना मंगली पहिने सँ साड़ी कैँ ऊपर उठौने छलि जाहि सँ ओकर टेहुनक ऊपर पुष्ट जाँघक अधिकांश भाग उघारे रहै। मुदा कैमरामैन कैँ संतोख नहि। ओ अपन कैमराक लेन्स मे आँखि कैँ रोपैत आग्रह कैलक–''साड़ी को थोड़ा और ऊपर करो। मैं ऐसा तस्वीर खींचना चाहता हूँ कि संसार भर का लोग मिथिला का अलौकिक ग्राम्यबाला का सौन्दर्य का अवलोकन कर वाह वाह कर उठेगा। फोटो देखकर दरभंगा शहर मे धमगज्जर तो अवश्य ही मचेगा।''

कैमरामैनक चापलूसी कर'क अन्दाज मे लोलुपताक पराकाष्ठा रहै। ठीक ताहि काल अपन हँसेरी संग गंगा पोखरिक मोहार पर पहुँचल रहए। गंगा एक क्षण लेल मंगली कैँ देखलक। ओकर सर्वांग शरीरक शोणितक प्रवाह मे विद्युतक गति प्रवेश क' गेलै। ओकरा सभ बातक ज्ञान लगले भ' गेलै। गंगा रंजे माहुर भऽ गेल आ गरजैत छौंड़ा सभकैँ ललकारा दैत बाजल–बचकुन देखै की छैँ? पहिने अहि सारक कैमरा छीन, तखन सभहक हाड़पाँजर तोड़िक' राखि दहीन। एकोटा सार साबुत आपस नहि जाउक।

बस भ' गेल। भीसिल बाजि गेल। गंगा मालिकक आदेश सुनितहि छौंड़ाक हैँज पानि मे कुदल। एमहर परिस्थितिक मर्म बुझि कैमरामैन, संवददाता आ वाचक झपझप करैत पोखिरि सँ बाहर आयल आ जी-जान सँ पड़ायल। छौंड़ाक हैँज खेहारलक। सम्मिलित पिहकारी आ कनफोड़ा आवाज सँ आकाश तक गुंजायमान भ' उठल। गामक पैघ-पैघ पुरुष सेहो दौड़ैत पोखरि तक आयल आ खेहारैत छौंड़ाक हैँज मे मिझरा गेल। चारूकात अफरा-तफरी मचि गेलै। धिया-पूता सेहो पिहकारी मारैत दौड़' लागल। सभटा जनानी मूड़ी अलगा-अलगा तमाशा देख' मे मगन भ' गेलि।

गामक तमाम मनुक्ख पड़ाइत कैमरामैन, संवाददाता एवं वाचक मे बाझि गेल छल, तैँ कियो नहि देखि पौलक जे ओहि घड़ी गंगा की क' रहल छल। गंगा मंगली

लग पहुँचल आ तीरैत ओकर साड़ी कैँ नीचाँ कैलक। मंगलीक उघार अंग झँपा गेलै। फेर मंगलीक माथक मोटरी कैँ पानि मे फेकि गंगा ओकर हाथ पकड़ने पोखरि सँ ऊपर आयल आ दोसर दिस दौड़' लागल।

गामक एक छोर पर चभच्चा पोखरि छल। चभच्चाक चारूकात खरहीक सघन बोन आ तकर सटले रामदीन पंडितक माटिक लेबा सँ लेबल घर। रामदीन कुम्हार छल। ओ छल आँखि सँ आन्हर आ कान सँ बहीर। मुदा माटिक बर्त्तन गढ़े मे बेजोड़। एखनो ओकर चाक चक्कर काटि रहल छलै।

रामदीन अपन विलक्षण हूनरक प्रदर्शन मे व्यस्त छल। ओकर पत्नी आन दिन जकाँ बड़का छिट्टा मे तौला-कराही-मटकुड़ी ल' गामे-गाम बेचै लेल जा चुकलि छलि। रामदीनक एकमात्र संतान ओकर बेटी चनकी छौंड़ीक जवानीक पैमाइसक लेल नवकी पोखरि मे भाग लिअ गेलि छलि। अस्तु, रामदीनक घर-आँगन सुन्न छलै।

रामदीनक आँगन मे एक कात चिकनी माटिक सिमसिमायल मतंगा बनल रहै। आँगनक बाँकी हिस्सा मे काँच-पाकल वर्तन भरल छलै। माटिक अनुपम सुगन्धि सँ आँगन सुवासित छल। गंगा मंगलीक हाथ पकड़ने रामदीनक आँगन मे पहुँचल आ हकमैत मतंगा पर बैसि गेल। मंगलीक छाती धक-धक करैत ऊपर-नीचा भ' रहल छलै। ओ गंगा सँ सटि गेलि।

ओना त' बहुत पहिनहि सँ मंगली गंगाक प्रेम मे डूबल छलि। मुदा ओहि प्रेम मे वासना हुलकी द' ओकरा एहिलौकिक बना देने छलै। अजुका गंगाक स्वरूप अलगे तरहक छल। आक्रोश, क्रोध एवं आवेशक मिश्रण मे गंगाक व्यवहार एहन छल जेना मंगली ओकर, ओकरे टा धन होइक, प्रेयसी होइक, जीवन होइक। आब कोनो तरहक अड़चन कैँ गंगा सहन नहि करत। मंगली भाव-विह्वल भेलि अनन्त आकाश मे उड़' लागलि। फेर हिचुकिते गंगाक देह कैँ भरि पाँज क' पकड़ि पूछलक —गंगा, अहाँ हमरा सँ प्रेम करैत छी ने? की अहाँ हमरा संग बिआह करब?

—हँ मंगली, हँ। हम तोरे संग बिआह करब। हम तोरा बिनु जीवित नहि रहि सकैत छी।

गंगाक जवाब मे ओकर हृदय मे स्थापित प्रेमक चीत्कार भरल छल। एखन गंगा एवं मंगली एहन प्रेम-भाव मे पहुँचि गेल छलि जतय तर्क शून्य भ' जाइत अछि। भविष्य मे की हेतै तकर चिंताक गुंजाइश नहि रहि जाइत छैक। धरती पर प्रत्येक मनुक्खक परिवारक, समाजक एकटा सीमा होइत छैक। विवाह ओही परिवार एवं समाजक कानूनक अधीन होइत छैक। गंगा साधुपूरा गामक सभ सँ धनिक एवं यादव कुलक राजकुमार। मंगली दरिद्र आ चमार जातिक दलित-दासी। तखन दुनूक विवाह

होएब कोना संभव होइतैक? मुदा प्रेम कोनो कानून, कोनो बंधन आ कोनो सीमा कैँ स्वीकार नहि करैत अछि। प्रेम स्वतंत्र अछि। प्रेमक स्वादक आगाँ संसारक सभटा सम्पदा तुच्छ। प्रेमक डगर पर जँ प्राणक आहुति दिअ पड़तै त' गंगा आ मंगली देतै। गंगा बावरा आ मंगली बावरी, दुनू एक दोसराक आलिंगन मे विभोर आ बेसुध।

अही बीच रामदीन पंडितक बेटी चनकी ओतए पहुँचि गेलि। खुजल आँगनक केबाड़ सँ ओ गंगा एवं मंगलीक प्रेमालापक दृश्य देखलक। चनकीक मोन कुहक' लगलै। गंगा देखबा मे अत्यधिक सुन्दर आ तेहने ओकर कोमल व्यवहार। गामक आन-आन छौंड़ी जकाँ चनकी सेहो गंगा सनक प्रेमीक कल्पना मे आकुल रहैत छलि। एखन गंगा आ मंगलीक मिलन देखि ओकरा इर्खा होयब स्वभाविके छलै। मुदा आश्चर्य! चनकीक मोन मे इर्खा जन्म नहि लेलकै। राधाक सखी जखन राधा कैँ शृंगार क' अभिसार लेल कृष्ण लग पठबैत छलीह त' की सखी सभ कैँ इर्खा होइत छलनि? नहि ने। तखन चनकीक हृदय मे आगि किएक धधकितै? तखन त' चनकी स्वयं प्रेम-रसक बरखा मे अस्तित्व विहीन प्रेमिका बनि गेल छलि। गंगा आ मंगलीक प्रेम मे कोनो व्यवधान नहि होउक ताहि लेल चनकी आँगनक केबाड़ कैँ भिड़ा क' बन्न क' देलक।

थोड़े आरो समय बितलै। बचकुन हकमैत ओतय पहुँचल। ओ चनकी सँ पुछलक तोँ हमर दोस्त गंगा कैँ देखलहिनएँ?

चनकी इशारा केलकै। बचकुन केबाड़क फाट सँ देखलक, गंगा आ मंगली अहि संसार सँ विरक्त आनन्दलोक मे विचरण क' रहल छल।

मुदा तइ सँ काज नहि हेतै। मैटर अरजेन्ट छलै। बचकुन केबाड़क जंजीर कैँ जोर सँ खटखटौलक। गंगा आ मंगली आपस धरती पर आबि गेल। दुनू एक-दोसराक बाहुपाशसँ अलग भेल। बचकुन आँगन मे प्रवेश कैलक आ कहलक—दोस्त यौ, बड़ा मुस्किल बला बात भ' गेलैए। कैमरामैन, संवाददाता आ वाचक प्राण बचबै लेल भागि रहल छल। ओकर सभक पड़ाइक गति मे वायुयान बला पेट्रोल भरल रहै। ओ सभ कि पकड़' दितै! मुदा छेदिया कैँ कतहुँ सँ झटहा हाथ लागि गेलै। छेदिया जुमा क' झटहा फेकलक। झटहा कैमरामैनक पयर मे लगलै। उड़ैत चिड़ै जकाँ ओ अर्राक' जमीन पर खसल। ओकर केमरा टूटि क' दू फाँक भ' गेलैए। ओकरा संगहि वाचक सेहो लटपटा क' ओँघरा गेल। मुदा तेसर लम्पटबा संवाददाता पड़ाइ मे सफल भ' गेल। ओकर पड़ेबा काल जे स्पीड रहै से की कहू, एखन तक ओ गौंसाघाट अबस्से पार क' गेल होयत।

—एमहर केमरामैन आ वाचक कैँ छौंड़ा सभ थुथुन ताकि मुकिआब' लगलै।

छौंड़ाक हँज मे बौना सेहो छल। बौना जातिक हजाम। हजामक संग मे अस्तूरा-कैंची रहिते छै। बौना कैमरामैनक अगिला-जुल्फी कँ कैंची सँ कतरि देलकै। ओकर मुह पमरिया सनक भ' गेलैए। हम बड़ा कठिने छौंड़ा सभकँ कन्टोर केलहुँए, नहि त' दुनूक ओही ठाम मरडर भ' जइतैक।

बचकुन बजैत-बजैत हकमि क' चुप भ' गेल। ओतय चनकी सेहो आबि गेलि छलि। ओ मंगली कँ सहारा देलकै। मंगली उठि क' ठाढ़ भेलि आ चनकीक संग आँगन सँ बाहर खरहीक बोन दिस चल गेलि। बाहर मे रामदीनक चॉकक चक्कर काटिए रहल छल। ओ आन्हर आ बहीर। रामदीन ने किछु देखलक आ ने किछु सुनलक।

बचकुन फेर सँ कहब शुरू कैलक—अही बीच कोबियो कँ फबि गेलै। ओ पीड़ापुर जाय अहाँक भैया लग चुगली क' आयल। ओ अहाँक भैया कँ इहो कहलक जे अहींके उसकेला पर सभक पिटाइ भेलैए। अहीं सभटा खुराफातक जड़ि छी। अहाँक भैया पीड़ापुर पंचायतक मुखिया। ओ मुखियाक हैसियत सँ कैमरामैन आ वाचक संगे अहाँक बाबा लग शिकायत कर' लेल पहुँचि गेलए। अहाँक खोज सभ ठाम भ' रहल अछि। हम सभटा बात बुझि क' अहाँकँ चेताब' एलहुँ अछि।

जयनत्था बाहाक सुलिश गेट टुटि गेलै। साधुपूरा मे भयंकर बाढ़ि अयलै। बाढ़ि जहिना हनहनाइत एलै तहिना सनसनाइत चलि गेलै। गंगाक भैया गगन यादव महत्वाकांक्षी मनुक्ख। ओ मुखिया बनि गेल छल। आब ओकर गिद्ध दृष्टि विधायकक कुर्सी पर रहै। ओ धूर्त, चलाक आ ओहन सभ गुण सँ सम्पन्न छल जे एखुनका राजनीतिक बखिया उघारक लेल जरूरी छलै। ओ साधुपूरा मे आएल बाढ़ि कँ भजाब' लेल तैयारी कैलक। बाढ़ि आबि क' चल गेलै तँ की? बाढ़ि सँ भेल नोकशानक मार्मिक कथा एवं अन्न लेल मचल हाहाकार कँ सही ढंग सँ प्रचार कयने रहितैक त' राहतक नीक अन्न एवं टाका प्राप्त कयल जा सकैत छलै। गगन यादव कँ बुझल छलै जे वर्तमान युग मे मीडियाक करिश्मा सँ सभ किछु संभव छैक। गगनक सभ सँ अभिन्न मित्र पीड़ापुर हाइ स्कूलक हेडमास्टर मिसरी लाल ताँती। गगन ओकरे संग नित्य मुर्गा आ मदिराक सेवन करैत छल। गगन अपन योजना कँ ताँती लग प्रगट कैलक। ताँती मिडिया सम्बन्धी काजक ठीका लेलक। ताँती एक तऽ हेडमास्टर आ ताहि पर सँ वाक्पटुताक माजल खेलाड़ी। ओ बोतल, टाका एवं आरो तरहक प्रलोभनक बोर फेकलक। मीडियाक सभ अंग ओकर मुट्ठी मे आबि गेलै। टी.भी. मे बाढ़ि मे प्राण बचबै लेल पड़ाइत स्त्री-पुरुषक फोटो, स्थानीय समाचारपत्रक संवाददाता द्वारा बाढ़ि मे भेल भयंकर नोकसानक विवरण तथा आकाशवाणी सँ

प्रसारित साधुपूराक व्यथा-कथा पटना कैँ के कहए दिल्ली कैँ डोला क' राखि देत। ताँती सभ तहरक सभटा इन्जाम क' लेलक।

एमहर गगन कोबी कैँ बजा कऽ ओकरा पुष्ट टाका द' ओकरा कान मे मंत्र फुकि देलकै। कोबी अपन प्रेमिका कमलीक माध्यमे बीछल आ जुआयल छौंड़ी सभ कैँ स्नो-पाउडर-जुट्टी समेत टाका वितरण क' पोखरि मे माथ पर मोटरी नेने फोटो खिचबै लेल तैयार क' लेलक। सभटा इन्तजाम एक नम्बरक फिट भ' गेल रहै।

मुदा गगन यादवक योजना उनटा-पुनटा भ' गेलै। ओकर दोख कोबिए कैँ। कोबी जखन कैमरामैन, संवाददाता एवं वाचक कैँ छौंड़ी सभक बीच कामक कीड़ा बनल लटपटाइत देखलक त' अपन स्वभावक अनुरूप अखाड़ा लग जमा छौंड़ा सभ कैँ एकर सूचना प्रेषित क' आयल। तकरबाद जे हेबाक चाही सैह भेलै। बाढ़िक समाचार कैँ विस्फोटक बना गगन यादव सरकार सँ राहत निमित्ते अन्न आ टाका बाढ़ि मे प्राप्त करितए से नहि भ' सकलै। गगनक योजना पर बज्र खसि पड़लै। ओकर सभटा रंज अपन कनिष्ठ भ्राता गंगाक ऊपर बजरलै। कहाँ गेल गंगबा? ओकरा पकड़ि क' ला?

गंगा अपन दलान पर पहुँचल। भोरुका लगभग दस बाजल हेतै। मालिक बाबाक लम्बा-चौड़ा खरिहान मे सभ दिस सभ तरहक काज भ' रहल छल। मालिक बाबा पोखरि मे स्नान करैत छथि आ तखन राधे-श्यामक मंदिर मे पूजा। ओतय परसाद ग्रहण क' हीरा मौसीक ओतय जाइत छथि। हीरा मौसीक आशीर्वाद हुनका नित्य चाहबे करी। मालिक बाबा सभटा काज समाप्त क' बरामदाक ऊपर अयलाह। मटरा एक लोटा जल आ खराम पहिने राखि चुकल छल। मालिक बाबा पयर धोलनि, खराम पहिरलनि आ अपन चौकी लग पहुँचला। चौकी पर तोशक, जाजिम ओछाओल आ ओहि पर मसनद राखल छल। मालिक बाबा मसनद सँ ओँगठि क' आराम सँ बैसि गेलाह। ठीक ताही काल गंगा सुट द' आयल आ अपन बाबाक देह मे सटि क' बैसि गेल। कोनो आफदक आगमनक सूचना भैँटला पर गंगा अपन बाबाक स्नेहक छत्रछाया मे पहुँचि जाइत छल से बात मालिक बाबा कैँ बुझल छलनि। ओ आवेश सँ गंगाक माथ पर हाथ रखलनि। गंगा कैँ अपन सुरक्षाक वरदान भेटि गेलै। मटरा पुछलक—पनपिआइ एतहि नेने आउ?

—नहि, ठहर।

बाबा बरामदाक अन्तिम छोर पर राखल बैँच तकलनि। बैँच पर गगन यादव, हेटमास्टर मिसरी लाल ताँती, कैमरामैन आ आकाशवाणीक वाचक पतियानी मे बैसल छल। केमरामैनक अगिला चुरकी छपटल रहैक आ नाक फूलि क' टमाटर सन भ' गेल रहै। वाचक सेनुरक ठोप कयने छल आ ओकरा एक गौखुर बरोबरि टीक रहै।

सभ चुप्पेचाप बैसल रहए।

मालिक बाबा खरिहान दिस नजरि घुमौलनि। हुनक देवानजी कल्लू पटिया पर बैसल बही-खाता मे आँखि रोपने छला। जेठ कमतिआ कारी मंडल आ छोट कमतिआ सुरता चौपाल कुसियारक बोझ उठा-उठा क' पेड़इक मसीन लग राखि रहल छल। छठि सँ पहिने नवका गूड़क माँग रहैत छै। मालिक बाबा दू बीघा कुसियारक खुट्टी सभ साल रखैत छथि। ओही खुट्टीक रस सँ गूड़ बना रहल छल। चुल्ही लग राउत पुरना कुसियारक छिल्ला आ सिट्ठी कैँ चुल्ही मैँ झौँकि ओकर आँच कैँ बढ़ा रहल छल। छेदियाक झटहा सँ कैमरामैन अर्रा क' खसल छल। ओकर छाती डरे धुक-धुक क' रहल छलै। खरिहाल मे कियो कोनो काज मे किएक ने बाझल होइक, सभक कान दलान पर पाथल रहै। छेदिया गामक आन-आन छौंड़ा संगे पेड़इबला मसीनक अढ़ मैँ नुकायल छल।

मालिकबाबा कैँ जहिना गंगा बड़ नीक लगैत छलनि तहिना गगन कैँ देखि हुनक भृकुटि तनि जाइत रहनि। आरम्भे सँ हुनका गगन सोहाइत नहि छलनि। गगन कैँ ओ देख' नहि चाहैत छलाह। मालिकबाबा आँखि तरेरि तीख आवाज मे गगन कैँ पुछलनि—की बात छै हौ गगन? तौँ एखन एतय किएक अयलहेएँ? तोरा संगे ई के सभ छथि?

गगन यादव ठाढ़ भेल। ओकर दाढ़ी खुटिआयल रहै आ कुर्ता एंड़ी कैँ छुबैत छलै। अपन संग आयल आगन्तुक बिना परिचय करौनहि ओ खिसिआयल आवाज मे बाजल—अहींक पौत्र गंगा द' कह' एलहुँ अछि। पीड़ापुर पंचायतक मुखियाक हैसियत सँ हम मीडियाबला कैँ आमंत्रण देने छलियैक जे साधुपूरा मे आयल भीषण बाढ़िक समाचार अखबार, रेडियो आ टी.भी. मे ओ सभ प्रसारित करथि जाहि सँ सूतल प्रांतक सरकार कैँ निन्न टुटै, गामक दुर्दशा दिस प्रशासनक ध्यान जाइक आ एतुक्का लोक कैँ खैरातक अन्न एवं टाका भेटैक। ताही क्रम मे ई लोकनि आयल छलाह। मुदा भेलै की? गंगा आ हिनक बानर सेना बिना कोनो अपराधक हिनका सभ कैँ खेहारि-खेहारि क' पिटलखिन अछि। टी.भी.क कैमरामैनक कैमरा से तोड़ि देलखिन अछि। गंगा अहाँ लग सुटकल छथि। मुदा ताहि सँ काज नहि चलतनि। हिनका खरिहानक मेह सँ बान्हि क' कोड़ा सँ पीटल जानि। हिनका सैह दंड देब उचित हैत।

बीचहि मे वाचक धड़फड़ाइत ठाढ़ भेला आ बजला—हम भगवतीक उपासक छी तैँ मिथ्या कथमपि ने बाजब। कैमरामैन कैँ मुकियाबै मे सभटा बालक बाझल छल। हमरा वस्तुतः किंचिंते मारि लागल। हम सभ किछुक स्पष्ट अवलोकन करैत रही।

एखन बाबा लग जे बालक बैसल छथि आ जनिक नाम गंगा अछि, तनिका द' हम शपथपूर्वक कहब जे ई मारि-पीट मे संलग्न नहि छलाह। आने-आने बालक बृन्द मारि-पीटक दुष्कर्म केलनि अछि। हुनकर सभक राक्षसी मुद्रा हमर मानस पटल पर अंकित अछि। सोझाँ मे अयला पर हम सभ कैँ चीन्हि सकैत छियनि।

वाचकक कथन सुनि गगन यादवक मुखाकृति कठौत सदृश भ' गेलै। वाचक अपन खुजल टीक कैँ हँसोथैत फेर बाजब शुरू कैलनि—हम फेर कहब जे हम मिथ्या कखनो नहि कहैत छी। एखन पृथ्वी पर कलियुग रहितहुँ धर्मक एक चरण बाँचले छैक। अहि कैमरामैनक नाम नहि बुझल अछि, मुदा जँ हिनकर नाम हमरा राख' पड़ए त' हम हिनक नाम रखबनि गुंडा। फोटो खिच' काल हिनक आचरण अश्लील छल, अभद्र छल आ पत्रकारिताक नियमक विरुद्ध छल। हिनक व्यवहार देखि अइ ठामक बालक कैँ जे क्रोध भेलनि से सर्वथा उचिते छल। हमरा जँ से ज्ञात रहैत त' हिनका संगे हम एतय कथमपि नहि अबितहुँ। अनचोके मे हम मारि खेलहुँ अछि।

वाचकक सभटा भाषण सुनि गगने टा के नहि, मिसरीलालक मुह सेहो विकृत भ' गेलै। मालिक बाबा भारी-भरकम आवाज मे कहलनि—हमर पौत्र गंगा त' गगन तोँ के? तहूँ त' हमर पौत्रे छह। तोहर नालिस कैँ तोरे आनल गबाह खारिज कऽ देलक। गंगा पर अनर्गल दोख लगायब ने तोरा शोभा दैत छह आ ने तोहर भविष्यक लेल उचित। मुखिया छह, नीक बात भेल। मुदा तोँ अपन दुष्ट बुद्धि पर लगाम लगाबऽ। भ्रष्टाचार सँ प्राप्त राहत साधुपूरा गाम कैँ नहि चाही। तोँ अहि सँ पहिनहुँ अपन कृत्य सँ कइएक गोट अवसाद उत्पन्न क' चुकल छह। हम तोरा सावधान करैत छिअह। बाज आबह, नहि त' तोँ अपन खोधल खाधि मे अपनहुँ खसि पड़बह।

बरामदा आ खरिहानक सभ लोक चुप छल। मालिक बाबाक फैसला भ' गेल। मटरा चारि गिलास शर्वत अनलक आ चारू मेहमानक हाथ मे पकड़ा देलक। शर्वत मे दूध, कुसियारक रस आ भाँग मिलाओल रहै। शर्वत राउत तैयार कयने छल। गंगा मालिकक दुश्मन ओकरो दुश्मन। पीड़ापुर पहुँचैत-पहुँचैत शर्वतक भाँग जखन कान मे सारंगी बजौताह तखन बुझिहक। सभटा बदमासीक बदला भेटि जेतह।

मटरा आग्रह करैत कहलक—शर्वत पिबैत जाउ। अहि मे एहन औषधि मिलाओल छैक जाहि सँ अहाँ सभक क्रोध समाप्त भ' जायत।

मालिक बाबा खरिहान दिस तकैत अपन देवान सँ कहलनि—कल्लू, गगन सँ पूछि क' हिनकर मित्रक जतेक नोकशान भेल होनि अथवा जतबा ई कहथुन ओतबा टाका हिनका द' दिअहुन। कंतोर मे जँ नगदी कम होअय त' पीड़ापुरक ग्रामीण बैंकक चेक काटि दिहक।

मालिक बाबा गंगाक हाथ पकड़ि चौकी सँ नीचाँ उतरलनि आ कहलनि—हमरा संग चल रे बौआ! तोँ आइ हमरे संगे पनपिआइ खेबहिन। मालिक बाबा आँगन गेलाह। खरिहान मे नुकायल गामक छौंड़ा फुर्र भ' गेल। खरिहान मे सभ अपन-अपन काज कर' लागल। गगन यादवक पत्नी, पार्वती ओहि ठाम अँगनाक अपन कोठली मे छलि मुदा गगन ओमहर तकबो नहि कैलक। हाथ मे शर्वतक गिलास नेने ठार भेल आ बड़बड़ायल—जातक ई बुढ़बा जिअत ताबे तक हमरा चैन नहिए भेटत।

3.

साधुपूरा मे हलचल मचल रहए। सभ दिस एकटा बातक चर्चा, छौंड़ा सभ नाटक खेलबे करत। सभक कान ठाढ़ आ मोन मे गुदगुदी। गंगा अपन नियत स्थान गाछीक कतबहि आ अखाढ़ाक बगल मे छौंड़ा पार्टी संग बैसल छलय। उत्साह मे सभक चेहरा दमकि रहल छलै। बचकुन रिपोट द' रहल छल—नाटकक स्टेज तैयार भ' गेल। रतनपुरा सँ नाटकक पर्दा आबि गेल। जतबा समाद पठौलियै तइ सँ बेसिए पर्दा पठा देलकए। कहू त' अपन सभक नाटक मे जंगल-सीनक कोन काज? खैर कोनो चिंता नहि, पेमेन्ट किछु बेसी कर' पड़तै। ड्रेसबला काज मे मुदा नीक जकाँ गड़बड़ भ' गेलैए। नाटकक खेल हेतै द्रोपदी चीरहरण, मुदा ड्रेस सुल्ताना डाकू बला आबि गेलैए। कियो काज पर नीक जकाँ ध्यान दैक तखने ने? पीड़ापुरक दोकान सँ बारह गोट मुकुट, तीर-कमान आ भीमक गदा आबि चुकल अछि। कृष्णक मुकुट मे मयूरपंखक चिंता छल, मुदा से लागल छैक। मुकुट महक पन्नी ठाम-ठाम ओदरल छै, तकरा गाँद लगा साटए पड़तैक। तलवार नहि भेटलै, मुदा ओकर म्यान भेटि गेलैए। म्याने कैँ डाँड़ मे बान्हि कलाकार काज चला लेत।

बचकुन सेप घाँटलक, तखन फेर बाजब शुरू केलक—मेकअप मैन चौआ आइए आबि गेलए। ओ प्रचुर मात्रा मे मुर्दाशंख, पाउडर, स्नो, मोछ बनबै लेल करिया पिन्सिल यानी मेकअपक सभटा समान ल'क' आयल अछि। चौआ स्वयं कलाकार अछि। ओ कहलक जे सिनेमा आ टी.भी.क युग मे आब नाटक खेलाइते के अछि? चौआ मेहनताना किछु नहि लेत। करीब दस गोट पेट्रोमेक्स, तकर मेन्टल, तेल हम अपन दोकान मे जमा क' लेने छी। माइक आ लाउडस्पीकर तकरो व्यवस्था भ' चुकलए। सामियाना, सतरंजी त' घरे मे छैक।

बचकुनक रिपोट देब' बला काज समाप्त नहि भेल रहै तामे ओतए कोबी पहुँचि गेल आ हकमैत बाजल—सदिकाल आनन्द रह'बला हमर काव्य-गुरु सदानन्द झा 'दीन' हिन्दीक टीचर होइतहुँ हिन्दी नाटकक घोर विरोधी छथि। हिन्दिए मैथिली भाषा कैँ थकुचने अछि। एतय तक जे हिन्दीबला विद्यापति तक कैँ अपन हिस्सा मे ल' गेल छल। बड़ा कठिने विद्यापति कैँ आपस आनल गेलए। दीनजी अहाँ

लोकनि कैँ मैथिली भाषाक नाटक खेलाइ लेल आग्रह कैलनि अछि। हुनकर कहब अनुसारे मिथिला एवं मैथिलीक उन्नति लेल मैथिलीए टा मे नाटकक मंचन होयब जरूरी छैक।

—मैथिली मे कोन नाटक खेल' लेल तोहर गुरुजी कहलथुन अछि? बचकुन पुछलक।

—ओना त' मैथिली भाषा मे लिखल प्रकाशित आ अप्रकाशित नाटक हजार मे अछि। मुदा हमर गुरूजी स्वयं चौंतिस गोट नाटक लिखि चुकलाए। हुनक 'पागक मर्यादा', 'पागक दाग', 'पाग-दोपटा-खराँउ' आदि अनेक विश्व-प्रसिद्ध नाटक अछि। मुदा एखन दीनजी अपन अप्रकाशित 'अम्मट' नामक नाटकक मंचन करबा लेल निवेदन कैलनि अछि। ओना अहाँ सभ जे विचार करी से हुनका मान्य हेबेटा करतनि, मुदा नाटक मैथिली भाषा मे होअय से हुनकर इच्छा छन्हि।

ओतय उपस्थित छौंड़ा-मंडलीक प्रत्येक छौंड़ा कोबीक कथन सुनि रहल छल, मुदा जवाब बचकुन देलकै—ई त' एहने बात भेल जे आगि लगला पर इनार खुनू। नाटक काल्हि साँझ मे खेलायल जेतौ आ नाटकक चुनाव आइ करी, से कोना संभव हेतै रौ कोबी? ओहुना द्रौपदी चीरहरणक सभटा डायलॉग मैथिलीए मे छैक से तोँ अपन गुरु कैँ कहि दिहौन। एखन कोबी, तोँ अपन चाँच बन्दे राख। एतुक्का काज होब' दही।

तखने एकटा छौंड़ा फर्दवाल दौड़ल आयल आ बाजल—हम बथनाहा सँ आबि रहल छी। कौआल मास्टर तसलीम संवाद पठौलक अछि जे नाटक मे हरमोनियम वैह बजौत। ओ अपन हरमोनियम ल' क' आओत। तसलीम इहो कहा पठौलक अछि जे दोसर ढोलकिया सँ गप्प नहि करै लेल। ओ अपन संग बिजुआहा कैँ नेने आओत। ढोलक बजबै मे बिजुआहा बेजोड़ अछि से बात सभ कैँ बुझले छैक। ई सभटा समाद हम छेदी भाइ दिस सँ कहि रहल छी।

—सैह त'। ई सभटा काज हम छेदिया कैँ देने रहियै। छेदिया अछि कत'? बचकुन ओहि छौंड़ा सँ पुछलक।

—की कहू। छेदी भाइक करिया कुकूर, पीटरा दू दिन सँ निपत्ता छनि। एक क'र खाइत छलनि आ दिन-राति हुनकर दोकानक पहरा करैत छलनि। छेदी भाइ पीटरे कैँ ताकै मे बेहाल छथि। एहमर गाम मे बखोनी भीख माँगए आयल छलि। बखो त' कहूँ ने पीटरा कैँ चोरा क' ल' गेलहैं। तँ ओ बखोक डेराक भाँज लगा सिमरीक भुतही गाछी दिस असगरे गेलाए। बखो चोर उचक्का संगे खतरनाको होइत अछि। आब देखा चाही जे छेदी भाइ पीटरा कैँ ल' क' अबैत छथि आ कि हाथ-पयर तोड़ा क'?

गंगा अपन मंडली संगे ओहि स्थान पर आयल जतय नाटकक खेला होब' बला छल। स्थान छल चौबट्टी। फैल, उस्सर आ उचाँस जमीन, जतय घासो नहि जनमैत छल। स्टेज तैयार भ' गेल रहए, तइयो आन-आन काज मे कार्यकर्त्ता अपसियाँत छल।

कतहु सँ घुमैत-घुमैत ललित यादव ओतय पहुँचि गेला। ललित मालिकबाबाक स्वर्गीय पुत्र भिखू यादवक एकमात्र संतान आ गंगाक साक्षात् पितिऔत भ्राता छला। ललित पटना मे पढ़ैत छथि आ काल्हि राति अपन सहपाठिन संगे छुट्टी मे गाम आयल रहथि। हुनक नारी-मित्रक नाम छल पल्लवी गर्ग। ललित आ पल्लवी सहपाठी होइतहुँ दुनूक विषय उलग-अलग छल। ललित इतिहास बिषय मे एम.ए. फाइनल इयरक छात्र छला आ पल्लवीक विषय रहए पत्रकारिता। ललित एवं पल्लवी मे संसार निर्माण कर'बला कलाकारक निर्देशानुसार जे स्त्री-पुरुष मे नैसर्गिक आकर्षणक केन्द्रबिन्दु होइत छैक से नहि रहै, तकरा स्वीकार करब सर्वथा अशोभनीय होयत। मुदा दुनू मेधावी छात्र-छात्रा छलीह। एखन दुनूक रुचि एवं ध्यान अपन-अपन अध्ययनक विषये टा मे छल। पल्लवी केँ विश्वविद्यालय दिस सँ शोधक विषय लॉटरी माध्यमे भेटल रहनि। शोधक विषय छल "की भारत एखनहुँ गाँव मे बसैत अछि"?

पल्लवीक पिता सेनाक पैघ अफसर। पल्लवीक जन्म, पालन-पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा शहरे मे भेल छल। ग्राम्य-जीवनक अनुभव आ कि स्पर्श हुनका एकोदिन लेल भेले ने रहनि। मात्र पुस्तक-पत्रिकाक आधार पर गाँव केँ चिन्हब-बुझब हुनका लेल कठिन काज छल। एमहर आधुनिक युगक संसार मे उन्नति एतबे भेल छल जे मानव जंगल जीवन सँ चलिक' सशरीर चन्द्रमा पर पहुँचि गेल छल। विकासक गति सँ भारत अछूत नहि छल। भारत विश्वक आन-आन देश जकाँ आर्थिक उन्नतिक शिखर पर पैर राखि चुकल छल। कम्प्यूटर, ऑटोमोबाइल, औषधि इत्यादि अनेको क्षेत्र मे अपन देश प्रगतिक प्रथम श्रेणी मे पहुँचि चुकल छल। ताहि कारणे अहि देशक प्रबुद्ध नागरिकक पहिरब-ओढ़ब, खान-पान संगे सोच सेहो बदलि चुकल छल। शहरक संगहि गामक स्वरूप सेहो बदलि गेल छल। तखन ग्राम्य जीवन पर शोध करबा लेल पल्लवीक जिम्मा किछु रहबे ने करै।

पल्लवी अपन शोध-विषयक जटिलताक चर्चा ललित सँ कैलनि। जवाब मे ललित हुनका कहथिन जे एखनहुँ भारत मे आ खास क' मिथिला मे एहन गाँव मौजूद छैक जतय आधुनिक सभ्यताक एकोटा तमासा नहि पहुँचलै अछि। एहन गाँव एखनो प्राचीन भारतक गाँव जकाँ अपन स्वरूप मे सुरक्षित अछि। बिजली, सड़क, स्कूल, अस्पताल इत्यादि जीवनक सभ सुख-सुविधा सँ वंचित ओ गाँव

गरीबी, अशिक्षा मे डूबल अलग-थलग पड़ल अछि। मुदा सभ तरहक अभाव मे रहितहुँ ओहने गामक जीवन मे सरलता एवं शान्ति छैक, शहरवासी जकर कल्पनो ने क' सकैत अछि।

पल्लवी अधीर भेलि ओहने गामक दर्शनक इच्छा ललित लग प्रगट कैलनि। ताही क्रम मे ललित पल्लवी कैँ साधुपूरा अनने रहथिन। पल्लवी एखन अचंभित भेलि साधुपूरा गाम मे घुमि रहलि छलीह आ एतुक्का ग्राम्य जीवन कैँ निकट सँ देखि रहलि छलीह। प्रकृतिक दोहन करक स्थान पर प्रकृतिक अंग बनि एतुक्का लोक जीवन-यापन क' रहल छल। मालिक बाबाक उदारताक कारणे अभाव कतहु नहि छलै। आवश्यकता अल्प, तँ सर्वत्र सुख रहै, शांति रहै। पल्लवी ललितक संग गामक सड़क, गली, च'र, खेत, खरिहान, इनार, पोखरि कैँ देखैत-देखैत ओतय पहुँचलि छलीह, जतय गामक युवक जमा भ' नाटक खेलैबाक आयोजन मे व्यस्त छल।

ललित एवं पल्लवीक पहुँचिते सभटा छौंड़ा अपन-अपन काज छोड़ि दुनूक निकट पहुँचि गेल। पल्लवी पेन्ट-शर्ट पहिरने छलीह। हुनक कान मे गोल-गोल बाला लटकल रहए। कोबीक जी पनिया गेलै। ओकर कवित्व-भाव पनपि गेलै। ओ मनहिमन प्रण कैलक जे जखने ओकरा हाथ पर टाका औतैक ओ कमली लेल एहने कानक बाला कीनि क' आनि देतैक।

ललित अपन छोट भ्राता गंगा सँ पल्लवीक परिचय करौलनि। सौन्दर्य नारीक आभूषण थिक। मुदा गंगाक चौरगर छाती, कसगर बाँहि, मजगूत कद-काठी आ चेहरा पर झलकैत निर्दोष छवि पल्लवी कैँ अत्यधिक आकर्षित कैलकनि। एक तरहेँ गंगाक परिचय सँ पल्लवी कैँ ललितक खानदान सँ परिचय भेटि गेलनि। पल्लवी कैँ तृप्ति भेटलनि। हुनकर ललितक प्रति निकटता आओर प्रगाढ़ भ' गेल।

पल्लवी अपन लेडिज बैग सँ छोटसन डीजिटल मूभी कैमरा निकाललनि आ गंगाक संगे टुकुर-टुकुर तकैत सभटा छौंड़ाक फोटो खिचलनि। तकरबाद सभ कैँ अभिनन्दन क' पल्लवी ललितक हाथ पकड़ने ओतय सँ प्रस्थान कैलनि। कोबीक बन्द बकार फुटलै—पल्लव सँ पल्लवी। आह! कतेक सुन्दर नाम।

बचकुन ताकित करैत बाजल—कनियो मिठगर वस्तु देखलहुँ आ कि लोभी बनि जी सँ पानि चुआब' लगलहुँ! हरौ कोबिया, तौँ अपन कमली मे सटल रह आ सन्तोख राख।

गंगा मालिकक सोझाँ मे कोबी लजा गेल आ चुप्पे रहल। ओम्हरे बाटे जुगल मंडल कतहु जा रहल छल। बचकुन ओकरा उपराग देलकै—नाटक मे स्टेज बनबै लेल चौकीक दरकार होइत छैक। घरे-घर सँ चौकी आनल गेलै, मुदा जुगल काका, तोरा

ओहि ठामक चौकी नहि एलै, से किएक?

—आहि रे बा! हमर चौकी मे उड़ीस। तोरा त' बुझले छह जे उड़ीस कँ एकहि दिन मे परपौत्र तक जनमि जाइत छैक। चौकीक गहे-गह मे जखन उड़ीस फड़ि गेल रहए तखन हम ओकरा उठाक' नवकी पोखरि मे डूबा क' छोड़ि देलियैए। बुझह सार अपन अखड़पाना। पोखरि मे पुबारी कात जिम्मरक खुट्टा गाड़ल देखबहक। ओही ठाम चौकी पानि मे डुबल भेटतह। चौकी अनबा लए। हम गामक सझिया काज मे लाथ कर'बला लोक नहि छी हौ!

गाम मे कोनो नाटकक आयोजन होअय, हिरोइन बौने बनत। केश छाँट' मे जेहने ओस्ताद, मौगीक पाट कर' मे तेहने माजल कलाकार। बौना गंगा सँ कहलक—छोटका मालिक, हमर बात सुनू। बनौआ केश, किलीप, डरकस, घुघुरुबला पायल, हाथ महक चूड़ी-अगेली, कान महक एरिंग सभटा इन्तजाम हम क' लेने छी। ब्लाउज ठाम-ठाम पर मसकल रहए। मुदा ओकरो सी-सा क' आ धो-धा क' काज जोगरक बना लेने छी। पछिला बेर छाती बनेबै लेल बेलुनक प्रयोग कयने रही। मुदा ओ घोखा देलक। एकटा बेलुनक हवा बीचहि मे फुस्स भ' गेल रहए। तँ अहिबेर रबरक दू गोट गँद अनने छी।

कोबी टोकारा देलकै—गँदक उरोज केहनो ने हेतइ। एकरा लेल बेलूने ठीक रहतउ। बेलुन मुलायम आ गुजगुज होइत छैक।

—चुप! बेमलतब दोसरक काज मे टाँग नहि अड़बौ। हँ, त' गंगा मालिक, हम कहैत रही जे सभ वस्तुक इन्तजाम हम क' लेने छी। मुदा द्रोपदी पाण्डवक महारानी! द्रोपदी जोगरक साड़ीक इन्तजाम हमरा बुत्ते नहि भ' सकलए। अहाँ अपन भौजी सँ एकटा नीक नुआ दिआ दी से अहाँ लग हमर पैरबी अछि।

पार्वती गंगा भाउज आ गगन यादवक पत्नी। पार्वतीक दुखक अन्त नहि। विधाताक इजलास मे कखनहुँ काल उटपटाँग काज होइए। गगन यादव शरीर सँ ठमकुल-थकुचल, चेहरा पर दुष्टताक छाँही, आवाज कर्कश एवं अहंकारी, स्वभाव सँ धूर्त, सदिकाल खुराफात आ कुकर्म कर' लेल तैयार। सैह कहू, मालिक बाबा सनक धर्मपरायण, दयालु एवं परोपकारीक खानदान मे कतहु एहन लोक जन्म लिअय! मालिक बाबा नेनहि सँ गगन कँ घृणा करैत छथि। मुदा ओ करतथि की? गगन सेहो हुनकर पौत्रे छल ने! तँ ओ चुपे रहैत छलाह।

अंग्रेज भारत सँ भागल। पुरना नेता चरित्रक पोख्ता, अति विशिष्ट आ बलिदानी। मुदा सभटा नेता थाकल-चूड़ल आ बुढ़ायल। सभटाक प्राण कंठ तक पहुँचि शरीर त्याग कर' लेल तत्पर। राजनीतिक मैदान सपाट, खाली पड़ल। मात्र कतहु-कतहु

एक-दू गोट पीपरक बुढ़बा गाछ जकर पात झड़ल, जड़ि सुखायल। आब देशक बागडोर सम्हारत के? जकरा मे राजनीतिक निपुणता होइक। ओहि राजनीतिज्ञक पहिचान? जे जन्महि सँ भ्रष्ट आचरणक स्वामी होअय से।

गगन अहि तरहक क्वालिफिकेशन मे फिट छल। ओ सदिकाल अपन शिकारक खोज मे रहैत छल। दस बर्ख पूर्वक गप्प थिक। चुनाव मे गगन हरिहर मंडलक मुख्य संचालक बनल। चुनाव मे ओ गामे-गामे, टोले-टोले घुमि-घुमि हरिहर मंडलक प्रचार क' रहल छल, तखने ओकरा अपन जातिएक नंदलाल यादव सँ परिचय भेल रहै।

नंदलाल यादव सज्जन, सरल आ 'ने मारी माँछ ने उपछी खत्ता' स्वभावक लोक। हुनका लगभग चारि बीघा खेत आ दस कट्ठाक घराड़ी। नंदलाल बयोवृद्ध छला आ संतान मे हुनकर एक मात्र पौत्री पार्वती छलनि। हुनकर शांत जीवन मे मात्र एकटा चिंता। पार्वती केँ नीक ठाम बिआह करा अपन इहलौकिक दायित्व केँ समाप्त करी। ततबेटा काज नंदलालक जिम्मा शेष रहि गेल छल।

नंदलाल सनक शिकारक खोज मे गगन रहिते छल। नंदलाल केँ छल-बल सँ अपना कब्जा मे क' लेब गगन लेल अत्यन्त सहज काज छलै। अस्तु, गगन नंदलालक गृहस्थ जीवन मे प्रवेश करबाक रास्ता तकलक।

ठक्कन यादवक प्रतिष्ठा परोपट्टा मे सभ सँ अधिक आ गगन हुनकर पौत्र। तखन आरो की चाही? गगनक आगत-स्वागत हेबैक चाही। गगन आस्ते-आस्ते नंदलाल मे एतेक ने सटि गेल, एतेक ने घुलि-मिलि गेल जे अन्ततोगत्वा ओ हुनक परिवारक एकटा सदस्य बनि गेल। आब गगन नंदलालेक ओतय रहैत छल आ हुनकर परिवारक सभटा काज करैत छल। ओ परिवारक पूजा-गृह मे स्थापित राधा-कृष्णक प्रतिमाक पूजा घंटो एकाग्रचित्त सँ करैत छल आ चन्द्रोगत लेलाक बादे पार्वतीक आनल जलपान करैत छल।

पता नहि किएक, पार्वती केँ गगन सोहाइत नहि छलै। गगन यादवक स्वरूप मे ओकरा बेइमान मनुक्खक छाप देख' मे अबैत छलै। गगन देख' मे कुरूप छल से त' एगो बात भेल। ताहू सँ बेसी गगनक चालि-ढालि मे पार्वती केँ धूर्त आ दुष्टक दर्शन होइत रहै। एक तरहेँ पार्वती गगन सँ घृणा करैत छलि आ ओकरा सँ हटले रहैत छलि। ताहि सँ अधिक पार्वती आरो किछु कइए ने सकैत छलि।

कोन ठेकान नंदलाल बाबा केँ राति-बिराति सेवाक आवश्यकता भ' जानि, तेँ भोजन कैलाक बाद गगन रात्रि विश्राम नंदलालक बगल बला चौकी पर कर' लागल छल। जइ बातक संशय पार्वतीक हृदय मे सदिकाल सूइ जकाँ भोंकैत रहैत छलनि से भ' गेलै। अर्द्ध रात्रि मे गगनक भयंकर रुदन सँ पार्वतीक निन्न टुटलनि। ओ

दौड़ैत बाबाक चौकी लग अयली। हिचुकैत गगन तखने पार्वती कैँ सूचित कैलक–बाबा हमरा दुनूकैँ असहाय छोड़ि चलि गेलाह।

पार्वती लेल ई आघात छल। ओकर एकमात्र सहारा ओकर बाबा, हुनकर मृत्यु भ' गेलनि। मृत्यु कोना भेलनि? से के कहत? मुदा नंदलाल मरल पड़ल छथि आ तकर साक्षी गगन यादव। एकाएक एहन कठोर आघात पार्वती सहि नहि पौलनि आ अचैत भ' भूमि पर खसि पड़ली।

पार्वती जाहि अवस्था मे मूर्छा सँ होश मे एलीह हुनका दोसर आघात लगलनि। हुनक लग किछुओ टा बाँचल नहि छलनि। आब त' गगन यादव सँ बिआहे क' ओ अपन धर्म बचा क' राखि सकैत छलीह। वाहरे जीवनक विडम्बना! निरुपाय, लाचार आ वेवश पार्वती परिस्थितक आगाँ नतमस्तक भ' गेलीह। आगू किछुए महिनाक भीतरे गगन यादव अपन सासुरक सभटा जमीन-जथा बेचि पार्वतीक सीथ मे सेनुर भरि घुमि क' साधुपूरा पहुँचि गेल।

मालिक बाबा अपन पौत्र गगनक कृत्य कैँ देखलनि, सहलनि आ चुप्पे रहि सभटा ग्लानि कैँ घोँटि गेलाह। पार्वती देख' मे सुन्दरि आ स्वभाव सँ सलज्ज छलीह। आँगन मे हुनक अपन आ पितिया सासु, दुनू हुनका पसिन्न कैलखिन। सभटा सभ तरहक विधि-व्यवहार क' अपन पुतहु बना राखि लेलखिन। बहुत वर्ख सँ सुनसान पड़ल ठक्कन यादवक आँगन पार्वतीक अएला सँ जीवन्त भ' उठल, ओतय चहल-पहल बढ़ि गेलै।

दूध-दही-घृत अर्थात् नीक-निकुत भोजन खेला सँ बुद्धिमानक बुद्धि बढ़ैत छै, मुदा दुष्टात्माक दुष्टते बढ़ि जाइत छैक। गगन यादव अपन दुष्टता कैँ नंदलाल यादव ओहि ठाम कनिकबे खर्च कयने छल। मुदा साधुपूरा मे ओकर स्वभाव मे भरल दुष्टता पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छलै। दुष्टताक प्रदर्शन करक लेल जँ पुरुष कैँ अपन पत्नी भेटि जाय त' ई भेल सोना मे सुगन्ध। नंदलालक ओतय पार्वती द्वारा भेल अपन अनादरक बदला चुकाब' मे गगन कखनो कृपणता नहि कैलक। ओ पार्वती कैँ प्रताड़ित कर' लेल सभटा मार्ग अपनौलक। पार्वती कैँ लोहछा-लोहछा क' अपन हवसक पूर्ति करैत रहल। मुदा पार्वतीक धैर्यक आगाँ गगनक सभटा अस्त्र बेकार भ' गेलै। ओहुना ठक्कन यादवक साम्राज्य मे ओ अपन दुष्ट-कलाक बहुत बेसी प्रदर्शन कइओ ने सकैत छल। हारि थाकि क' पार्वतीकैँ सभ दिन लेल त्यागि गगन यादव पीड़ापुर मे अपन स्थायी निवास बना क' रह' लागल।

पार्वती जखन पुतोहु बनि मालिक बाबाक आँगन मे आयलि रहथि तखन गंगा दस बर्खक छल। मुदा जे किछु भेल रहै से सभटा ओ देखने छल आ ओकरा मोन

रहैक। पार्वती कैँ गंगा सन् दिअर भेटल रहै, ईश्वर कैँ लाख-लाख प्रणाम! मायक, बहीनक, मित्रक एवं भाउजक सम्मिलित स्नेह-भाव सँ पार्वती गंगा कैँ अपन हृदय मे स्थापित क' सुखक जिनगी जिअ लगलीह। गंगो अपन भाइज पार्वती कैँ अत्यधिक आदर करैत छल। हुनक आदेशक अधीन रहि खेलाइत-धुपाइत छल।

अजुके गप्प थिक। ललितक नारी-मित्र पल्लवी कैँ चाह-नास्ता देलाक बाद पार्वती गंगा कैँ एकांत मे ल' जा क' पुछने छलथिन—दिअर बाबू, अहाँक आ मंगलीक प्रेम-लीलाक चर्चा हमर कान तक पहुँचलए। हमरा सुनल अछि जे प्रेम कयल नहि जाइत छै, भ' जाइत छैक। तँ हमरा फरिछा क' कहू जे अहाँ दुनूक ई प्रेम थिक आ की छौंड़ा-छौंड़ीक खेल। जँ छौंड़ा-छौंड़ीक खेल छी त' अनठाओल जा सकैत अछि। हम अहाँक स्वभाव एवं प्रवृत्ति जानि गेल छी। जँ अहाँ दुनूक असलीका प्रेम अछि त' हे भगवान! एकरा एखने रोकल जैबाक चाही। अन्यथा एहन ने बिहाड़ि उठत जे अहाँ, हम आओर सभटा परिवार पात जकाँ उड़िया जायब। हम अहाँक भौजी, भौजी सँ किछु नुकेबाक नहि चाही। दिअर बाबू, खोलि क' कहू, की हमर सुनल बात सत्य अछि?

गंगाक मुह लाजे लाल टरेश भ' गेल रहै। ओ कुहरैत बाजल छल धुत्त। एतेक कहैत ओ भाउज लग सँ पड़ा गेल छल। एखन द्रौपदीक पाट लेल साड़ी दिआब' ओ बौना कैँ ल' क' भौजी लग कोना जइते। गंगा बौनाक पैरबी कैँ टारैत कहलक—भौजी लग तोँ अपने जो। साड़ी मँगबहुन त' भौजी साड़ी देबेटा करथुन। लाथ कथमपि नहि करथुन। हम एखन भौजीक सोझाँ मे जाय नहि चाहैत छी।

कोबी एकाएक धौना पसारलक—एखने तसफिया भ' जाय त' नीक रहत। हमहीं कृष्णक पाट खेलायब। हमरा जँ दोसर तेसर पाट देब' त' हम कहि दैत छी, हम गाम छोड़ि अन्यत्र भागि जायब।

बचकुन कैँ रंज नहि होइत छलै। मुदा कोबी सनक कठकौँकारिक बात सुनि ओ पित्ते आन्हर भ' गेल। ओ कोबीक सोझाँ मे तनि क' ठाढ़ भेल आ बाजल—तोँ कहियो अपन मुखरा कैँ एना मे देखलएँ? घोड़ा सनक नमरल आ तराजूक पासन सनक झुकल मुखरा छौ आ तोँ पाट करबँ कृष्ण-कन्हैयाक। हरौ हरशंखा, सुन। कृष्णक पाट कर' लेल हमर दोस्त गंगा छथि। मात्र मयुर पंखबला मुकुट हिनका पहिरा दहुन आ हाथ मे बाँसुरी पकड़ा दहुन त' ई भ' गेला गोपाल। गंगा कैँ छोड़ि कन्हैयाक पाट कियो कइए ने सकैत अछि।

मुदा कोबी अपन जिद्द पर अड़ले रहल। बात-विवाद होब' लागल। वातावरण विषाक्त भ' गेल। तमाम छौंड़ाक ललाट पर चिंता पसरि गेल। तखन मामिला कैँ

हल्लुक बनबैत गंगा अपने दोस्त कैँ एकांत मे ल' गेला आ कहलनि—बचकुन, हमर बात सुनै। नाटक खेलनिहार दस-बारह गोट मनुक्ख आ देखनिहार कइएक हजार। एतेक लोकक संग्रह आ ओकर नाटक देखैक जोश आन कोनो टा काज मे नहि होइत छै। कोबिया कैँ जँ कृष्णक पाट नहि देबहीन त' ई किसिम-किसिमक ठकठेना ठाढ़ क' देतै। ई सार, दु-मुँहा साँप थिक। एकर बिखक नहि, फुपकारक डर। जग हँसारत सँ बचै लेल एकरे कृष्ण बन' दहीन। ओना कृष्णक पाट त' छोटे छैक आ जेहो छैक तकरा कपचि क' छोट क' दही। ललित भैयाक संगिनी सेहो नाटक देखै लेल एबे करथिन। लाज सँ बँचबाक लेल हम नाटक मे कोनो पाट नहि करी सैह ठीक रहत। जा क' सभक बीच कहि दहीन जे तसफिया भ' गेल, कोबिये कृष्ण बनत।

काल्हि भेने अपन नियत समय पर नाटक आरम्भ भेल। लोक कतेक आयल तकरा अन्हरिया राति मे गनब असंभव छल। पीड़ापुर पंचायत आ तकर सटल तीन-चारि गामक मनुक्ख सँ दर्शक दीर्घा ठसमठस भरि गेल। साबेक डोरी मे लाल-पीअर-हरियर कागतक झंडा सँ स्थान कैँ छेकि देल गेल रहै। बामा कात मौगी आ दाहिना कात मनसा। धिया-पूता अगिला पाँत मे। एक कात दू गोट कुर्सी पर ललित एवं पल्लवी स्थान ग्रहण कैलनि। मालिक बाबाक चाकर मे मटरा खबास कैँ छोड़ि सभ नाटक देख' आयल आ सभ एकेठाम सटि क' बैसल। कल्लू मड़र कैँ दूर सँ देख' बला चश्मा नहि छलनि। ओ स्टेजक पर्दा पर केवल कुकुरमाछी कैँ उड़ैत देखैत छलखिन। तँ की? जखन नाटक शुरू हेतै, हुनका कहि देल जेतनि। हुनको नाटक देखैक आनन्द भेटतनि, से धरि पक्का। ओही ठाम कोबीक काव्य-गुरु सदानन्द झा 'दीन' जी अपन भातिज किरपानाथ संगे बैसला। कोबी अपन गुरु कैँ नाटकक निमंत्रण देबा काल हुनका विश्वास द' देने छल जे नाटक मे किरपानाथ कैँ गीत गबैक चान्स ओ अबस्से दिया देतनि।

नाटकक सभटा खर्च गंगाक बाबाक जिम्मा। बचकुन इन्तजामकर्त्ता मे मुख्य रहितो युधिष्ठिरक पाट क' रहल छल। मधुरिया पहिनहि कहि देने रहै जे चिचिया-चिचिया क' माछ बेचैक दुआरे ओकर गला सदिकाल फँसले रहैत छैक। ओकरा धृतराष्ट्रक पाट देल गेल रहै, जाहि मे एको लाइनक डॉयलाग नहि छलै। बस आँखि मुनने बैसल रहू आ सब किछु देखैत रहू। शकुनीक पाट लेल फिट छल कोबी मुदा ता जबरदस्ती ओ अड़ारि क' क' कृष्ण बनि गेल छल। तँ पीड़ापुर सँ मंगनियाँ कैँ शकुनीक पाट कर' लेल बोरो क' क' आनल गेल छल। मँगनियाँ अपन टीम संगे आयल छल। अर्जुन, नकुल, सहदेव आ कर्ण ओकरे टीमक लोक बनल छलै। गाम मे सभसँ मोटगर-डटगर छल फुदरा। ओ भीम बनल छल। कच्छा पहिरने खाली देहे

ओ भुस्सा भरल गदा कँ कान्ह पर उठौने टहलि रहल छल।

सभटा कलाकार पर्दाक अढ़ मे लाइन मे बैसल छल। मेकअप मैन चौआ सभक चेहरा पर मुर्दाशंखक बुकनी पोति चुकल छल। मौँछ बनाओत। कृष्ण कँ मोछ नहि छलनि, मुदा हुनकर आँखि मे काजर होयब जरूरी। कजरौटा आनक लेल कोबी कमली कँ अपन आँगन पठौने छल। ताबे आन काजक अभाव मे कोबी एखन द्रौपदी कँ नुआ पहिराबै मे व्यस्त छल।

बचकुन कँ एखन अधहे मोछ बनल रहै तखने दर्शक दीर्घाक सामियना मे दू गोट पेट्रोमौक्स कँ फकफकी बीमारी पछाड़ि देलकै। लाइट मिस्तरी मे बचकुन असगरे। ओकरा ओही हालत मे लाइट कँ कनौठी देब' लेल स्टेजक नीचाँ आब' पड़लै। छौंड़ा सभ खीं-खीं करैत खिखिआय लागल। बचकुनक आधा मौँछक कारीगिरी देखि पल्लवीक ठोर बीच दाँत पसरि गेलनि। पल्लवी कँ एखन जीवनक एहन अद्‌भुत अनुभव भेटि रहल छलनि जकर ओ कल्पनो ने कयने छलीह। हुनकर शोधक विषय, 'की एखनहुँ भारत गाँव मे बसैत अछि' मे पन्नाक पन्ना रपट जोड़ा रहल छल। एकैसम सदी मे गामक एहन सरल, निश्छल आ पूर्ण शाकाहारी दृश्य देखि पल्लवी कँ अपार हर्ष भ' रहल छलनि। आगाँ की हेतै तकर प्रबल जिज्ञासा पल्लवीक मोन कँ गुदगुदा रहल छलनि।

नाटक शुरू होयत, तकर सूचना माइक सँ देल गेल। पब्लिक सभ शान्त भ' गेल। छेदियाक काज छल पर्दा उठायब आ खसायब। छेदिया डोरी तनलक। पर्दा उठल। सभटा कलाकार पाँती मे ठार। माइक सँ सभक परिचय देल गेल। द्रौपदी कँ देखि गामक छौंड़ी चहकि उठलि—माइ गे माइ! बौना कतेक सुन्नर बनि गेलैए। देखहीन ने, बुलकियो पहिरने छै। बाँकी कलाकारक मेकअप ताहि तरहक छल जेना ओ सभ कोनो आन धरतीक जीव होअय।

पहिल सीन समाप्त भेल। शकुनीक पाट मे मँगनियाँ। ओकर पाशा फेकब आ ले रे युधिष्ठिरबा, हम फेर जीति गेलियौ' बजैक अन्दाज दर्शकक मोन कँ मोहि लेलक। सही मे बिपटाक पाट खेलाइ मे मँगनियाँ बेजोड़ अछि। आब दोसर सीनक तौयारी शुरू भेल। छेदिया पर्दा खसौलक। स्टेज पर जंगलक सीन आबि गेल। कोबीक आग्रह पर सदानन्द झा 'दीन' जीक भातिज किरपा नाथ कँ स्टेज पर आमंत्रित कयल गेल। किरपा नाथ नर्भसा गेला। हुनकर पयर डगमगा गेलनि। तथापि ओ अपन काकाक सिखाओल विद्यापतिक गीत 'कखन हरब दुख मोर हो भोला नाथ' गाबए लगलाह। गीतक भास भसिआय लागल छल। कल्लू कहलनि—ई गीत त' पराती' सनक लगैत अछि। कारी मंडल जबाब देलक—साँझ पराती भोर

बसंत तइ सँ बूझी बुड़िराजक अन्त। लग मे बौसल दीनजीक देह मे कबाइछ लागि गेलनि। ओ उठि क' स्टेजक कोन मे गेलाह आ किरपानाथ कैँ किछु निर्देश देलनि। किरपानाथ विद्यापतिक दोसर गीत 'चानन भेल विषम शर रे, भूषण भेल भारी' गाबए लगलाह।

बामा कात हारमोनियम मास्टर एवं ढोलक मास्टर बैसल गीत मे बाजाक संगत क' रहल छल। गीत आ संगीत मे कोनो टा मेल नहि रहै। अकछा क' तशलीमा उठल आ सामने पड़ल भीमक गदा उठा क' बिजुआहाक कपार पर पटकि देलक। हल्ला भेलै। कोन तरहक हल्ला छै हौ? दर्शक बात बुझ' लेल भनभनाए लागल। नाटक इनचार्ज बचकुन धड़फराइत आयल। ताबत ओकर दुनू कातक मौँछ बनि गेल रहै। तशलीम कहलकै–"गीत हइ विद्यापति का। हम हरमोनियम पर स्थाई सुर मे औरु ई साला बिजुआहा कौआली का झपताला तर्ज पर ढोलक पीट रहलैए। ई हमर हरमोनियम के सुर का वेराम कर देलकै। अल्ला हो अल्ला! बिजुआहा हमरा इज्जत का हवा निकाल देलकै।"

हारमोनियम मास्टर एवं ढोलकियाक मुहक ताड़ीक गंध एक धूर तक पसरि गेल रहै। बचकुन बड़ा कठिने दुनू कैँ शान्त कैलक। भीमक पाट मे फुदरा मुश्किल मे पड़ि गेल। भीमक गदा फाटि गेल रहै आ भुस्सा बाहर मे छिड़िया गेल रहै। बिन गदाक भीम भैइए ने सकैत अछि। फुदरा छिड़िआयल भुस्सा कैँ गदा मे भरब शुरू कैलक।

किरपानाथ विद्यापतिक तेसर गीत गाबए लगलाह। ताही काल दर्शक दीर्घा सँ कियो फबती कसलक–हयौ गबैयाजी, मलार, बटगबनी तरहक गीत गबियौ। मुदा किरपानाथक स्टॉक मे कोनो तेहन गीत होनि तखने ने! ओ छलाह कीर्तनियाँ। दस-बीस कोस मे कतहु अष्टयाम होअय, किरपानाथ कैँ अबस्से बजाओल जाइत छल। ओ सिनेमाक गीतक तर्ज पर गौरी-शंकर, गौरी-शंकर, सीताराम-सीताराम, राधेकृष्ण-राधेकृष्ण तेहन झमकौआ सुर मे गाबथि जे अष्टयामी झूमि उठए। ओकर कयल कबुलाक पूर्ति भ' जाइ। एखन किरपानाथ अपन काकाक सिखाओल आ रटाओल विद्यापतिक गीत गाब' लेल स्टेज पर गेल छलाह।

तखने पिहकारी पड़ल। देखनिहार मे हलचल मचल। पपीहाजी अपन पिपहनी अर्थात भगजोगनी संग आबि गेलाए। खगड़िया सँ एलथिन अछि तैँ बिलम्ब भेलनि। आब मचतै धमगज्जर। नाटक मे जकर इन्तजार छल से प्रेमी-जुगलक आगमन भ' गेल। के मानत जे भगजोगनी छौंड़ी नहि छौंड़ा अछि? ओकर चमचमिया साटल घघरी, घगरीक ऊपर बुट्टेदार आंगी आ आंगी मे झाँपल एक-एक अढ़ैयाक गोल-गोल

उरोज। मौगी बला झोँटा ओकर ओरिजिनले छल। नाकक बुट्टा, कानक झुमका आ कपार परक बिन्दी ओ सदिकाल सटनहि रहैत अछि। स्टेज परक भगजोगनीक थिरकब देख' लेल पब्लिक अधीर भ' रहल छल। मुदा ठहर', धैर्य राख'। नाटकक तेसर सीन खतम होब' दही, तखन पपीहा-भगजोगनीक गीत-नाच सुनिहँ, देखिहँ।

तेसर सीन समाप्त भेल। पपीहा आओर भगजोगनी स्टेज पर आयल। माइक सोझ कयल गेल। बचकुन युधिष्ठिरक पोशाक मे रहे तैँ की ओ स्टेज पर आबि लाइट कैँ भुकभुका क' ओकरा पावर बढ़ा देलक। स्टेज इजोत मे चमकि उठल। हारमोनियम तथा ढोलक दुनूक तर्जना शुरू भेल। पपीहा जी गीत गाबय लगलाह–

चल छौंड़ी हमर संग तमौरिया गइ, तमौरिया गइ।
गहना सँ गहि देबौ घमौरिया गइ, घमौरिया गइ।
तोरा कहिआ सँ क' रहल छियौ निहोरा गइ, निहोरा गइ।
चल छौंड़ी हमरा संग तमौरिया गइ, तमौरिया गइ।

गीतक संग ढोलकक थाप आ भगजोगनीक नाच। समाँ एहन बनल जे दर्शक मंत्र-मुग्ध भ' गेल। पुरुष वर्ग आनन्दे सीटी बजब' लागल। महिलाक झुंड मे सेहो खलबली मचि गेल। आगू सँ हट गइ खोपाबाली निरासी। कनिए हमरो नाच देख' दे, सेहन्ता पुरब' दे। माइ गे माइ! कते दिन पर एहन नाच देखलहुएँ।

भगजोगनी कैँ नाच कर' काल ओकर सम्पूर्ण शरीर मे जूड़ी-ताप बला कम्पन होइत छलै। थिरकैक जनून मे ओ जुगल मंडल बला चौकी पर पयर राखि देलक। पानि मे डुबल रह' दुआरे चौकी पर पुष्ट क' कजरी जमकल रहै। भगजोगनीक पयर पिछड़लै। ओकर दुनू पयर सरंगपताली ढोलकिया दिस जाय लगलै। मुदा बाहरे बिजुआहा! ओ सही मे कलाकार छल। ओ अपन ढोलक अड़का देलक। भगजोगनी स्टेजक नीचाँ खसै सँ बाँचि गेल। तशलीम अपन चेला बिजुआहा कैँ मूड़ी डोला-डोला क' चाबसी देलक। कियो किछु ने बुझलक। गीतक सुर, ढोलकक ताल आ भगजोगनीक डान्स चालुए रहल। दर्शक मे किलकारी आ पिहकारी ततेक ने जोर सँ पड़लै जे चारूकात भूकम्प जकाँ धरती डोल' लागल।

मुदा गीतक बोल सुनि क' आ भगजोगनीक नाच देखिक' सदानन्द झा 'दीन'क मुखमंडल विकृत भ' गेलनि। रद्द ने भ' जानि तेहन सनक हुनक मुहक आकृति बनि गेलनि। मिथिलाक संस्कृति, सभ्यता, शुचिता एवं प्राचीन परम्पराक असगर पहरेदार तथा सम्पूर्ण मिथिलाक जनसंख्याक दू प्रतिशतक प्रतिनिधित्व केनिहार दीनजी अहि तरहक अश्लील एवं बेहूदा नाच-गान कैँ घोँटि नहि सकलाह। नाच देख' मे मग्न ओ अपन भातिज दिस तकलनि। एखन किरपानाथक आँखिक डिम्हा मे कामदेव

दण्ड-बैठकी क' रहल छलाह। दीन जीक ऊपर तुषारपात भेल। हुनक बुद्धि आ विवेक चौपट भ' गेल। ओ असहाय भेल बहुत तरहक अनर्गल शब्दोच्चारण करैत-करैत अर्द्धमूर्च्छित अवस्था मे पहुँचि गेलाह।

मिथिलाक अनठावन प्रतिशत जनसंख्याक प्रतिनिधित्व कर'बला कारी रंगक कुर्ता पहिरने राउत ओतहि बैसल छल। सदिकाल चुप रह'बला राउत दीनजीक दीन अवस्था देखि बाचाल भ' गेल—अहाँ एना बड़बड़ा रहलहुँ अछि जेना अहाँ मनुक्ख नहि फरिस्ता होइ। हयौ मास्टरजी, अहि संसार मे सभ किछु फुसिए छै, सभकिछु नाटके थिकै। अहाँ मास्टरक पाट मे छी आ हम चरबाहक पाट मे। अन्हार कोठली सँ एलहुँए आ नाटक करैत-करैत फेर ओही अन्हार कोठली मे जा क' बिला जायब। एखन जे अहाँ देखि रहल छी से भेल नाटक मे नाटक। तखन अहि नटंकी कैँ देखि अहाँ मुँह किएक बिचकबैत छी। बुद्धिक बधिया नहि करू, जे किछु होइत छै होब' दिऔ। अपन नाटक कैँ छोड़ि चुपचाप दोसरक नाटक देखैत रहू।

दीन जी अत्यधिक क्रोध आ विक्षोभ मे रहथि। ओ मोनक धधकल शब्द बाहर कैलनि—मूर्ख, मूर्ख सँ हम वार्तालाप नहि करैत छी।

दीनजी अपन भातिजक हाथ पकड़ि नाटकक स्थान सँ पलायन कर' लेल तैयार भेलाह। तखने हुनका मोन पड़लनि जे नाटकक निमंत्रण देबा काल कोबी हुनका कहने छल जे नाटक समाप्त भेला पर ओ एक मटकुड़ी दही सनेस मे देतनि। लोभ दीनजीक अहम कैँ थोपड़ा क' बिदा क' देलक। सदानन्द झा 'दीन' चुपचाप नाटक देख' लगलाह।

पपीहाक गीत आ भगजोगनीक नाच समाप्त भेल। दर्शकक उमंग सँ उठल प्रसन्नताक हिलकोर शांत भेल। ललितक बगल मे बैसलि पल्लवी कैँ अपन थीसिसक लेल टिप्स चाही ने! ओ सोचै लेल विवश भेलीह। शहरक डिस्को-डान्स आओर साधुपूरा गामक पपीहा-भगजोगनीक गान-नाच मे की कोनो भिन्नता छैक? नहि यौ, दुनू एके तरहक अछि। सामाजिक प्रतिबंध सँ प्रताड़ित प्रचंड काम-बासनाक फूहड़ प्रदर्शन दुनू ठाम भेल, मात्र प्रदर्शनक शैली मे फर्क कैँ पल्लवी नोट केलनिए। एकट्ठा भेल एतेक दर्शकक समान रुचकैँ कियो उपेक्षा कोना क' सकैत अछि? एक नव संस्कृति सँ साक्षात्कार क' पल्लवी कैँ प्रसन्नता भेलनि।

नाटकक अन्त समीप आबि गेल। आब अन्तिम दृश्यक मंचन होयत। बचकुन नाटकक कर्त्ता-धर्त्ता। अन्तिम सीन मे द्रौपदीक चीर-हरण देखाओल जेतै। तकरा लेल दुःशासनक होयब नितांत जरूरी। मुदा दुःशासन अछि कत'? आहि रे बा! दुःशासन त' निपत्ता भ' गेलए। बचकुन सभठाम तकलक, ओकरा दुःशासन कतहु नहि

भेटलै। समस्या ठाढ़ भ' गेल। मुदा बचकुन हारि मान'बला लोक नहि। ओ एक क्षण तक गहन विचार कैलक आ तखन भनभनायल–हँ, हँ। सैह उचित हेतै।

नाटकक स्टेजक आगाँ मे हलचल, लोकक जमघट, लाइटक इजोत। मुदा पार्श्व भाग मे अन्हार, सृष्टिक सभ सँ पैघ खानगी करक स्थान आ तेँ प्रेमी-युगलक उपयुक्त मिलन-स्थली। ओतय हवा शान्त छल, रात्रि शान्त छल आ अकाशक तेरगन अपन शीतल ज्योति पसारने सेहो शान्त छल। बचकुन अपन दोस्त गंगा कैँ तकैत-तकैत ओतहि पहुँचल। ओतय गंगा एवं मंगली अपन प्रेम लीला नामक नाटक मे निमग्न छलि।

बचकुन गंगा के पुचकारैत कहलक–जुलुम भ' गेल दोस्त, सैह बुझि लिअ। दुःशासनक पाट मे भुलना छल, मुदा ओकरा पेचिशक रोग। भुलना निपत्ता अछि। आब दुःशासनक बिना द्रौपदीक चीर हरण हैत कोना? तेँ अहाँ सँ निवेदन कर' एलहुँ अछि जे अहाँ दुःशासन बनि कहुना नाटकक इज्जति कैँ बचा लियौ।

मेकअप मैन चौआ तौयारे छल। गंगाक चेहरा पर मुर्दाशंखक चूर्ण अधिक मात्रा मे लेपल गेल। फेर ओकरा गमछा सँ पोछि चौथाइ इन्च बरोबरि मोट पाउडर पोतल गेल। मुर्दाशंख एवं पाउडरक पोत मिलि क' गंगाक मुखमंडल कैँ लालटरेस क' देलक। तकरबाद चौआ करिया पिन्सील सँ खूब चौड़गर, मोछ बनौलक। गंगा आब दुःशासन नामक राक्षस बनि ही-ही कर' लगला। गंगा कैँ आब चिन्हतनि के? पल्लवी त' अबस्से चिन्हि नहि पौती। सही ड्रेसक अभाव मे गंगा कैँ सुल्ताना डाकू बला पोशाक पहिरा देल गेलनि। बिना तलवारक म्यान डाँड़ मे लटका देल गेलनि। मंगली ओतहि ठाढ़ि छलि, खिखिया क' हँसि पड़लि।

पर्दा उठल। धृतराष्ट्रक दरबार मे सभ किछु यथा स्थान छल। एक कात पाँचो पाण्डव मूड़ी झुकौने बैसल छलाह। शकुनी नील डाउन भेल कौड़ी भजैत चटपट-चटपट क' रहल छल। सिंहासन पर आँखि मुनने घृतराष्ट्र अहि तरहँ अपन गरदनि कैँ अलगौने छल जे लोक ओकरा देखौक आ बुझौक जे ओ आन्हर अछि। सभक बीच दुःशासन दुर्योधन लग ठाढ़ छल। ओकर ऊँचाइ एक बीत ऊपर रहैक। एकाएक दुर्योधन स्टेज पर चक्कर काट' लागल आ चक्कर कटिते गर्जैति आदेश देलक–हयौ हमर कनिष्ट भ्राता दुःशासन! मुह की तकैत छी? हम आदेश दैत छी, अहाँ द्रौपदी कैँ झोँटा पकड़ि दरबार मे हाजिर करू।

पर्दाक अढ़ मे द्रौपदी बनल बौना ठाढ़ छल। बौना फुसफुसा क' बाजल–गंगा मालिक, हम अहाँक कहला पर अहाँक भौजी सँ साड़ी मगलियनि। ओ पेटार सँ अपन बिआह बला पटोर निकालि क' द' देलनि। ओ पटोर पहिरक बहुत प्रयत्न

कयल, मुदा ई ततेक ने छिछलाह होइत छैक जे पहिरले ने भेल। तखन कहुना क' एकरा अपन डोराडोरि मे बान्हि क' पहिरने छी। अहाँ चीरहरण काल सावधानी सँ साड़ी कँ खिंचबै।

कनेकाल पहिने तक गंगा मंगली संग प्रेमक झूला झूलि रहल छल। तकर उमंगक कारणे ओ डबल जोश मे रहथि। गंगा द्रौपदीक झोँटा तिरने स्टेज पर पहुँचला। छौंड़ी मंडली दिस सँ कोनो छौंड़ी कँ चिचियाइत आक्रोश बहरेलौ—गइ माय! गंगा मालिक दुःशासन बनल एखन रावण सनक लगैत छथिन।

दर्शक दीर्घा दिस सँ आयल भनभनाइत स्वर दिस बिन ध्यान देने दुर्योधन हुकुम देलक—अहि रंडी कँ नांगट क' दिअ। बिलम्ब नहि करू।

दुःशासन अपन ज्येष्ठ भ्राता कँ प्रणाम कैलक, आज्ञानुसार द्रौपदीक पटोर कँ मुट्ठी मे कसि क' पकड़लक आ सराक सँ घीचि लेलक। पटोर खुजि क' नीचाँ खसि पड़लै। स्टेज पर द्रौपदी हरियर रंगक लंगोट पहिरने किंकर्त्तव्य विमूढ़ ठारि भ' गेलीह।

तमाशा देखनिहारक आँखि खुजलक खुजले रहि गेलै। सभक बकार कंठ मे अटकि गेलै। सभक आँखिक डिम्हा बाहर आबि गेलै। द्रौपदी कँ हरियर रंगक लंगोट पहिरने स्टेज पर ठाढ़ देखि बाँकी कलाकार अपन-अपन पाट बिसरि गेल। एकाएक दर्शक दीर्घा सँ हँसीक फुहारा एतेक जोर सँ बहरायल जे समूचा पंडाल काँपय लागल। सभ सँ पहिले चेतना जगलौ हारमोनियम मास्टर तशलीमक। ओ गला फाड़ि क' चिचिआयल—"पर्दा गिराओ।"

पर्दा उठबैक आ खसबैक काज पर छेदिया नियुक्त छल। ओकर कुकूर पीटरा हेरा गेल रहै। पछिला दू दिन-राति ओ कुकूर ताक' मे गामे-गाम बौआति रहल छल। ओकर गत्तर-गत्तर मे बातरस पैसि गेल रहै। औंघी अलगे ओकरा पछाड़ने छलै। ओ पर्दाक डोरी पकड़ने चुक्कीमाली बैसल छल। कनिएँ पहिने औंघीक तेहन ने झोँका ओकरा आयल रहै जे मुहे भरे खसल रहए। ओकर नाक थुरा गेल रहै। 'ठहर सार तोहर दवाइ करैत छी।' ओ अपन दोकानक असलका सरैसाक तमाकू निकाललक। चून मिला ओकरा मँही क' चुनौलक। खौनी कँ ओइल मुह मे रखलक आ निचलका गर्दा कँ दुनू नाकक पूड़ा मे सुड़कलक। नीन त' उड़ि गेलै मुदा ओकर नाकक भीतर पचहिया डँसि लेलकै। ओ नाकक दुनू पूड़ा के झाड़लक। ओकर आँखि पनिया गेल रहै आ नाकक दुनू पूड़ा डोका जकाँ फूलि गेल रहै। ठीक ताही काल 'पर्दा गिराओ, पर्दा गिराओ'क हल्ला भेल रहै। छेदिया कँ अपन काज मोन पड़लौ। हड़बड़ी मे ओ पर्दा खसबक बदला पर्दा उठबक डोरी कँ जोर-जोर सँ घीच' लागल। नाटकक सभटा बाँस चरमरा गेलै। एकटा बाँस पर

कृष्ण द्रौपदीक लाजक रक्षार्थ नुआक मोटरी लेने बैसल छलाह। संसारक बैलेन्सक मालिक कृष्ण अपन बेलैन्स कँ कन्ट्रोल मे राखि नहि सकलाह। ओ नुआक मोटरी नेनहि नीचाँ बैसल धृतराष्ट्रक कपार पर खसि पड़ला।

उखरिक बिचला भाग जकाँ धृतराष्ट्रक गरदनि घोकचि गेल। ओ दर्दे कराहि उठला। धृतराष्ट्र अपन मकुआ बनल गरदनि कँ सोझ कैलनि आ कृष्ण कँ मुकियाब' लगला।

कृष्णक ऊपर धृतराष्ट्रक मुक्काक प्रहार देखि दर्शक भय सँ आतंकित भ' गेल। आब पृथ्वी नहि बचतै, उलटन हेतै, प्रलय औतै, जगतक सोआमी कँ दुष्ट धृतराष्ट्र पीटि रहलइए पड़ाइ जाइ जो रौ।

दर्शक मे हरबिर्रो मचि गेल। सभटा मनुक्ख जहपटार भाग' लागल। ककर कपार पर के पयर देलकै, कोन मौगीक नूआ खुजिक' लतखुरदनि मे चुन्नी-चुन्नी भ' गेलै, ककर नेना कत' खसलै, ककरो की किछु होश रहलै? मात्र एक क्षण लेल प्रचण्ड हड़कम्प मचल रहल आ तखन दर्शक दीर्घा सून्न-मसान बनि गेल। जरैत पेट्रोमैक्सक सुसिआयब एवं स्टेज पर मूक बनल कलाकार कँ छोड़ि ओतय औरो कियो ने रहल।

नाटकक स्थान सँ पड़ाइत घड़ी सुरता चौपाल कँ मंगलीक माय सिनुरिया काकी पर नजरि पड़लै। ओ सिनुरिया काकी मे सटि ओकरा टोकारा देलक आ रस्ताक एक कात जतय अन्हार जकाँ रहै, ल' जा क' कहलक—भने भेटि गेलैं हएँ गइ सिनुरिया! हम तोरा काल्हिए सँ तकैत छलियौ।

सिनुरिया काकी कँ सुरताक गप्प सुनि आश्चर्य भेलै। भूआक चाटल मुनिगाक गाछ जकाँ झहरल सिनुरिया कँ आब कियो किएक तकतै? अन्हार गढ़गर रहै, तइयो सिनुरिया सुरता कँ देखि रहलि छलि। मोछक कोनो कथा, सुरताक भौंह तक पाकल रहै। तखन अहि मनसा कँ कोन एहन बेगरता भेलैए जे ओ सिनुरिया कँ ताकि रहल छल। पुरुषक लबरपना बुढ़ाड़ी तक कायमे रहैत छै की? सिनुरिया काकी किछु बाजल नहि, टुकुर-टुकुर सुरता दिस तकैत रहलि।

बात कँ बिना घुमौने-फिरौने सुरता सोझा-सोझी सिनुरिया सँ कहलक—हगे, एक राति लेल तोँ अपन बेटी मंगली कँ ललित मालिक लग पठा दहीन।

—की बाजि रहल छह हौ कमतिआ? एना बाजै मे तोरा कनिकबो लाज-संकोच नइँ होइत छह। नैहर सँ साधुपूरा एलियै, जवानी मे पापे टा केलियै, तोरा सनक मनसाक जी जुड़िलियौ, तकर फल भगवान दैए ने देलथि। अगते साँय मरि गेल, तीन-तीन गोट बेटीक पालन-पोषणक भार कपार पर पड़ि गेल। आब की ओहने पाप कर' लेल हम अपन बेटी कँ उकसबियै? नइँ हौ कमतिआ, एहन बात तोँ घुरियो

क’ नहि बाज’।

—सुन, हम बात बुझा क’ कहैत छियौ। अइ बेर ललित मालिक एकटा छौंड़ी केँ ल’ क’ गाम एलाए। हुनका संगे ओ छौंड़ी निधोख गाम मे घुमि-फिरि रहलैए। ओकरा ने लाज छै आ ने संकोच। मालिक बाबा दुख मे छथि। हुनकर नोन खेनिहार सभटा नोकर-चाकर सेहो दुख मे अछि। तोहर मझिली बेटी मंगली, जेना की लोक बजैए, देखै मे बड़ सुन्नरि, अकाशक अप्सरा छै। मंगलीक भोग क’ ललित मालिक केँ ओहि शहरी छुछनरिया सँ मोहभंग भ’ जेतनि। तखन समय ताकि हुनक अपन जाति-समाज मे नीक ठाम सुन्नरि कनियाँ सँ हुनकर बिआह क’ देल जेतनि। हम सभ ललित मालिकक रोगक निदान अही तरहेँ तकलहुँए। देवानजी सेहो मंगलीबला उपचार केँ स्वीकार केलनिए। मालिक बाबाक उपकार समूचा गाम पर छै, तोरो पर छौक। तखन हुनकर चिंता केँ कम करब हमर-तोहर कर्तव्य बनैए ने! तँ मंगली बला विचार तोरा देलिऔए। आब बाज, तोँ की बजैत छएँ?

सिनुरिया काकी ठोर पर आंगुर रखैत बाजलि—मंगली पछिला चारि बरख सँ हीरा मौसीक टहल-टिकोरा बला काज करैए। मंगली एकदमे सँ बदलि गेलए। आब त’ ओ किताबो पढ़ि लैए। मंगली हमर बात किन्नहुने मानत। बेसी जोर देबै ने त’ लौंगिया मिरचाइ हमर ठोर पर मलि देत। नइँ हौ कमतिआ, मंगली लग हमर बोल नहिए टा फुटत।

सुरता दालि मे घी ढारैत बाजल—दिआवाती पाबनि सँ पहिने देवानजी बही-खाताक तेरीज करैत छथिन। ताही तेरीज बला काज सँ हम सभ जनलौहएँ जे तोरा ऊपर सवा दू मन धानक उधारी एखनहुँ पड़ले छैक। जँ तोँ मंगली केँ तौयार क’ लेबएं त’ पछिला सबाइक माँफी भेटिए जेतौ, ऊपर सँ एक मन, हे, दू मन अन्न सेहो हम दिआ देबौ। हम पहिने सँ सभ बात सोचि क’ राखि लेने छी। तोँ सस्ते मे सभ बात मानै बाली नहि छँ। हगै सिनुरिया, तोँ काल्हिए बोनि देब’ काल बोरा ल’ क’ अबिहेएँ। हमही ने बौनि तौले छी। हम तोरा दू मन धान तौलि देबौ। देवान जी ठोरो ने पटपटौथुन्ह, तकर पक्का विश्वास हम तोरा दैत छियौ।

सिनुरिया काकी सोच मे पड़ि गेलि। एतेकटा लोभ? अहि लोभ सँ मुह मोड़नाइ ओकरा लेल संभव नहि छल। तथापि ओकर बकार फुटि नहि रहल छलै।

सुरताक धैर्य जवाब दिअ लगलै। ओ अगुताइत बाजल—हगै सिनुरिया, साफ-साफ सुनि ले। तोरा अकाश माथ पर उठबै लेल नहि कहैत छियौ जे तोँ एहन क’ क’ घोना पसारने छएँ। बस एक रातुक बात भेलै, तँ तोँ अधिक लोभ नहि कर। मालिक बाबाक उपकार कैला सँ धर्मे हेतो। एगो औरो बात सुनि ले। रहबाक छौ अही गाम

मे, तखन बेसी नाकर-नुकर करबै त’ धैल जेबएँ।

सिनुरिया काकी लग नकारैक कोनो टा रस्ता नहि बचलै। सही मे ओकरा अही गाम मे रहबाक छलै। तखन मालिक बाबाक देवान, कमतिआ आ चरबाह सँ बैर मोल ल’ क’ ओ कते दिन रहि सकैत छलि? ऊपर सँ लोभक मोटरी मे लगभग चारि मन अन्नक ओजन। सिनुरिया काकी मुह खोललक–एना हड़बड़ा क’ हमरा पर लांछना नहि लगाब’ हौ कमतिआ! हम सभ दिन तोरा सबहक पयरे तर रहलहुँए आ आगुओ रहबे करब। तोँ जेना कहलहकए तहिना हम मंगली कँ बुझा क’ कहबै। छौंड़ी आइ तक हमर कोनो बात नहि कटलकए।

4.

साधुपूरा गामक लोक राति मे अबेर तक नाटक देखने छल। मुदा तँ की? किरण फुटितहिं सभ जागि क' अपन-अपन काज मे लागि गेल छल। ककरो मिनट भरिक फुरसति नहि, किएक त' आइ दियाबाती पावनिक दिन रहै। घर-आँगन नीपल-पोतल भ' चुकल छलैक। एखन सभ टेमी बाँटत, चुक्का-दीप मे तेल भरत, संठी मे सोन लपेटि क' लुक्का बनाओत आ अपन-अपन सामर्थ्यक मोताबिक पूड़ी-पकवान बनबइ मे लागि जायत।

मुदा बचकुन कँ अहि तरहक कोनो काज नइ रहै। ओ नाटक मे व्यवहार भेल वस्तु जेना पेट्रोमैक्स, ड्रेस, पर्दा आदि गामक छौंड़ाक मदतिए राति मे सीक-पटै पर उघिक' पीड़ापुर मे अपन दोकान पर ल' अनने छल। नाटकक स्थान पर बाँसक ठट्ठर आ अखड़ा चौकी छोड़ि किछुओ ने छलैक। सभटा बाँस मालिक बाबाक बँसबारि सँ आयल रहै जे आब गामक लोक मे जरूरति मोताबिक बाँटल जेतै। बाढ़ि मे नोकसान भेल घरक चार कँ फेर सँ ठाढ़ कयल जेतै। मालिक बाबा दिस सँ सभ कँ बाँस, खढ़, खरही आ पतहर मुफ्त मे देल जाइत छै। अइ काजक भार बड़का कमतिआ कारी मंडलक छनि। ओ एखन अखड़ा चौकी पर बैसि गेल होयताह। लोक हुनका घेरने अपन-अपन दुखड़ा सुनबैत हेतनि।

पीड़ापुर मे बचकुन अपन दोकान मे निशभेर सुतल छल। जेना एलार्म बाजल होइ, ओ हड़बड़ा क' उठल। भोर भ' गेल रहै। हीरा मौसी लेल बाहर सँ आयल तीन गोट कार्टून ओकरा एखने पहुँचैबाक छैक। कार्टून कत' सँ एलैए? के कहत? भ' सकैए हुनकर नैहर सँ आयल होनि? किछु निस्तुकी जवाब देब मुश्किले अछि। कार्टून मे छै की? आब लिअ, एकर जानकारी बचकुन कँ कोना हेतैक? पछिला चारि वर्ख सँ महिना, दू महिना पर आयल अइ तरहक कार्टून कँ सुरक्षित एवं साबुत ओ हीरा मौसीक दूरा पर पहुँचबैए। बचकुन सँ पहिने ई काज कियो आन करैत छल। नाकर-नुकुर केलाक बादो बचकुन कँ हीरा मौसी सँ पारिश्रमिक लेब' पड़ैत छै।

साइकिल पर कार्टून टँगने बचकुन मौसीक दलान पर पहुँचल। सुनसान दलानक एक कोन मे मंगली बैसलि छलि आ ओकर आँखि सँ नोरक धार बहि रहल छलै।

की भेलैए मंगली कैँ? काल्हि राति मे ओ गंगाक संगे छलि आ संसारक सभटा खुशी कैँ आँचर मे समेटने आनन्दे मगन छलि। तखन भ' की गेलै? बचकुन अपन दोस्त गंगाक प्रियतमा मंगली कैँ कनैत देखि व्याकुल भ' गेल। ओ मंगली सँ पूछ' चाहलक, मुदा ठीक ताही काल आँगन दिस सँ मौसी ओतए पहुँचि गेलीह।

मौसी सेहो मंगली कैँ हिचुकैत देखलनि। बड़ी काल सँ कनैत रहलाक कारणे मंगलीक चेहरा भहरि गेल रहै। मौसीक झूर्री पड़ल मुखमंडल पर खिचाब उत्पन्न भ' गेलनि। ओहि खिचाब मे बहुत तरहक भावक उदय-अस्त होइत रहल आ अन्त मे एकटा प्रश्न-चिह्न बनि गेल। मौसीक चेहरा पर बनल प्रश्न-चिह्न मे बचकुन क्रोधक लपट देखलक। ओकरा भय भेलै। ओ साइकिल सँ कार्टून उतारि दलान पर रखलक आ चोट्टहि बिदा भ' गेल। मौसी मंगली सँ पुछलनि—की भेलौए? ककर अपराध केलहिनएँ जे तोरा दंड भेटलौए? एना कनैत किएक छैँ?

बिना कोनो जवाब देने मंगली भोकारि पाड़ि क' कानए लगलि। मंगलीक हाथ पकड़ि मौसी ओकरा आँगन ल' गेलीह। तुलसीचौरा लग दुनू नीचाँ माटि पर बैसि गेलीह। कनेकाल तक मंगली कनिते रहल। फेर ओकर कानब बन्द भेलै। तकरबाद ओ अपन कनबाक कारण मौसी कैँ कहलक।

कखनहुँ काल साधारणो बात बिखक काज करैत अछि। मुदा एखन त' मंगलीक संग एहन बात भेल रहै जाहि सँ ओकर संसारे चकनाचूर भ' गेल छलै। ओकर माय ओकरा कहने रहै—नीक नूआ-आँगी पहिरि ले, ककबा सँ झोटा कैँ सीटिले, कने-मने पाउडर-स्नो सेहो लगा ले आ ललित मालिक लग चलि जो। ओ तोहर भोग करथुन। सभक कहब छैक जे तोहर भोग कइए क' ओ अपन संग मे आनल छौंड़ीक माया सँ मुक्ति पाबि सकैत छथि। मालिक बाबाक परिवारक उपकार करब धरमक काज भेलै ने? ओहुना एहने काज कर' लेल भगवान हमरा-तोरा धरती पर पठबैत छथिन।

मंगलीक हिचुकैत अपन मायक फरमाइश द' मौसी कैँ सुना देलक। मंगलीक बात सुनि मौसी सन्न भ' गेलीह। नारी जातिक सभ सँ पैघ अपमान। अहि तरहक अपमान कैँ सहब मौसी लेल संभव नहि छलनि। मुदा दीर्घ जीवनक विशाल अनुभव हुनक संगे छल। ओ अपन रंज पर अधिकार केलनि आ सोचब शुरू कैलनि। एना किएक भेलै? शीघ्रे एक प्रकारक संशय हुनक सोचक परिधि मे आबि गेल। ओ सुनने रहथि जे अइ बेर ललित यादव अपन कोनो नारी-मित्र संग गाम आयलए। ठक्कन यादवक नोकर-चाकर, जे अपन मालिक मे पूर्णतरू समर्पित अछि, तकरा सभ कैँ स्वाभाविके चिन्ता भेल हेतै। नारी-मित्रक अर्थ एतय एकहि टा बात सँ होइत छै। ललितक खुल्लम-खुल्ला अनैतिक प्रदर्शन भृत्य समुदाय लेल पचेबा मे मुश्किल

भेल हेतै। तँ समस्याक परिमार्जन लेल सभ मिलि क' रस्ता तकने होयत। बिख सँ बिख एवं काँट सँ काँटक उपचार होइत अछि। रस्ता भेटलैक मंगलीक रूपक मादकता कैँ ललित लग पहुँचा हुनका संग आयल छौंड़ी सँ हुनकर मोह भंग करब। हँ, हँ, इहे बात भेल हेतै। सभटा नोकर मिलि क' सिनुरिया कैँ लोभ देने हेतै आ भय देखौने हेतै। तँ सिनुरिया बाध्य भ' क' मंगली कैँ अहि तरहक दुष्कर्म कर' लेल कहने हेतै।

मौसी कनेकाल तक मंगलीक विपत्ति पर विचार करैत रहलीह तखन कहलनि—हम ठक्कन परिवारक प्रत्येक सदस्यक स्वभाव सँ परिचित छी। ललित कैँ हम ओकर जन्महिकाल सँ जनैत छियैक। ललितक चरित्र धवल छैक। अहि तरहक निर्लज्जता बला काज गगन यादवक भ' सकैत अछि मुदा ललित कथमपि ने करत। मंगली तोँ कानब बन्द कर। हमरा रहैत तोहर अनिष्ट नहि हेतौ।

मंगली कैँ मौसीक दया भेटलै। मंगली सबुर कैलक आ आँखिक नोर पोछलक। तखने मौसी ओकरा सँ एक गोट सोझ प्रश्न पुछलनि—सुनलहुँ अछि जे गंगा तोरा मे सटल रहैत छौ? तहूँ ओकरा मे लेपटायल रहैत छँ? की ई छौंड़ा-छौंड़ी बला खेल नीक बात भेलै?

—मौसी, अहाँ जे बात बुझै छियै से बात नइ छै।

—तखन केहन बात छै? तोरा दुनूक बीच की प्रेमबला बात छौ? एहन प्रेमबला बात अइ इलाका मे नइ होइत छै। एतुक्का लोक स्वभाव सँ डरपोक होइए। प्रेमक मार्ग वलिदानक मार्ग थिकै। एतय प्रेमक स्वांग रचल जा सकैत अछि मुदा आचरण नहि कयल जा सकैत अछि। असली प्रेमक परिणति भेल बिआह। की गंगा तोरा संग बिआह करतौ? तोहर जीवनक भार उठौतौ?

—हँ मौसी, हँ। गंगा हमरा संग बिआह करतै। हमरा दुनूक बियाह हेबेटा करतै, कियो ने रोकि सकैत छै। हमरा दुनूक बिआह रोकै लेल जँ भगवानो आबि जेथिन त' हुनको निरास भ' आपस जाए पड़तनि।

मंगलीक स्पष्ट जवाब सुनि हीरा मौसी सम्मोहित भ' गेलीह। थोड़बे समय लेल सही, मौसीक उद्यानक सभटा फूलक सुगन्धि समटि क' अपन सौभाग्य पसारि देलक। जेना मौसीक बीतल जीवनक किछु प्रसंग प्रत्यक्ष भ' गेल होनि तेना ओ एकाएक संवेदनशील बनि गेलीह। मंगलीक ठोर सँ निकलल शब्द मे एहन ध्वनि भरल छलै जे प्रेमी-प्रेमिकाक कठोर निश्चयक परिचायक होइत अछि। सत्ये, प्रेम कर' बला जीवनक हिसाब-किताब सँ मुक्त होइए। प्रेमक डगर पर चलनिहार कैँ भविष्यक चिंता होइते ने छैक।

मंगली मौसीक आँखि मे गहींर तक तकैत बाजलि—मौसी, हमर आ गंगाक जँ बिआह नहि हेतै त' भ' सकैए हम जीवित रहियो जाइ, मुदा गंगाक प्राण नहिए टा बचतै। गंगा त' आब हमर देवता छियै ने! हम अपन देवताक प्राण बचबै लेल किछुओ क' सकैत छी। अपन सुख, अपन मनोरथ आ की अपन देह कैँ डाहियो सकैत छी।

मंगलीक बाजब मे विश्वास चरम पर पहुँचि गेल रहै। ओतय तर्कक कनिकबो गुंजाइस नहि छलै। मौसी मंगलीक एखुनका अद्भुत रूप कैँ देखलनि। ओकर नव स्वभाव, नव रुचि एवं नव आत्मविश्वासक परिचय प्राप्त कैलनि।

मंगली बजिते रहलि—मौसी, अइ मे हमर दोख नहिए। सभटा बात अपने सँ होइत गेलैए। आब मंगली गंगाक बिना जीवित नइ रहतै। गंगा मंगलीक माथक सेनूर, गंगा मंगलीक जिनगीक मालिक। आब मंगलीक खिस्सा एतबेटा।

समर्पित मंगली मौसीक पयर पकड़ि लेलक आ नोरे-झोरे कान' लागलि। मंगलीक नोर सँ मौसीक पयर धोआइत रहल। मौसीक चेहरा पर पीड़ाक कुहेस पसरि गेलनि। एक क्षणक लेल हुनक दीर्घ जीवनक पाकल अनुभव हुनका भ्रमित क' देलकनि। ओ मंगलीक प्रेमक खिस्सा सुनि ओकर एवं गंगाक अन्हार भेल भविष्य कैँ प्रत्यक्ष देख' लगलीह।

मंगली आ गंगाक प्रेम जँ तत्काल वासनाक पूर्ति लेल भेल होअय त' विशेष चिंताक गप्प नहि छल। अइ तरहक प्रचलन कम आ वेशी समग्र संसार मे होइत रहलैए आ होइते रहतै। पूर्णिमाक राति चन्द्रमाक सान्निध्य पाबि समुद्रक लहरि मे उछाल हेबै करतैक। मुदा जँ एकर सभक प्रेम नैसर्गिक होइ, गंगाक जल सदृश पवित्र होइ अथवा अनेक जन्मक बिछुड़ल दू आत्माक मिलन होइ तखन त' अहि प्रेम कैँ अनमोले कहल जेतै। मुदा अहि अनमोल प्रेमक भविष्य की हेतै?

एतुक्का जीवन पद्धति मे मंगली आ गंगाक प्रेम चिंताक बात अबस्से छल। चिंताक कारण जे धरतीक अहि भागक मनुक्ख धर्म, जाति एवं समाजक कानून सँ अपना कैँ गछाड़ि लेने अछि। सभ तरहक बंधन एतुक्का लोकक शोणित मे समा चुकल छैक। रूढ़िवादिता एवं परम्पराक निर्वहन करैत-करैत सभक बीच एक विराट अहम कायम भ' चुकल छै। ओहि अहम् कैँ खुट्टा बना कोल्हुक बड़द जकाँ ओकर चक्कर कटैत-कटैत सभ अपन आयु कैँ खुशी-खुशी शेष क' लैत अछि। अहि तरहक अहम् स्वच्छ एवं स्वतंत्र विचारक विरोधी होइत अछि। प्रेमी कैँ कष्ट देबा मे, प्रताड़ित करबा मे एहन अहम् कैँ अपार हर्ष एवं तृप्ति भेटैत छैक। हे ईश्वर! मंगली आ गंगाक अलग-अलग जाति आ जातिक बंधन की एकरा दुनू कैँ जीवित रह' देतै?

एकाएक हीरा मौसीक समक्ष ठक्कन यादवक शांत छवि आबि गेलै। मानलहुँ जे ओ अपन पौत्र गंगा सँ अत्यधिक स्नेह करैत छथि। परोपकार मे अपन समस्त सुख कैँ आहुति क’ देनिहार ठक्कन की गंगा आ मंगलीक विवाह कैँ स्वीकार क’ सकैत छथि? की अहि तरह विवाह सँ हुनक परिवार, परिवारक मर्यादा खंड-खंड मे टुटि नहि जेतनि? हीरा मौसीक प्रबल इच्छा भेलनि जे ओ चिचिया-चिचिया क’ बाजथि—हगै मंगली, तौँ ई की केलएँ?

मुदा तकर समय बीति चुकल छलै। मंगली आ गंगाक प्रेमक प्रतिरोध विद्रोहक जन्मे टा देतै। कोनो अनहोनी बात भ’ क’ रहतै। ओहुना मंगली मौसीक शरण मे आबि गेल छलि। मौसी सेहो एक तरहेँ ओकरा अभयदान द’ चुकल छलथिन। तखन त’ किछु कर’ पड़तै ने? हीरा मौसीक झुर्री पड़ल चेहरा कठोर भ’ गेलनि, आँखि स्थिर भ’ गेलनि। स्पष्ट जकाँ अभास होब’ लागल जे मंगलीक मदति कर’ पड़तै त’ ओ अबस्से करथिन।

लगभग एक घंटाक बाद मंगली मौसीक आवास सँ बाहर आयलि। नवकी पोखरिक पक्का घाट एवं राधे-कृष्ण मंदिरक बीच सड़क छल। ओही सड़क पर मंगली चलल आबि रहलि छलि। घाट पर मटरा बैसल छल। ओकरा कन्हा पर मालिक बाबाक पखारल धोती रहै। एखन मालिक बाबा मंदिर मे पूजा क’ रहल छलाह। मंगली मटराक समीप आबि क’ कहलक—मटर काका, आइ हीरा मौसी मालीक बाबा सँ भेट नइ करथिन। ई समाद अहाँ मालिक बाबा कैँ कहि देबनि।

मंगली समाद कहि क’ चल गेलि। कनिएँ कालक बाद मालिक बाबा मंदिर सँ बाहर अयलाह। नियमानुसार आब ओ हीरा मौसी सँ भेट कर’ लेल जेताह। आगू बढ़ि मटरा हुनका मंगलीक कहल समाद पहुँचौलक—मौसी कहा पठौलनि अछि जे आइ ओ अहाँ सँ भेँट नहि करतीह।

—किएक?

मालिक बाबाक प्रश्नक उत्तर ताक’ लेल मटरा ओमहर तकलक जेमहर मंगली गेल छलि। मंगली चल गेलि रहए। मटरा कैँ मालिक बाबाक प्रश्नक जवाब नहि भेटलै। ओ चुप भेल ठाढ़े रहल। ठक्कन यादव हतप्रभ भेल बजला—पछिला लगभग पचास-पचपन बर्ख मे एना त’ कहियो ने भेल छल। ई त’ अपशकुनक संकेत जकाँ बुझि पड़ैत अछि। सब दिन होत ने एक समाना।

ठक्कन यादव कैँ जवाब के दितनि? प्रायः हुनका जवाबक अपेक्षो नहि रहलनि। संशयक मोटरी लदने अन्यमनस्क भेल ओ अपन आवास दिस डेग उठौलनि। हुनका पाछाँ-पाछाँ मटरा चल’ लागल।

एमहर मंगली मालिक बाबाक आँगन मे पयर देलक। बड़ीटा आँगन, नीपल-पोतल। पछबरपिया दुआरि पर मालिक बाबाक दुनू विधवा पुतहु पावनिक पकवान बनब' मे व्यस्त छलीह। शुद्ध देशी घीक गमक आन-आन किस्मक गंधक कंठ दबने छल। बीच आँगन मे तीर खुनल रहै। चुल्हा लग दू गोट हलुआइ आ तकर चारि गोट मदति केनिहार नोकर। बुनियाँ छानल जा रहल छल। लड्डू बनतै, दियाबातीक राति मे गामक लोक मे बाँटल जेतै। भरल-भरल छिट्टा मे बुनियाँ पाँती सँ पसरल छल।

उतरबरिया दुआरि पर पटिया ओछाओल रहै। एक पटिया पर पल्लवी गर्ग पट सुतलि लेख लिख' मे तल्लीन छलीह। दोसर पटिया पर ललित एवं हुनक भौजी पार्वती बैसलि गप्प-सप्प मे निमग्न। मंगली कनडेरिए आँखिए चारूकात तकलक, गंगा निपत्ता छल। एखन गंगा अपन छौंड़ा मंडलीक संगे अखाड़ा लग अपन अड्डा पर हैत, ओकरा आँगन मे ताकब फजूल।

मंगली चलि क' ललित एवं पार्वतीक पटिया लग पहुँचलि आ ओलतिए सँ समाद कहलक—हीरा मौसी ललित मालिक कैँ भेट कर' लेल बजौलखिन हएँ। हम सैह समाद कह' लेल ऐलहुँ अछि।

ककरो-ककरो बाजब बड़ मीठ होइत छै। सुन'बलाक कान मे जलतरंग बाजए लगैत छै। मंगलीक देह सँ क्योड़ा इत्रक सुगंधि पसरि रहल छल। पल्लवीक नाक मे अद्‌भुत सुगंधि आ कान मे झुनझुन बला ध्वनि पहुँचल। ओ लिखब छोड़ि सोझा भेलीह आ मूड़ी घुमा मंगली दिस तकलनि। मंगलीक सौन्दर्यक छटा एहन छल जेना आकाश सँ कोनो परी उतरल होअए। एखुनका मंगलीक रूपक मादकता एवं शृंगारक वर्णन कालिदासे टा क' सकैत छलाह। हरियर कंचन कांजीभरम बरहत्था साड़ी मंगली पहिरने छलि। साड़ी मे सोन तागक बुट्टा रहै। ओकर चौरगर पाढ़ि मे काढ़ल पाँखि फलकौने मयूरक छप्पा आँखि कैँ आकर्षित करैत छल। तेहने रेशम-ताग सँ बुनल हरियर रंगक आँगी, विभिन्न तरहक किलीप सँ गाँथल आ पीठ पर छिड़िआयल माथक केश, गोरकी चेहरा पर पोतल बादामी रंगक पाउडर सँ हिलैत गाल परक लालिमा, सुरमा दुआरे पनिआयल आँखि आ सभ सँ अधिक अनमोल मंगलीक गला मे उज्जर रंगक मोतीक माला। सभ किछु अवर्णनीय छल। पल्लवी कैँ आश्चर्यो भेलनि आ नीको लगलनि।

साधुपूरा सनक पिछड़ल गाम मे मंगलीक सौन्दर्यक गरिमा देखि पल्लवी कैँ अचम्भित होयब स्वाभाविके छल। ओ अपन पत्रकारिताक लेख निमित्ते विभिन्न जाति-समुदायक आँगन मे गेलि छलीह। उखौरि-समाठ, माटि सँ बनल कोठी, खजूर पातक पटिया, अर्द्धनग्न नेना-भुटका, सेरायल चूल्हि पर राखल टिनही छिपली,

कुहरैत रोगी, गरीबीक पराकाष्ठा पर पहुँचल मनुक्खक काया, सभ किछु पल्लवी देखने छलीह। मुदा एखन सौन्दर्यक प्रतिमा मंगलीक रूप-सज्जा एवं कीमती वस्त्र देखि पल्लवी दुविधा मे पड़ि गेलीह। ओ अपन पत्रकारिताक लेख मे की लिखतीह से हुनका बुझ' मे आबिए ने रहल छलनि। निरुपाय पल्लवी पार्वती दिस तकलनि।

पार्वती आँखि चिआरि क' मंगली कैँ देखि रहल छलीह। मंगलीक रूपक सजाबटि देखि हुनका इर्खा भेल होनि से बात सत्य नहि छल। इर्खा, द्वेष, घृणा आदि दुर्गुण सँ पार्वती कोसो दूर छलीह। हुनकर स्वभाव कोमल आ मधुर छल। हुनक असल चिंता अपन दिअर गंगाक भविष्य ल' क' छल। पहिनहि सँ ओ बहुत किछु सुनने छलीह। एखन सद्यः मंगली कैँ देखि रहलि छलीह। एखुनका मंगलीक वस्त्र, गहना एवं प्रसाधन अबस्से हीरा मौसी द्वारा निर्मित भेल होयत। मुदा से किएक? तकर प्रयोजन किएक भेलै। सम्पूर्ण गामक मालिक ठक्कन यादव। ठक्कन यादवक पूज्या हीरा मौसी। हीरा मौसीक खवासिन मंगली। मंगलीक प्रेमी गंगा। मंगलीक सौन्दर्य सँ टपकैत हीरा मौसीक उद्‌गार। ई सभटा कोन बातक इशारा छल? पार्वती भय सँ सिहरि उठलीह। बिहाड़ि ऐबा सँ पहिने वातावरण शान्त भ' जाइत छै। शान्त भेल वातावरणक बाद उठल प्रचण्ड बिहाड़ि आ तकर प्रकोप कतेक भयावह होइत छै, तकर कल्पना क' पार्वती काँपय लगलीह।

पल्लवी कैँ अपना दिस तकैत देखि पार्वती हुनका मंगलीक परिचय देलनि— ई छौंड़ी बुधुआ चमारक बेटी थिक। एकर नाम छै मंगली। ई हीरा मौसीक टहल-टिकोरा करैए।

बुधुआ चमार कैँ मरना कइएक बर्ख भ' चुकल रहै। एखन मंगली कैँ लोक सिनुरिया काकीक मझिली बेटी कहि सोर पाड़ैत छलै। मुदा पार्वती एखन लोहछल छलीह। तैँ ओ मंगलीक परिचय ओकर मरलाहा बापक नाम ल'क' देलनि। पार्वती कैँ गंगाक चिंता छलनि। गंगा कोमल मुदा जिद्दी स्वभावक छल। गंगा जँ मंगली कैँ पसिन्न करैए त' कियो ओकरा बदलि नहि सकैत अछि। मुदा तकर परिणाम की हेतै? अपन स्वामी गगन यादव द्वारा परित्यकता भेलि पार्वती सम्प्रति ठक्कन यादवक परिवारक गार्जियन छलीह। परिवारक नीक-बेजाय सोचब हुनके जिम्मा छल। हुनका मंगली आ गंगाक निकट एकदमे सँ सोहाइत नहि छलनि। यादव परिवारक यश-प्रतिष्ठाक सवाल छलै। पार्वती एखन मंगलीक सजल रूप कैँ देखि ओकरा फज्जति करितथि, ओकर श्रृंगार पर अगाँर ढारितथि, मुदा पल्लवीक सोझाँ मे ओ किछुओ ने क' सकैत छलीह। मात्र अपन मोनक खौंझ निकाल' लेल पार्वती मंगली कैँ बुधुआ चमारक बेटी कहिक' परिचय देने छलीह।

ललितक स्वभाव मे संवेदनाक पूर्ण अभाव छल। पाथरक उपर सँ कतबो ने जल बहि जाउक मुदा पाथर पाथरे रहत। ललित कैँ मंगलीक रूप मे कोनो टा आकर्षण नहि भेटलनि। ओ मंगली सँ पुछलनि—की मौसी एखने आब' लेल कहलनि अछि?

मंगली अलता सँ रंगल अपन पयरक नह मे नजरि टिकौने चुपचाप ठाढ़ि छलि, जवाब देलक—हँ, एखने हिनका मौसी आब' लेल कहलखिनहएँ।

ललित अंग्रेजी भाषा मे पल्लवी सँ कहलनि—मौसी सँ भेट कर' लेल अहूँ चलू ने!

पल्लवी साधुपूरा गामक बहुतो महिला सँ भेट क' चुकल छलीह। ओहने एक आओर महिला सँ भेट करक हुनकर कनिकबो इच्छा नहि छलनि। पल्लवी कैँ अपन पत्रकारिता सम्बन्धी लेख लेल बहुतो सामग्रीक संग्रह भ' चुकल छलनि। ओ शीघ्रातिशीघ्र अपन शोध विषयक लेख कैँ पूर्ण कर' चाहैत छलीह, कारण दू दिनक बाद हुनक प्रस्थानक तिथि निश्चित छल। पल्लवी अपन असमर्थता बतौलनि।

ललित फेर सँ आग्रह करैत कहलखिन—यद्यपि हीरा मौसी अही गामक छथि आ हमर जन्मक पहिने सँ एतुक्का मौसी बनि रहैत छथि। मुदा आइ तक ने हम हुनका सँ गप्प-सप्प कयने छी आ ने हुनकर आवासक भीतरे गेल छी। मौसीक जानकारी हमरा नहिएक बरोबरि अछि। एखन ओ हमरा किएक बजौलनि अछि तकरा द' हमरा किछुओ ने बुझल अछि। मुदा हमरा जे अनका मुहे सुनल अछि ताहि हिसाबेँ हीरा मौसी भिन्न तरहक महिला छथि। हमर बाबा हुनकर बुहत आदर करैत छथिन। पल्लवी, हमर मोन करैत अछि जे हीरा मौसी सँ भेट क' अहाँ कैँ अपन लेख लेल आरो मशाला भेटि जायत, अहाँ कैँ अबस्से लाभ होयत।

पल्लवी अपन भारी-भरकम झोड़ा कन्हा पर टँगलनि आ ललितक संग बिदा भेलीह।

हीरा मौसी अपन घरक दलान पर प्रतीक्षा मे ठाढ़ि छलीह। ललितक संग शहर सँ आयलि युवती कैँ अबौत देखि ओ असमंजस मे आबि गेलीह। एखन ओ ललित सँ एसगर मे भेट कर' चाहैत छलीह। मंगली एवं गंगाक समस्या छोट नहि छल। ललित शहर मे पढ़ैत छलाह आ मेघावी छात्र छलाह। सम्भावना रहैक जे ललितक विचार युगक अनुसार परम्परा सँ अलग परिमार्जित होनि। तेँ हुनका सँ भेट करबाक इच्छा मौसीक मोन मे जागृत भेल छलनि।

मौसी कैँ अपना ऊपर पूर्ण अधिकार छलनि। पल्लवी कैँ देखि हुनक तारतम्यबला मनोदशा शीघ्रे बदलि गेलनि। ओ हाथ उठा आगत अतिथि कैँ स्वागत करैत बजलीह—अहाँ दुनू कैँ देखि हम आनन्दित भेलहुँ अछि। आउ, हमरा संगे भीतर आउ।

मौसी कैँ देखतहि पल्लवी भौंचक रहि गेलीह। साधुपूरा गामक आन-आन महिला

सँ बिपरीत मौसीक गोरांग शरीर, रेशमी साड़ी, उज्जर केश, स्थिर नीलवर्ण आँखि, अति वृद्धा होइतहुँ चेहरा पर पसरल अलौकिक ज्योति देखि पल्लवी एतेक ने प्रभावित भेलीह जे एक क्षण लेल ओ अपन नाम तक बिसरि गेलीह। पल्लवी केँ हीरा मौसी उच्च कोटिक साधिका सनक लगलथिन। साधुपूरा सनक पिछड़ल गाँव मे मौसी कत' सँ अयलीह? ई एतय की करैत छथि? पल्लवी सचेत भ' गेलीह।

दलान सँ भीतर जेबा लेल दरबज्जा। विभिन्न तरहक फूल एवं केकटस सँ सजल गमला। लगभग एक कट्ठा मे पसरल फुलबाड़ी। फुलबाड़ीक दक्षिण-पश्चिम कोन मे तुलसीचौरा। तुलसी गाछक जड़ि मे जरैत धूप-दीप। सजाओल फुलबाड़ीक नयनाभिराम दृश्य पल्लवीक मोन केँ पुलकित क' देलक।

फुलवाड़ीक सटल दक्षिण मे एकटा आओर छोट सन दलान। दलानक पाछाँ दरबज्जा आ तकर भीतर मौसीक ड्रांइग-रूम। कुर्सी-सोफा आदि किछु नहि। शंखमर्मरी फर्स पर देबाल सँ देबाल तक बिछौल तोसक। तोसक उज्जर जाजिम सँ झाँपल। काते-कात राखल चौखुट मोलायम तकिया। मौसी बैसलीह आ अपन अतिथि केँ बैसेलनि। कनेकाल तक शांति रहल। वार्तालाप मौसी आरम्भ कैलनि– ललित, अहाँ गाम अएलहुँ आ अहाँ संग एक गोट संगिनी एलीहए, ततबा जानकारी हमरा अहाँक बाबा सँ प्राप्त भ' चुकल अछि। तथापि हम हिनकर वृहत परिचय पाबि प्रसन्न होयब।

जवाब मे ललित पल्लवीक पूर्ण परिचय देलनि, खास क' साधुपूरा सनक गाम मे ऐबाक प्रयोजन द' कहलनि। अपन कथन केँ समाप्त करैत ललित कहलनि– अपन देश मे सभ तरहक विकास भेलैए। प्रगति संगे ग्राम्य जीवनक स्वरूप मे सेहो परिवर्तन भेलैए। कारण जे हौउक, मुदा साधुपूरा गाँव एखनो प्राचीन गाम्य जीवनक मूल स्वरूप मे अवस्थित अछि। पल्लवी केँ ग्राम्य जीवनक आत्मा सँ स्पर्श होनि, तेँ हिनका हम आग्रह क' एतय अनलियनिए। गामक बहुत किछु पल्लवी देखि चुकलीहेएँ आ तकर नोट अपन लेख लेल तैयारो क' लेलनि छथि।

ललितक बाजब समाप्त भेला पर मौसी बजलीह–पल्लवीक पाठ्य विषय पत्रकारिता छनि से जानि क' हमरा नीक लागलए। एखन हम सभ स्थानीय भाषा अर्थात मैथिली भाषा मे गप्प-सप्प क' रहल छी। हम स्पष्ट देखि रहल छी जे अहि भाषा केँ बाज' मे आ की बूझ' मे पल्लवी केँ कष्ट भ' रहलनिए। ललित, अहाँक पाठ्य विषय इतिहास आ हिनक पत्रकारिता, दुनूक पढ़ाइ हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषामे होइत हैत। की हर्ज, एखुनका वार्तालाप हम सभ हिन्दी अथवा अंग्रेजी मे करी?

ललित तुरंत जवाब देलनि—अहाँक कहब सत्य छै मौसी! यद्यपि हिन्दी सेहो मान्य छैक मुदा सभटा पढ़ाइ-लिखाइ एवं परीक्षा अंग्रेजीए मे होएत छै। जँ हमर सभक गप्प-सप्प अंग्रेजी भाषा मे हैत त' पल्लवी कँ अवस्से सुभीता हेतनि।

पल्लवी मौसीक अनुपम व्यक्तित्व सँ अत्यधिक प्रभावित छलीह। ओ एकटक मौसी कँ निहारि रहल छलीह। हुनक मोन मे बिहाड़ि बहि रहल छल। पल्लवी मैथिली भाषा बाजि नहि सकैत छलीह मुदा ललितक जवाब कँ ओ नीक जकाँ बुझि रहल छलीह। वार्तालाप जँ हिन्दी मे होइत त' अधिक सुभितगर होइतहि। मुदा ललित अंग्रेजी भाषा कँ अनुमोदन कैलनि तकरा लेल पल्लवी कँ आश्चर्य भ' रहल छलनि। ललितक मोन मे स्थापित संस्कार पोस्ट ग्रेजुएक पढ़ाइक अहम्, अंग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकारक घमंड अथवा मौसी कँ प्रताड़ित करक अवसर, कारण जे होइक, पल्लवी कँ भ्रम जकाँ भेलनि। ओ चुप्पे रहलीह।

पल्लवी दिस तकैत हीरा मौसी शुद्ध एवं धारा प्रवाह अँग्रेजी भाषा मे बाजब शुरू कैलनि—पत्रिकारिता यानी जर्नलिज्म! आधुनिक युग मे एकर विस्तार आकाश तक भ' चुकलैए। काल्हि तक पत्रकार विश्व-स्तर पर किछु लाख व्यक्ति लेल समाचार तैयार करैत छल। मुदा एखन पत्रकारिताक सम्बन्ध करोड़ नहि अरबो व्यक्ति सँ छैक। पहिने गरीबी, भुखमरी, बीमारी, युद्ध तथा तमाम नकारात्मक समाचार पत्रकार जनता तक पहुँचाबैत छल। मुदा, एखन मनुक्खक जीवन-स्तर कँ उन्नत करबा लेल आवश्यक नीति-गुण विचार जे पूर्णतः सकारात्मक होइए, से समाचार-पत्र, आकाशवाणी एवं टेलिभिजन सँ निर्गत होइत अछि। सूचना-तंत्रक प्रगति सँ संसार सिमटि क' छोट भ' गेलए। संसार भरि मे कतहु किछु आश्चर्यजनक घटना घटित भेल आ कि मिनट मे एकर समाचार कोने-कोन पहुँचि जाइए। आजुक युग मे पत्रकारिताक महत्व एवं दायित्व बहुत अधिक भ' गेलैए। संसारक सभ देश मे आ अपनहुँ भारत मे प्रायः सभटा विश्वविद्यालय एकरा कोर्स बनौने अछि। अपना देश मे अलीगढ़ विश्वविद्यालय तथा विश्व-स्तर पर फिलाडेलफिया विश्वविद्यालय पत्रकारिताक पढ़ाइ लेल विख्यात अछि। पत्रकारिता कँ अपन विषय बना पल्लवी अपन विप्लबी इच्छा शक्तिक प्रदर्शन कैलनि अछि। पल्लवी, की हम सही-सही बात कहलहुँ ने?

साधुपूरा गाम मे एखन तक पल्लवी जे किछु देखने छलीह ओ एक प्रकारक सुस्वादु अनुभव छल जेना कुसियारक मुलायम गुल्लाक स्वाद। एतुक्का लोकक तुलना मे पल्लवी अपना कँ बहुत उच्च श्रेणीक जीव बुझैत छलीह। हुनका मात्र अपन लेख लेल सामग्री भेटनि ततबेटा हुनका अहि ठाम सँ मतलब छलनि। पल्लवी अपना कँ संभ्रान्त, सुशिक्षित एवं आदर्श मानैत छलीह। तँ ओ एखन तक अवहेलनाक

दृष्टिएँ ग्राम्यवासी कैँ देखि रहलि छलीह। मुदा मौसी सँ साक्षात्कार कैलाक बाद हुनकर अपन कद भुट्ट भ' गेल रहनि। हीरा मौसी अंग्रेजी एना बाजि रहल छलीह जेना अंग्रेजी हुनक मातृभाषा होनि। हुनक विश्व-स्तरक ज्ञान त' आरो अद्‌भुते छल, अकल्पनीए छल। पल्लवी भाव-विभोर छलीह। मौसीक प्रश्न हुनक कान तक पहुँचल छल, मुदा मस्तिष्क ओकरा ग्रहण कर' मे असमर्थ भ' गेल छल। तखन ओ मौसीक प्रश्नक जवाब कोना दितथि?

मौसीक अंग्रेजी बजैक छटा देखि ललित सेहो विस्मित छलाह। हुनकहु बुद्धि-तंत्रक संतुलन मे गड़बड़ी आबि गेल छलनि। तथापि ओ अपन होश के दुरुस्त रखने हकलाइत पल्लवी कैँ टोकारा देलनि—पल्लवी, अहाँ कोन तरहक संसार मे भ्रमण क' रहल छी? मौसीक प्रश्नक जवाब त' दिअनु।

पल्लवी चौंकैत कहलनि—हँ, हँ। सभ किछु ठीके छै।

मौसी एवं ललित कैँ बोध भ' गेलनि जे पल्लवी प्रश्न सुननहि ने छलीह। मौसी पल्लवीक हाथक स्पर्श करैत स्नेह-सिक्त वाणी मे कहलनि—पल्लवी, अहाँक विषय अछि पत्रकारिता तँ अहाँ लेल आश्चर्य करब, अधीर होयब आ एकाएक उपस्थित भेल दृश्य मे अपन अस्तित्व कैँ समाहित करब अनुचिते नहि, अहाँ ले अहितकर सेहो होयत। मात्र जिज्ञासा! केवल जिज्ञासा प्रधान बनि अहाँ पत्रकारक अपन दायित्वक निर्वहन क' सकैत छी। अहाँ के सदिकाल खोजी बनि क' जिअ पड़त। संसार त' अद्‌भुत वस्तुक पेटारे थिक। एतय अलौकिक एवं अविश्वसनीय नाटक होइते रहैत छैक। अनहोनी एवं विविध तरहक घटना कैँ घटित होब' काल अहाँ कैँ मूक दर्शक बनि सत्यक खोज करए पड़त। निर्मम बनि घटनाक सही-सही वर्णन करैत ओकरा प्रेषित करब पत्रकारक कर्तव्य भेलै ने? तखन अहाँ विह्वल किएक छी? पल्लवी, अहाँ अपन बहटल आ छिड़िआयल मनोदशा कैँ समेटू ने! जखन अहाँ अपन मोन कैँ स्थिर क' लेब तखने ने एखुनका वार्तालाप मे अहाँ कैँ रस भेटत।

कनेकाल तक चुप रहलाक बाद पल्लवी कहलनि—मौसी, सही मे हम भसिया गेल रही, हमरा क्षमा क' दिअ। आब हम पूर्ण रूपे स्वस्थ छी। हमर मोन हमरा कब्जा मे आबि गेलए।

पल्लवीक बात सुनि मौसीक ठोर पर हँसी पसरि गेलनि। ओ हँसितहिं बजलीह—पल्लवी, मोनेक माध्यम सँ मनुक्ख अपन अस्तित्व कैँ संसार मे कायम रखने अछि। मोने मनुक्खक परिचय थिक। मुदा दुर्भाग्य! दुर्भाग्य ई जे मोन कखनहुँ स्वतंत्र होइते ने अछि। शरीरक विभिन्न अंगक माँग, दिन-प्रतिदिनक विकट परिस्थिति तथा लग मे रह' बला दोसर जीवक आचरण मोन कैँ परतंत्र कयने रहैत छैक। प्राण सँ ऊर्जा

ग्रहण क’ एवं आत्माक स्पर्श क’ कखनहुँ काल मोन स्वतंत्र होइए। ओहि घड़ी मोन कँ अपार हर्ष भेटैत छैक। मोने पर कब्जा कैनिहार सही मे सार्थक जीवन जिबैत अछि। अहाँक मोन अहाँक अधीन भ’ गेल अछि से जानि हम प्रसन्न भेलहुँ।

मौसीक उक्ति सुनि पल्लवीक गरदनि मे फेर सँ फँसरी लागि गेलनि। मुदा मौसीक नरम आवाज मे एतेक ने स्नेह भरल छल जे पल्लवीक चित्त विचलित नहि भेलनि। भाषा अंग्रेजी रहितो जेना मौसीक ठोर सँ फूल झहरि रहल छलनि। पल्लवी आ भरिसक ललित कँ सेहो मौसीक कथन मे स्वाद भेटि रहल छलनि। दुनू मंत्रमुग्ध भेल चुपचाप मौसीक सारगर्भित कथन कँ श्रवण क’ रहल छलाह।

गप्प-सप्प कँ आगाँ बढ़बैत मौसी पुछलनि—पल्लवी, अहाँ अपन जीवन मे गामक जिनगी कँ पहिले-पहिल देखलहुँ अछि। अपन अनुभव सुनाउ।

—अभाव, अभावक पराकाष्ठा। अभाव मे जीवन जिबै लेल विवश। मुदा ओहि अभाव कँ तिरस्कार करैत चहुँदिसि संतुष्टिक साम्राज्य पसरल देखलियै अछि। खुशी, उमंग एवं शान्ति हमरा सभ दिस दृष्टिगोचर भेल अछि। हमरा किछु चाही, हमरा किछुओ ने चाही, जतेक भेटल ततबे पर्याप्त अछि। ताहि तरहक भाव ग्राम्य जीवन मे व्याप्त अछि। लोकक व्यवहार मे आत्मीयता, खुलापन एवं आवेश भरल छैक जे एतुक्का जीवन कँ विशिष्ट बनबैत अछि।

पल्लवीक जवाब सुनि मौसी अपन विचार कहलनि—अहाँक विवेचना सही अछि। गाम भेल भारत आ शहर भेल इन्डिया। आधारभूत जरूरति जेना रोटी, कपड़ा आ आवास। बस एतबे टा ग्रामवासीक माँग छैक। मुदा शहर मे माँगक सीमा नहि, जरूरतिक अन्त नहि। तँ शहर मे संतुष्टि नहि छैक, ओतए सुख-शांति भेटब त’ दुर्लभे रहतै ने!

गप्प-सप्प चालुए छल ताहीकाल मंगली हहाइत ओतए पहुँचि गेलि। ओकर मुँह तमतमायल रहै। माथक पसेना सँ रंज टपकि रहल छलै। मौसी पुछलखिन—तो कत’ अटकि गेल छलहिन?

—भौजी जबर्दस्ती रोकि लेने छलीह।

मंगलीक जवाब सुनि ललित चोट्टे बजला—भौजी के? की तोँ पार्वती भौजी द’ कहैत छएँ? ओ त’ हमर आ गंगाक भौजी छथि। की तोरो ओ भौजिए छथुन?

ललितक बाजब मे कटाक्ष भरल छल। मंगली द्वारा पार्वती कँ भौजी कहि सम्बोधन करब ललित कँ एकदमे सँ पसिन्न नहि भेलनि। मौसी ललितक विचार कँ नोट कैलनि। जाहि काजे ओ ललित कँ बजबौने छलीह तकर तुरंत त्याग कैलनि। ललित जाहि विचारक मनुक्ख साबित भेलाह तनिका लग मंगली एवं

गंगाक प्रेमक चर्चा करब निरर्थक नहि अनर्थमूलक सेहो भ' सकैत छल। मौसी ललित कँ शान्त करैत कहलनि—जहिना हम मंगलीक मौसी तहिना पार्वती मंगलीक भौजी। गामक प्रचलित भाखा एहने होइत छैक। एकरा लेल ललित अहाँ कँ गंभीर होयब ठीक नहि अछि।

ललित किछु आओर बाज' लेल सुरफुरैलाह, मुदा मौसी तकर अवसर नहि देलनि। ओ मंगली कँ कहलनि—गइ मंगली, घर मे अतिथि आयल छथुन्ह। एहन अतिथि फेर कहिया औथुन्ह? हिनका सभ कँ चाह-जलपान नहि देबहुन की?

करीब आध घंटाक भीतरे मंगली तोसके पर खजूरकपात सँ बीनल आ रेशमी रंग-विरंगी ताग सँ कसीदा कयल आसनी ललित एवं पल्लवीक आगाँ रखलक। सुन्दर छिपली मे शाकाहारी भोज्य पदार्थ जेना भरुआ कचौड़ी, सब्जी आ छेनाक बनल मिठाइ परसलक। चानीक फूलदार गिलास मे दुनूक आगाँ जल राखल गेल। मौसीक आग्रह पर ललित एवं पल्लवी जलपान करब शुरू कैलनि। सभ वस्तु मे अपूर्व स्वाद छल। खास क' माटिक अधपक्कू घैलक पानि जाहि मे गुलाब जल मिलाओल रहै तकर जखन पल्लवी अपन जिह्वा सँ स्पर्श कैलनि त' मनहिमन मौसीक विलक्षण रुचिक कायल भ' गेलीह। सभ किछु अहि संसार मे उपलब्ध छैक। लूरि चाही। लूरि एहन जाहि सँ नीक-नीक वस्तु अहाँ अपन हिस्सा मे बटोरि सकी।

जलपानक बाद कॉफी आयल। कप-प्लेट-चम्मचक अद्‌भुत बनाबटि देखि पल्लवी हीरा मौसीक अतीत जनबाक लेल आतुर भ' गेलीह। पल्लवी मौसी सँ निवेदन कैलनि—जँ अहाँक आज्ञा भेटय त' हम अहाँक आवासक भीतरी कक्ष देख' चाहब।

—हमर आज्ञा अछि। मंगली अहाँ कँ सभ किछु देखा देत। ताबे हम आ ललित अही ठाम बैसल-बैसल देश-दुनियाक गप्प-सप्प करब।

अर्थात् ललित कँ अनुमति नहि भेटलनि। मंगलीक अगुआइ मे पल्लवी मौसीक कक्षक भीतरी हिस्सा मे पहुँचली। बैसक खानाक सटल पैघ हॉलनुमा कोठली। एक कात मे पलंग। पंलगक सामने फर्स पर दामी कालीन ओछाओल। देबालक एक कात सँ पतियानी मे तीन गोट लोहाक आलमारी। तकरबाद देबाल सँ सटल सुन्दर पॉलिस सँ चमकैत लकड़ीक रैक। रैक मे शीशा लागल आ भीतर किताब सँ भरल। किताब कइएक हजार मे। थोड़ेक किताब आ थोड़ेक पत्रिका पलंग पर राखल छल। पल्लवी पत्रिका सभ कँ उनटौलनि। बेशी पत्रिका संगीत सम्बन्धी आ सभटा विदेशक। थोड़ेक आगाँ रैक संग बनल टेबुल। टेबुल पर राखल छल पुरना जमानाक एच.एम. भी. ग्रामोफोन। ग्रामोफोनक बगल मे रेकर्डक ढेरी। तकर थोड़े आओर हटल दोसर टेबुल पर विदेश मे निर्मित पावरफुल रेडियो, म्यूजिक प्लेयर आ से सभटा ड्राइ बौटरी

सँ जोड़ल।

पलंगक ठीक सामने दोसर कातक देबाल सँ सटल टेबुल। टेबुल पर राखल छल सरोद। सरोदक जेना नित्य पूजा होइत होअय, एखनो थोड़ेक ताजा फूल सरोदक चारूकात छिड़िआयल छल। सम्पूर्ण कोठली मे ने एको गोट केलेन्डर आने कोनो किस्मक फोटो टाँगल छल। कोठलीक सभटा वस्तु कीमती आ साफ-सुथरा।

शयन कक्षक बाद दुआरि। दुआरिक एक कात भंडार आ भनसाघर। भनसाघर आधुनिक डिजाइन मे सजल। कप, प्लेट, थारी, बाटी, गिलास, भोजन रन्हबाक विभिन्न तरहक वर्तन अलगे किस्मक, महग आ मौसीक रुचि केँ प्रदर्शित करैत। दुआरिक अन्त मे केबाड़। केबाड़ खोलि मंगलीक संग पल्लवी भीतर प्रवेश कैलनि। खुला स्थान चहरदिवारी सँ घेरल। एक कात विशाल बंशीबटक गाछ। जहँ-तहँ फूलक कियारी। लत्तीबला फूल अधिक। एक कात स्नान घर। स्नान घर सँ थोड़े हटल इनार। इनार लकड़ीक झँपना सँ झाँपल। पल्लवी अपन जीवन मे पहिले-पहिल इनार देखि रहल छलीह। डोल खसैबाक स्थान सँ ओ इनारक भीतर देखलनि। इनार गहींर जेना पाताल तक गेल होअय। पल्लीव केँ भय भेलनि। ओ इनार सँ हँटिक' ठाढ़ि भेलीह।

मंगली बात बुझि गेलि। ओ पल्लवीक लग मे सटि क' कहलक—मौसीक ओहिठाम कोनो बातक डर नहि करी। लोक बजैए जे जहिया सँ धरती छै तहिए सँ एतय बंशीबटक गाछ आ इनार छैक। अहि इनारक जल गंगाजल जकाँ पवित्र आ स्वादिष्ट। पी क' देखिऔ ने, मीठ लागत। मालिक बाबाक पिबै लेल पानि एतहि सँ जाइत छनि।

मौसीक कक्ष केँ निरीक्षण क' पल्लवी केँ एक तरहक आनन्दक अनुभूति भेलनि। मुदा मौसी के छथि, साधुपूरा मे किएक छथि, तकर उत्कंठा तीव्र वेग सँ हुनका मोन केँ भ्रमित क' रहल छलनि। पल्लवी मंगली संग आपस ऐलीह। तखने ललित बाजि रहल छलाह—मौसी, जाति प्रथा नीक आ की अधलाह, अहि विषयक चिंतन-मनन हम कहिओ करबे ने कैलहुँ। हमर विश्वास जाति प्रथा मे कतेक दूर तक अछि ताहूद' हम निस्तुकी किछु ने कहि सकैत छी। ओना परम्पराक अधीने रहि काज करी से सही हैत। मुदा तकरो स्पष्ट आ सही-सही जवाब देबा लेल हम सक्षम नहिए छी।

मौसी ललितक बात केँ बिराम दैत कहलनि—अहाँक विचार सँ हम अवगत भेलहुँ। हे लिअ, पल्लवी हमर घर-आँगन देखि क' आबि गेलीह। आइ दियाबातीक पवित्र पाबनिक दिन थिकै। ललित, अहाँक परिवार मे अनेक तरहक काज होइत हैत। आब हम अहाँ दुनूक अधिक समय दूरि नहि करब। अहाँ पल्लवी संग हमर

भेट कर' एलहुँ तकरा लेल धन्यवाद। पल्लवी सँ भेट क' हमरा खुसी भेलए।

सभ कियो बाहरी दलान लेल आपस बिदा भेला। पल्लवीक माथ मे खलबली मचल छल। तुलसी चौरा लग पहुँचैत-पहुँचैत ओ अपना कैँ रोकि नहि सकलीह। ओ ठाढ़ि भ' गेलीह आ थरथराइत ठौँ मौसी कैँ पुछलनि—मौसी हमरा अहाँक परिचय चाही। हमर मोन बेकल भेल अछि। जाबे हमरा अहाँक सम्पूर्ण परिचय नहि भेटत, हमरा चैन नहि हैत।

पल्लवीक बेकलता धिया-पूताक खेलौना प्राप्त करबाक आकुलता सनक तीव्र छल। तुलसीचौरा लग किछु क्षण तक मौसी चुपचाप ठाढ़ि भेल रहलीह। तखन धीर-गंभीर वाणी मे कहलनि—सीताक विवाह भेलनि, राम सनक पति भेटलनि, ओ अयोध्या एलीह। फेर बनबास, अपहरण, अग्नि-परीक्षा, आपस अयोध्या। तकरबाद गर्भावस्था मे हुनका एसगर बोन मे छोड़ि देल गेलनि। लव-कुशक जन्म आ दुनू बालकक शिक्षा-दीक्षा। लव-कुशक रामक अश्वमेघ यज्ञक घोड़ा पकड़ब आ राम एवं लव-कुशक युद्ध अनिवार्य होयब। सीताक धरती सँ निवेदन, धरतीक फाटब आ सीताक धरती मे समायब। पल्लवी, अहाँ सीताक जीवन चरित्र कैँ शब्द मे बान्हिक' लेख तौयार करू। जखन सीताक परिचयक लेख तैयार भ' जाए त' अहाँ मानिलेब जे इएह मौसीक परिचय भेल।

मौसीक जवाब अंग्रेजी भाषा मे छल। जवाब सुनि पल्लवीक मुह मन्द भ' गेलनि। पता नहि मंगली की बुझलक? मुदा ओ आँखि तरेड़ि एना पल्लवी दिस ताक' लागलि जेना कहैत होअय—आब सन्तोख भेल ने?

सभ दलान पर अयला। ओत' पहिनहि सँ मटरा पहुँचल छल। मौसी के देखितहिं बाजल—मालिक अन्न-पानि त्यागि ओछौन पर पड़ि रहलाए। सैह कह' लेल एलहुँए।

हीरा मौसी मटरा सँ कहलनि—अहाँ अपन मालिक कैँ हमर समाद कहिऔन ग' जे संध्याकाल दियाबातीक दीप जरबै काल मंदिरक परिसर मे हमर हुनकर भेट हेबै करत। ताहीकाल हम हुनका बुझा देबनि जे आइ हम हुनका सँ भेट किएक ने कैलियनि। ओ चिंता नहि करथि, जलपान करथि। चिंता करक जिम्मा त' हम सभ दिन सँ उठौनहि छी।

मौसीक जवाब मे आग्रह कम आदेश अधिक छल। मटरा कैँ पयर महक कोरांटी ओकरा अकछौने छल। ओ पयर मे अंडी पातक पट्टी बन्हने छल। नैँगराइते मटरा आपस गेल।

पल्लवीक सम्पूर्ण चेहरा पर हताशाक भाव उगि गेल छलनि। बिना किछु बजने ओ एकटक मौसी दिस ताकि रहलि छलीह। ललित मौसी कैँ प्रणाम कैलनि आ

आपस जैबा लेल डेग उठौलनि। पल्लवी चुपचाप ललितक पाछाँ-पाछाँ बिदा भेलीह।

नवकी पोखरिक घाट लग पल्लवी थकमका क' ठाढ़ि भ' गेलीह आ ललित सँ कहलनि–कनेकाल हम दुनू अही ठाम रुकब। हम अहाँ सँ किछु जान' चाहैत छी।

घाट पर बनल सीमेन्टक बँच पर पल्लवी आ ललित बौसि गेलाह। भोरुका दस बाजल हेतै। घाट सुनसान छल। कातिक मासक रौद मे ताप कम भ' गेल रहै। समय सोहनगर छलै। गप्प-सप्पक आरम्भ ललित कैलनि–मौसीक आवासक भीतरी कक्ष मे अहाँ की सभ देखलहुँ?

पल्लवी जे किछु देखने छलीह से सभटा कहलनि। तखन ललित सँ पुछलनि–ई हीरा मौसी के छथि? हिनक जीवन त' रहस्य सँ भरल छनि। हम अहि रहस्य के जान' चाहैत छी। ललित, हमरा जवाब दिअ। सीताक असीम सहनशक्ति, धैर्य एवं समर्पण आ तकरा संगहि अपन कोनो मनोरथ नहि रहनि। मुदा सीताक जीवन चरित्र सँ मौसीक परिचय कोना भेटतै? ई त' आरो रहस्यक बात भेलै ने? हम अन्हार मे बौआ रहलि छी। हम मानसिक यातना भोगि रहल छी। ललित, अहि गुत्थी कैँ सोझराउ, हमर मदति करू।

ललित जवाब देलनि–हम पीड़ापुर मिडिल स्कूल सँ सातम पास कैलहुँ । मैट्रिक तक दरभंगा जिला स्कूलक छात्र रहलहुँ। फेर पटना कॉलेज सँ स्नातक भ' एखन हम पटना विश्वविद्यालयक छात्र छी। हमर समग्र विद्यार्थी जीवन हॉस्टले मे बितलए। तातिल मे हम गाम अबैत रहलहुँ अछि। हमरा लेल जेना गामक गाछ-बृक्ष, नदी-नाला, पोखरि-झाँखरि, खेत-खरिहान, तहिना एकटा हीरा मौसी। ताहि सँ अधिक हीरा मौसी कैँ जनबा लेल ने हमरा जिज्ञासा भेल आ ने रुचि। हम त' मौसीक दलान सँ अधिक किछु देखनो ने छी। आइ मौसी हमरा किएक बजौने छलीह सेहो हमरा ज्ञात नहि अछि। पल्लवी, जँ अहाँ हीरा मौसीक परिचय जान' चाहैत छी त' हमर बाबा सँ सम्पर्क करू। हमर बाबा कैँ मौसीक पछिला जीवन द' बुझल छनि, तकर हमरा विश्वास अछि।

5.

चेत कबड्डी आबए दे, तबला बजाबए दे।

तबला के तुम-ताम, डुग्गी सुनाबए दे...सुनाबए दे...सुनाबए दे...।

दियाबातीक परात माल-जालक पाबनि। ओही दिन कबड्डीक खेला। बहुत पहिने आजुक दिन कुस्ती होइत छलै। लोक घी खाइत छल। जमाना बदलि गेलै। डालडाक युग आबि गेलै। पहलवान पान-बीड़ी-सिगरेट बेचैए। छौंड़ा सभ कबड्डी खेलाइए।

स्थान वैह नाटक वला। जगह फैल, माटि उस्सर। खेलाड़ी कैँ कतबो ने पटकनियाँ पड़ौ, मुदा हड्डी नहिए टुटतै। पीड़ापुरक टीम आबि चुकलए। ओकरा एकटा नव खेलाड़ी छै बिसम्भरा। आन ठाम सँ अयलैए। साधुपूरा टीमक चयन गंगाक अखाड़ा सँ भेलैए। नवका-नवका छौंड़ा जकर मोछक पम्ही उगबे केलए जेना रुदला, महिआँक बेटा जगदिसबा, सुपरिया, कंतुआ आ जगेसरा कबड्डी खेलायत। पुरना खेलाड़ी मे छेदिया आ फुदरा कैँ राखल गेलैए। अनुभव समय पर काज दैत छै ने! मुदा अइ बेर साधुपूरा हारि जायत। से किएक हौ? साधुपरा कहियो ने हारल अछि, त' अइ बेर किएक हारि जायत? अइ बेर गंगा मालिक कबड्डी नहि खेलथिन। हुनका ओतए महिला पाहुन पल्लवी दाइ आयल छथिन। हुनके लाजे गंगा मालिक लंगोट नहि पहिरथिन।

छौंड़ी मंडली मे कनफुसकी, निराशा। गंगा मालिक नइँ त' किछु नहि। कबड्डीक खेला मे छौड़ी सभ गंगे कैँ देख' अबैत छलि। एक हाथ ऊँच, एक बीत चौड़ा छाती आ उघार देह। छौंड़ी सभक आँखिक झीलक कमल छल गंगा। सभ छौंड़ीक एकेटा लालसा। हे ईश्वर! हमहूँ त' तोरे संतान छिअह। की हमरा सभक नसीब मे गंगा सनक छैल-छबीला नहि! बुझि गेलियौ रे भगवनमा! हमरा सभक हिस्सा मे वैह बिकौआ, नकट्टा, कनछेदिया। मुदा एतबा त' सत्ते, जँ गंगा मालिक कबड्डी नइँ खेलता त' कबड्डी मे मजे नहि औते। छौंड़ी सभहक निरास होयबाक इएह कारण छलै। ओ सभ अपन-अपन नजरिक गोदना कत' गोदत?

पीड़ापुर पंचायतक अलाबा आन-आन गामक लोक सेहो आयल अछि। लोकक भीड़, कस्सम-कस्स, ठेल्लम-ठेल्ल। बीच मे चूनक डरीर सँ कबड्डीक घर तौयार अछि।

कबड्डी जीतनिहार कैँ इनाम देनिहार मालिक बाबाक टोडर मल्ल अर्थात् कल्लू मरड़। नव धोती-कुर्ता पहिरने कल्लू कुर्सी पर बैसल छथि। सामनेक टेबुल पर कप आ कागतक पुड़िया मे लपेटल पाँच सय एक टाका राखल अछि। बाँकी सभटा लोक नीचाँ माटिए पर बैसल छथि। कबड्डी खेल घरक दोसर कात जनानी, टीसन परहक मोटरी जकाँ, समटल बैसलि अछि। छौंड़ी मंडली चनचना रहलए। सभ सँ आगाँ मे बैसलि अछि मंगली, जेना चूड़ीक आगाँ अगेली। विधाता रूपक खजाना ओही निरासी कैँ देलथिन अछि, ओकरा कैँ नहि चिन्हतै?

पुरुषक ठेल्लम-ठेल्ला सँ हटल एक कात, कबड्डी घरक बिचला डरीरक सोझाँ-सोझी, मालिक बाबा सभटा स्टाफ जगह पकड़ने अछि। ओही ठाम, राउत काकाक ठीक आगाँ मे, गंगा सेहो बैसल छथि।

खेला शुरू भेल। सभसँ अनुभवी खेलाड़ी छेदिया। छेदिया मुहक तमाकू थुकरलक, बित्ताभरि मुह बौलक आ कबड्डीक फकड़ा पढ़ैत छड़पि क' दुश्मनक घर मे पहुँचि गेल। छेदिया एखन खिखिर जकाँ झपटि रहल छल। बिसम्भरा एमहर-ओमहर कुदैत भौकी देलक आ छेदियाक टाँग छानि लेलक। छेदिया धराम सँ चित्ते जमीन पर खसल। बाँकी सभटा पीड़ापुरक खेलाड़ी ओकरा चाँपि देलक। छेदियाक दम टुटि गेलै। छेदिया मरि गेल। साधुपूराक सभाक धाना खसि पड़लै।

लोकक भीड़ सँ उछटि क' बौकू बाहर आयल आर पूरा जोश मे छेदिया लग पहुँचल आ हकमैत कहलक—तौँ साधुपूरा गामक नाक कटा देलएँ। फेर एकहि टाँग पर नचैत बौकू लोकक भीड़ दिस घुमल आ मौँछ पर ताव देलक—आजुक छौंड़ा कबड्डी की खेलत? खेलाइत छलहुँ हम सभ। बिना साँस तोड़ने बाँस जकाँ लबिक' एक-दू-तीन, तीन-तीन खेलाड़ी कैँ छुबि अपन घर मे आपस।

कनेकाल तक बौकू कुदैत रहल। खेला रुकि गेल। छौंड़ीक झुंड सँ एकटा छौंड़ी टोनि देलक—बौकू कका, श्रीरामपुरबाली नँगरी काकी अहाँ कैँ आँगन जेबा लेल कहै छथि। नँगरी काकी अँगने मे अहाँक संग कबड्डी खेलतीह।

बौकूक जोश ठंढा पड़ि गेल आ ओकर जोशक पताखा उड़िआय लगलै। सभक मोन मानि गेलै जे आइ बौकूक घरवाली नंगरी काकी ओकरा बिनु पिटने नहि छोड़थिन। बौकू बौक बनि अपन जगह पर बैसि गेल। खेला फेर सँ शुरू भेल। दुश्मनक घर सँ लहरैत एकटा खेलाड़ी साधुपूराक घर मे आयल आ सुपरिया कैँ छुबि आपस चल गेल। सुपरिया मरि गेल। ओ डरीरक ओहि पार छेदिया लग जाएक' बैसि गेल। छेदिया चुनायल तमाकू एक जूम ओकरा हाथ मे देलकै। सुपरिया तमाकू मुह मे रखलक।

थोड़बे समय बीतल हेतै आ की साधुपूराक सभठा खेलाड़ी मरि-मरि क'डरीरक दोसर कात पहुँचि गेल। आब फुदरा असगर बाँचल छल। फुदरा नाटक मे भीम बनैत अछि। भगवान ओकरा भीम बला ताकत देने छथिन। आब फुदरा गुम्मा बनि दुश्मनक घर मे जायत। गुम्मा कँ फकड़ा पढ़ैक आवश्यकता नहि। आब हे फुदर भाइ! साधुपूरा कँ तोरे आशा। नाक रखहक आ की कटा दहक, तोरे जिम्मा।

फुदरा ठोर भिचने, दम सधने दुश्मनक घर मे पहुँचल। दुश्मन जोश मे छल। बस एकेटा फुदरा बचलैए। जीत लग मे आबि गेलैए। फुदरा कँ कहुना हरदा बजा। बिसम्भरा जुगुत भिड़ा फुदराक मोटगर टाँग कँ छनलक। फुदरा पटे धुस्स द' माटि पर खसल। बाँकी खेलाड़ी फुदराक पीठ पर ठेहुनियाँ रोपि देलक। मुदा वाह रे फुदर! अदावनबालीक घरबला! ओकरा ने दम टुटलै आ ने होश हरेलै। ओ पीड़ापुरक सभटा खेलाड़ी कँ पीठ पर लदने आगाँ घुसक' लागल। साधूपुरा दर्शक मे गर्द पड़लै-हिम्मते मर्द, मर्दते खुदा। वाह रे फुदर भाइ, जोर लगा क' आगाँ घुसकैत रह।

सभक नजरि फुदराक नमरल हाथक पंजा आ आगाँ मे चूनक डरीर पर केन्द्रित छल। फुदरा अबस्से डरीर छुबि लेत। डरीर छुबिते साधुपूरा जीति जायत। ललकारा पर ललकारा पड़ि रहल छलै। सभक नजरि गराँसक धार जकाँ तेज भ' गेल रहै। बस चारि आँगुर आओर। जोर लगा फुदर भाइ! सभटा आँखि फुदराक आँगुर आ चूनक डरीर पर टिकल छलै।

मुदा ओहि उत्तेजनाक माहौल मे दू जोड़ी आँखि एहनो छल जकरा कबड्डी खेला मे कोनो टा रुचि नहि रहै। गंगा एमहर सँ आ मंगली ओमहर सँ एक दोसरा कँ टकटकी लगा क' देखि रहल छल। आब लिअ, देखइए नहि रहल छल, आँखिक भाषा मे एक दोसरा सँ गप्पो-सप्पो क' रहल छल। की कहलिअ? आमकगाछी मे, अखाड़ाक पछवारी कात, सपेता मालदहक गाछ लग...हँ, हँ, बुझि गेलियौ ने! तँ आगाँ चल। हम चभच्चा लगक खरही बाटे रस्ता फेर बदल करैत पहुँचि रहलियौए। हँ, हँ, एखन ओ स्थान सुन्न-मसान हेतै।

थोड़बहि समयक बाद गंगा एवं मंगली सपेता मालदह गाछक जड़ि मे एक दोसराक आलिंगन मे मस्त आ बेसुध छल। सभक जीवन मे बाल्यावस्था सँ जवानी मे प्रवेश कर' काल एकटा उमेर अबैत छैक जाहि उमेरक प्रत्येक दिन बड़ी मीठ होइत छै। खास क' ओकरा, जकरा प्रेम-रसक रसास्वादन करक सौभाग्य प्राप्त भेल होइक। गंगा आ मंगलीक मिलन छत्तीस घंटा, बूझि लिअ जेना छत्तीस वर्खक बाद भ' रहल छलै। तँ दुनू अधीर छल, उताहुल छल। एखन जेना सम्पूर्ण सृष्टि एकांते मे होअय तेहन एकांत ओहि ठाम रहै। मात्र गाछक डारि पर बैसल थोड़ेक चिड़ै अपना-अपना

बोली मे उकटा-पैंची क' रहल छल।

जखन दुनूक शरीरक जोश कम भेलै तखन दुनूक मोनक होश जगलै। दुनूक गप्प-सप्प शुरू भेलै। मंगली ठुनकैत बाजलि—अहाँ कँ त' किछु बुझले ने हैत जे काल्हि की सभ भेलै।

गंगाक जवाब छल—हम कोना की बुझितियैक। अखाड़ा पर रही। आँखि मे नोर भरने राउत कका कह' अयलाह जे कोनो कारणे हीरा मौसी बाबा सँ भेट नहि कैलखिन। तँ बाबा अन्न-पानि त्यागि बिछौन पर पड़ल-पड़ल कुहरि रहल छथि। तोरा त' बुझले छौ जे बाबा हमरा भगवानो सँ अधिक प्रिय छथि। हम राउत कका सँ संवाद सुनि दौड़ल बाबा लग पहुँचलहुँ आ हुनकर पयर जाँत' लगलहुँ। कनिए कालक बाद मटर कका मौसीक समाद अनलनि जे संध्याकाल राधा-कृष्णक मंदिर मे दियाबातीक दीप जरबै काल ओ बाबा सँ भेंट करथिन आ भोर मे भेंट कियेक ने कैलथिन ताहि द' सेहो कहथिन। संवाद सुनि बाबाक दशा मे सुधार भेलनि। हम जिद्द कैलियनि तखन बाबा जलपानो केलनि। यद्यपि बाबाक स्वास्थ्य मे सुधार भ' गेल रहनि तथापि हुनका हमर सेवाक जरूरति छलनि। तँाही कह जे हम बाबा कँ छोड़ि क' कत' जइतहुँ। अच्छे तँा बाज जे काल्हि की की नव बात भेलै?

मंगली गंगा सँ आरो सटि गेलि आ काल्हि की सभ भेल रहै से कहब शुरू कैलक। माइक फरमाइस, ओकर भोकारि पाड़िक' कानब, मौसीक खोदि-खोदि क' कानबक कारण द' पुछब, मौसी कँ सभ बात बिस्तार सँ कहब, मौसीक आश्वासन संगे अभयदान देब, ललित एवं पल्लवी कँ बजाक' मौसी लग आनब, पार्वती भौजीक फज्झति करब आदि सभटा गप मंगली गंगा कँ सुना देलक। फेर ओ अपन धुधुआइत साँस कँ सहज करैत कहलक—जे भेलै से नीके भेलै। मौसी कहलनि जे जखन तोहर दुनूक असलीका प्रेम छिऔ त' ओ सभ तरहक मदति करबे करथिन। मौसी हमर-अहाँक प्रेमक बात नीक जकाँ बुझि गेलखिन अछि। ओ हमर अहाँक बिआहक सभटा अड़चन कँ हटाइए कँ छोड़थिन, तकर हमरा पक्का विश्वास भ' गेल अछि।

मंगली सँ सभ बात सुनि गंगाक खुशीक ठेकान नहि रहलै। ओ मंगली कँ फेर सँ बाँहि मे समेटि ओकरा नव-नव तरहेँ दुलार कैलक। तखन अपन मोनक उद्‌गार प्रगट करैत कहलक—बाबा मौसीक बड़ आदर करैत छथिन। ओहुना हमर बाबा ऊँच-नीच, छोट-पैघ, जाति-पाँति कँ नहि मानैत छथिन। मौसीक कहब कँ बाबा कहियो ने टारथिन। जखन मौसी गछि लेलनि त' गइ मंगली, आब हमर तोहर बिआह हेबेटा करतै।

दुनू अजोह प्रेमी-प्रेमिका सुखद भविष्यक सुन्दर कल्पना मे थोड़ेक काल तक

विभोर रहल। फेर जेना-जेना नुकाइत आयल छल तहिना फराक-फराक रस्ता पकड़ि आपस गेल।

जाहि सपेता मालदह आमक गाछक जड़ि मे गंगा एवं मंगलीक प्रेम लीला भेल रहै, दुनुक प्रस्थानक बाद ओही गाछक छिनगीं सँ कोबी नीचाँ उतरल। कोबीक सर्वांग शरीर पर पीअर-पीअर घोड़न लुधकल रहै। ठाम-ठाम घोड़न कटनहुँ रहै जाहि सँ चकता उगि गेल छलै। कोबीक ध्यान गंगा आ मंगलीक क्रिया-कलाप एवं वार्तालाप मे अहि तरहेँ केन्द्रित रहै जे ओ घोड़नक चुभन कैँ बुझियो ने सकल छल। कोबी नामक दुष्ट कैँ दुष्टता करबाक अवसर बड़ कठिने भेटल रहै तखन ओ शरीरक यातनाक परबाहि कोना करितए? मुदा आब ओकर शरीर मे टीस बारने रहै। टीस बारए दिऔ, कोनो चिंता नहि। अधिक जरूरी काज पहिने होब' दिऔ। कोबी देहक अकड़ा तोड़लक, दोपट्टा सँ देह परहक घोड़न कैँ झाड़लक आ गगन यादव तक सभटा समाचार पहुँचाबक लेल पीड़ापुर दिस डेग उठौलक।

दियाबाती एवं छठिक बीच सभ तरहक काज धंधा संगे स्कूल, कॉलेज बन्द रहैत छैक। पीड़ापुरक सड़क जन-शून्य छल। कतौ-कतौ गोट-पगड़ा लोक अपन-अपन नीजक काज मे लागल छल। भाँज लगबैत-लगबैत कोबी पीड़ापुर हाइ-स्कूलक गेट पर पहुँचल। ओतहि विधायकक जीप छलै। ड्राइभर आ दू गोट अंगरक्षक एखन टेप पर कोनो रसगर भोजपुरी गाना सुन' मे तल्लीन छल। कतबहि मे जा क' कोबी स्कूलक ढहल छहरिदिबारी कैँ फानि क' पार केलक आ स्कूलक प्रांगण मे पहुँचल।

पारदर्शिता प्रजातंत्रक स्वास्थ्यक लेल आवश्यक तत्व अछि। प्रजातंत्रक राजकुमार विधायक हरिहर मंडल एकर ज्वलंत उदाहरण छलाह। मंडलजीक पछिला तमाम कयल कृति खुजल किताब सदृश छल, किछुओ ने नुकायल छल। ओ जे किछु करैत छलाह, जनताक समक्षे करैत छलाह। ताही अनुरूप एखन ओ प्रधानाध्यापक मिसरी लाल ताँती एवं पीड़ापुर पंचायतक मुखिया गगन यादवक संग स्कूलक बरामदा पर खुलेआम मदिराक सेवन क' रहल छलाह।

जखन कोबी ओइ तीन महान आत्मा लग स्कूलक बरामदा पर पहुँचल छल ताहि समय विधायक मदिरापानक अतिरिक्त देशक मुख्य-मुख्य समस्या पर सारगर्भित भाषण द' रहल छलाह। विधायक जी कहि रहल छलाह—प्रांतक कोन कथा, सम्पूर्ण देशक समस्या अछि जाति प्रथा। देशक मुख्य बाधक जाति-प्रथा कैँ जाबे तक समूल नष्ट नहि क' देल जेतै ताबे तक भारत ने प्रगति क' सकैत अछि आ ने राष्ट्र बनि सकैत अछि। जाति-प्रथा अनेक तरहक विषमताक जन्म दैत अछि। मुदा प्रसन्नताक बात ई अछि जे रोगक पता लागि चुकलैए। आब एकर निदानक पता लगबै लेल

प्रयास कयल जाए रहल अछि। विधायक अपन भाषण कैँ रोकि पेय पदार्थ सँ लबालब भरल गिलास कैँ एकहि साँस मे खाली क' ताँती दिस तकलनि। ताँती अपन कर्तव्यक प्रति सजग छल। ओ विधायकक गिलास मे आधा तक मदिरा आ बाँकी कैँ पानि सँ भरि देलक। मुदा चखना स्वरूप तरल माछ थारी मे समाप्त भ' चुकल रहै। ताँती करुण नजरिए गगन दिस तकलक। तखने गगन कैँ कोबी दिस नजरि गेलै। अरे! तौँ कखन अयलैँ? तोहर कोनो काज हेतौ? खैर, तौँ अपन काज द' बाद मे बजिहैँ। एखन तौँ छात्रावासक भनसा घर मे जा क' ओतय सँ तरल माछ आ भूजल चूड़ा लेने आ। जल्दी सँ जो। विधायकजी अपन सभक पाहुन छथुन्ह ने। हिनकर स्वागत मे कनिकबो त्रुटि नहि होयबाक चाही।

गगन यादवक देखाओल स्थान पर कोबी पहुँचल। भनसा घरक दृश्य देखि ओ क्षुब्ध भ' गेल। ओकर काव्य-गुरु लगभग छह हजार कविता आ चौंतिस गोट नाटकक रचयिता, हिन्दी भाषाक शत्रु एवं मैथिली भाषाक पृष्ठ-पोषक श्री सदानन्द झा 'दीन' चुल्हा लग माछ तरि रहल छलाह, चूड़ा भूजि रहल छलाह। तरल रोहुक पेटी सँ अढ़िया भरल छल। तरल माछकैँ देखतहि कोबीक ध्यान अपन काव्य-गुरुक दारुण दुख सँ पिछड़ि क' माछक मूड़ा पर केन्द्रित भ' गेलै। तत्काल लोभक कारणे कोबी फकसियार बनि गेल। फकसियारे जकाँ ओकर जिह्वा लपलप कर' लगलै। फकसियारे जकाँ ओकर बुद्धि माछ खयबाक जोगार कर' लागल। ओ अपन काव्य-गुरू सँ निवेदन कैलक—श्रीमानजी, यथाशीघ्र अहाँ तरल माछ आ भूजल चूड़ा ल' क' जइयौ। मुखिया जी एवं ताँतीजीक सैह फरमान अछि। अहाँ जाबे घुमि क' आयब, हम एतुक्का वस्तु कैँ सुरक्षित राखब। बिलाइ तथा आन-आन जानवर सँ एकर रक्षा करब।

दीनजी अपन वस्त्र सँ लोहिया सँ फड़फड़ा क' उड़ल माछक तेल मिश्रित कण कैँ झाड़लनि आ थारी मे तरल माछ आ चंगेरी मे भूजल चूड़ा ल' क' भनसा घर सँ बाहर बिदा भेलाह। कोबी कैँ अवसर भेटलै। ओ लोहिया सँ निकालि-निकालि रोहुक पेटी कैँ खायब शुरू कैलक। चारि-पाँच किलो माछक काँट बिछब आसान होइत छै? कोबी हबड़-हबड़ माछ खाइत रहल आ काँट कैँ धधकैत चूल्हि मे विसर्जित करैत रहल। भाग्ये सँ ओकरा एहन सोहनगर संयोग भेटल रहै।

सात-आठ माछक खण्ड कोबीक पेट मे पहुँचल होयत आ कि दीनजी दीन अवस्था मे घूमि क' आबि गेलाह। हुनकर मुह लटकल छल आ कविता आँखिक नोर बनि बहि रहल छल। कोबी हाथ जोड़ि पुछलकनि—गुरुवर, की भेलए? अहाँ दुखी किएक छी? हमरा अपन दुखक कारण कहू। हम अहाँक आज्ञाकारी शिष्य, अहाँक

दुख निवारण लेल सभ तरहक उचित आ अनुचित काज क’ सकैत छी।

—तोँ एखन हमर कोनोटा मदति नहि क’ सकैत छह। एखन हमर नसीबे वाम अछि। हौ, हड़बड़ी मे भूजै काल हम चूड़ा मे नोन देब बिसरि गेलियै। अनोन चखना मदिरा सेवन कर’बला लेल बिख तुल्य होइए। प्रधानाध्यापकजी एखन मुखियाजी एवं विधायकजीक समक्षे अनेक तरहक अपशब्दक वमन क’ हमर दुर्गति कैलनिए, हमर अपमान कैलनिए। तेँ हमर हृदय दुख सँ कातर भेल अछि, मोन ग्लानि सँ भरि गेल अछि।

दियाबाती सँ लगाइत छठिक भोरका अर्घ तक पाबनिक महत्व एतेक ने विशाल होइत अछि जे विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी एवं चपरासी तक छुट्टी मे चल जाइत अछि। ककरो कोनो तरहेँ रोकल नहि जा सकैत अछि। एहने मुश्किल घड़ी मे मिसरी लाल ताँती केँ गगन यादव माध्यमे विधायकक क्षेत्र-दौड़ाक सूचना प्राप्त भेल रहैक। विधायकक वरदहस्तक कारणे ताँती पछिला पन्द्रह बर्ख सँ पीड़ापुर हाइ स्कूलक प्रधानाध्यापक छल। तेँ विधायकक नीक तरहेँ स्वागत करब ओकर कर्तव्य छल। मुदा स्वागतक तैयारी लेल कम सँ कम एक गोट स्टाफक रहब जरूरी छलै। एखन स्कूल मे सभ सँ निमूधन शिक्षक छलाह सदानन्द झा ‘दीन’। हुनका रोकि लेल गेल। एखन वैह दीनजी माछ आ चूड़ा केँ तरि-भूजि क’ आगत पाहुन लग पहुँचा रहल छलाह।

कोबी सभटा बात बुझलक। तरल माछ केँ उदरस्थ कैलाक उपरान्त ओकर मोन तृप्त छलै। ओ कहलक अहि स्कूल मे अगाड़ी जातिक अहाँ एसगरे शिक्षक छी। बदलल समय मे अगाड़ी जाति पर होब’बला सभटा अत्याचार केँ अहाँ एसगरे सहि रहल छी। मान्यवर, अहाँक दुर्दशा देखि हम मर्माहत छी। हमरा माथ मे क्रोधक जन्म भ’ रहलए। जँ अहाँ आदेश दी त’ हम लाठी सँ ताँतीक कपार केँ दू भाग मे विभक्त क’ दी। अहाँ बाजू ने, हम फाँड़ बान्ह’ लेल तैयार छी।

दीनजी केँ खेत-पथार नहि छलनि जे ओ अषाढ़ मे रोपितथि आ अगहन मे कटितथि। मात्र शिक्षाक बलेँ हुनक वर्तमान एवं भविष्य ठाढ़ छल। ओना शिक्षकक पद सँ हुनका विरमित नहि कएल जा सकैत छल। तकरा लेल शिक्षक संघ पर्याप्त छल। मुदा विधायक हुनक स्थानान्तरण करा क’ कोशीक ढाप मे पठा सकैत छल। हुनक गामे टा नहि सासुर तक पीड़ापुरक समीप छल। तेँ स्थानान्तरक अभिशाप सँ बाँचक लेल दीनजी सभ तरहक अपमान सह’ लेल अभिशप्त छलाह। ओ कोबी सँ कहलनि—ने तोरा फाँड़ बन्हबाक आ ने लाठी भँजबाक काज। तोँ एखन नोनक मटकुड़ी ल’ क’ जाह। नोन केँ चूड़ा मे छिटि दिहक आ आँगुर सँ मिला दिहक। मात्र एतबा मदति क’ तोँ एखन हमर सभ सँ पैघ उपकार क’ सकैत छह।

कोबी पैघ सन ढेकार कैलक, नोनक मटकुड़ी उठौलक आ स्कूलक बारामदा पर पहुँचल। विधायकक भाषण चालुए छल। कोबी एक मुट्ठी नोन चूड़ा पर छीटि चुपचाप ठाढ़ भ' गेल। विधायक मदिरा पीबैत होअय, भाषण करैत होअय अथवा आन तरहक काज मे व्यस्त होअय, भीतरे-भीतर ओ सावधान रहैत अछि। विधायकक कपार पर प्रांत भरिक सुरक्षाक भार रहैत छै ने! हरिहर मंडलक नजरि कोबी पर गेलै आ ओकर बुद्धि मे एलार्म बाज' लगलै। ई के छी? विधायक सशंकित भ' वक्र दृष्टिएँ कोबी दिस ताक' लागल।

प्रश्न मुखिया पुछलकै—एँ रौ कोबिया! एखन तौँ एतय किएक अयला हेएँ? तोरा कोन काज छौ?

—गगन मालिक, बहुत जरूरी बात कह' लेल अयलहुँए। एतबा बाजि कोबी विधायक आ ताँती दिस एना तकलक जेना ओइ दुनूक समक्ष ओकरा बात कह' मे असौकर्य भ' रहल होइ।

गगन स्थितिक निदान करैत कहलक—हिनका दुनू सँ किछुओ नुकैबाक जरूरति नहि छै। जे किछु कहक होउक निधोख कह।

कोबी ठोर पर ठोर बैसबैत बाजल—तखन सुनिए लिअ। जकर डर छल से भ' गेल। गंगा मालिक आ मंगलीक बिआह हेतै, तकर फाइनल भ' गेलैए।

अएँ... अएँ... बजैत गगन उठि क' ठाढ़ भ' गेल। मदिराक गिलास ओकर हाथ सँ नीचा खसि पड़लै। गिलासक झन्न आबाज भेलै। एकहि क्षण मे गगनक चेहरा पर गरदा उड़िआय लगलै।

अपन समादक उचित प्रभाव देखि कोबी कैँ असीम प्रसन्नता भेलै। उत्साहित भ' ओ आगाँ कहलक—बिआहक मंजूरी हीरा मौसी देलनि अछि। हीरा मौसीक मंजूरीक अर्थ भेल मालिक बाबाक मंजूरी। कानक सुनल आ आँखिक देखल हम कहि रहल छी जे ई बिआह अबस्से भ' क' रहतै।

गगनक रंज ओकर टीक तक पहुँचि गेलै। ओ फुसफुसायल—हे परमेसर! हमर बाबा कहिआ मरत तकर तारीख हमरा बताबह। आ की बुढ़बा सभक अँकुरी खाइए क' मरतै?

गगनक तमसायल रूप कैँ देखि उद्विग्न भेल विधायक पुछलक—गंगा आ मंगली, ई दुनू छी के?

जवाब ताँती देलक—मुखियाजीक सहोदर कनिष्ठ भ्राताक नाम भेल गंगा। मंगली साधुपूरा गामक कोनो चमारक बेटी थिक।

विधायक चोट्टे बाजल—अएँ यौ, एकर माने भेल जे ठक्कन यादवक पौत्रक

बिआह एक चमारिन कन्या सँ होयत?

कोबी कँ बजबाक अवसर भेटलै—श्रीमानजी ठीके बुझलनि अछि। मालिक बाबा अहि इलाकाक सभ सँ मातवर, सभ सँ प्रतिष्ठित आ सभ सँ अधिक आदरणीय व्यक्ति छथि। हुनके परिवार मे एहन दुष्कर्म होब' जा रहल अछि। हम गगन मलिकक नोन खाइत छी। तेँ समाचार कँ बहुत आवश्यक बुझि एखन हिनका चेताब' अयलहुँ अछि। गगन मालिक अहि तरहक अनमेल बिआह कँ रोकथु। जँ रोकि नहि सकथि त' जहर खा क' मरि जाथु।

ताँती अपन माथ कँ हँसौतैथ मंतव्य देलक—केहन घनघोर कलियुग आबि गेलए, जे कहियो ने सुनल से सुनि रहल छी।

ताँतीक उक्ति सुनलाक बाद विधायक गगन दिस तकलक। गगन कँ अत्यधिक क्रोध एवं क्षोभक कारणे कंठ अवरुद्ध भ' गेल रहै। बजबा मे असमर्थ गगन टेबुल पर अपन माथ पटक' लागल।

गगनक असहनीय पीड़ा देखि विधायक ओकरा लग आबि ओकर पीठ थपथपबैत कहलक—बिआह ठीक भेलैए, बिआह भेलैए त' नहि। तखन तोँ किएक अपन माथ फोड़ि रहलहए। सभ दुखक दवाइ छैक। हम विधायक छी आ हमरा भीतर सभ तरहक शक्ति भरल अछि। हम अहि तरहक बिआह होब' नहि देबैक। मुखिया, तोँ धौर्य राख', हमर सामर्थ्य पर भरोसा कर'। यादवक बिआह चमारिन सँ। राम! राम!!

कनिएँ पहिने विधायक जाति प्रथाक अवगुणक बखान करैत छल। आब ओ गंगा एवं मंगलीक बिआहक कट्टर बिरोधी बनि गेल छल। कोबी कँ चोन्हरा लागि गेलै। लोक ठीके बजैत अछि जे सामान्यतः विधायक चोर नहि चोरे टा होइए। सही मे हरिहर मंडल झुट्ठा नहि झूठे टा बजैए।

ताँती बिन पानि मिलौने एक गिलास ठर्रा गगनक हाथ मे पकड़ा देलक। गगन सभटा मदिरा कँ घोँटि गेल। ओकर निशाँ हरियर भ' गेलै। ओ हीरा मौसी लेल कइएक किस्मक अस्लील शब्दक प्रयोग करैत कुकूर जकाँ भूकैत रहल। ओकर धधकल चित्त मे ठंढक पहुँचलै। तखन गगन अपन कठोर निश्चय कँ प्रगट करैत बाजल—हम शपथ खाइत छी जे गंगा आ मंगलीक बिआह कथमपि नहि होब' देबैक।

एकाएक गगन कँ एकटा पुरना गप्प मोन पड़ि गेलै। लगभग एक बर्ख पहिने ओ जमीनक बँटबाराक माँग ल' क' अपन बाबा लग पहुँचल छल। ओकर बाबा अपन देवान कल्लू मरड़ के कहने रहथिन ज एकरा एकर खेत देखा दहक। एकरा नामक जमीनक खाता, खेसराक कागत एकरा सुपुर्दक' दहक। ठक्कन यादव कँ कुल

जमीन साठि बीघा। दू गोट बालक, तेँ कुल जमीनक भेल तीन हिस्सा। एक हिस्सा मे गगनक माय जीवित आ एक छोट भाइ, गंगा। तेँ एक हिस्साक भेल तीन टुकड़ा। आब गगन अपन पत्नी, पार्वती केँ त्यागि पीड़ापुर मे रहैत छल। तेँ एक टुकड़ाक भेल दू खंड। तखन गगनक हिस्सा मे कुल जमीन भेल तीन बीघा, सात कट्ठा, एगारह धूर आ दस धुरकी। अंचल मे ओही मोताबिक पक्का कागत बनल छल आ साले-साल मालगुजारीक रसीद कटैत छल।

एहन बँटबारा केँ अपन सामने देखि गगन बड़बड़ाइत पीड़ापुर आपस आबि गेल छल। बाबाक सोझाँ मे ओकर अकीलक कोन मोजर? बाबाक जिबैत ओ किछु ने क' सकैत छल। मुदा आब बाबा सँ बदला चुकैबाक सुअवसर ओकरा भेटि गेल रहै। आफदक जड़ि छथि हीरा मौसी। मौसीक कहल मे बाबा। जँ गंगा आ मंगलीक बिआह रोकि देल जेतैक त' छुछनरिए मौसीक तेरहो करम भ' जायत। मौसीक क्रिया-करम होइतहि बाबा निष्प्राण भ' जेताह। हँ यौ बुढ़बाक सभ दिनका अइँठी खत्म भ' जेतै।

गगन कोबीक पीठ ठोकलक आ कहलक–वाह रे कोबी! सौंसे साधुपूरा मे तेँ एसगर हमर हिमायती छएँ। तोरा एकर इनाम अबस्से भेटतै।

कोबी भाव मे आबि मूड़ी झुकौने गगनक पयर छूलक आ सुखायल चप्पलक माटि माथ पर हँसोथलक।

विधायक टोक देलक–गगन, तोँ चिंता नहि कर'। हमर बात केँ ध्यान सँ सुन'। तोँ हमर बेर पहरक मदतगर छह। चुनाव मे तोँही हमर मुख्य एजेन्ट रहैत छह। एखन तोरा ऊपर विपत्ति आयल अछि। हम तोहर सभ तरहक मदति कर' लेल कटिबद्ध छी, वचनवद्ध छी। रातुक भोजन काल प्रखण्ड प्रभारी एवं थाना प्रभारी हमरा लगे मे रहत। ओ दुनू हमर खास लोक थिक। दुनू केँ हम सभ तरहक निर्देश द' देबैक। जिला मे डी.एम आ एस.पी. केँ सेहो सूचित क' देबैक। अहि तरहक बिआह सँ कहूँ जाति-जाति मे दंगा ने शुरू भ' जाए।

विधायकक बुद्धि तेज-तर्रार होइते छैक। एखन मदिराक प्रभाव सँ हरिहर मंडलक बुद्धि पिजौल अस्तूरा जकाँ धारदार बनि गेल छलै। ओ कने दम लेलक, तखन फेर बाजल–मुखिया, हमर गप्प पर अधिक ध्यान दहीन। सभ सँ बेशी कारगर जे काज हेतहु तकरा द' कहैत छिऔक। पता लगा जे मंगली नामक छौंड़ीक नेनहि मे कोन गामक चमारक बेटा सँ बिआह भेल रहै। चमार जातिक माइन्जन अछि भूखी राम। चुनावक समय भूखी राम अपन जाति मे हमर नीक प्रचार करैए आ हमरा नीक भोट दिआबैए। हमहूँ ओकरा मेहनीतक नीक मुआबजा दैत छियै। भूखीराम हमर मुट्ठीक

लोक थिक। तोरा हम भूखीरामक नामे चिट्ठी दैत छिऔ। भूखीराम सँ मदति ल' क' मंगलीक जतय बिआह भेल हेतै ओतय ओकर विदागरी कराक' पठा दहीन। महादलित संगे पंगा लेबाक कियो साहस नहि क' सकैत अछि। जखन मंगली अपन असलीका सासुर चल जायति तखन गंगा बिआह करत ककरा सँ? ने रहत बाँस आ ने बाजत बँसुरी। कोनो बाधा नहि होउक ताहि लेल प्रशासन तोहर मदति मे रहबे करत। आधुनिक प्रजातंत्र मे भूखीराम आ भूखीरामक जाति मे कोन तरहक शक्ति समायल छै से तमाम साधुपूराक लोक देखत। सभ बात बुझि गेलहिन ने?

मनहिमन कोबी हरिहर मंडलक बुधियारी एवं कार्यकुशलता कैँ प्रणाम कैलक। ओहिना कियो विधायक बनि जायत से कहूँ भेलैए! विधायक बन' लेल कम सँ कम एक पसेरीक बुद्धि चाही।

लग मे ठाढ़ कोबी कैँ गगन आदेश देलक–तुरंत साधुपूरा जो आ एखने सिनुरिया काकी कैँ बजा क' ला।

6.

कोबी कटहर गाछक नीचाँ उदास बैसल छल। राधा-कृष्ण मंदिर आ हीरा मौसीक सिकमी घरक बीच मे ओ गाछ छल। गाछक ठीक सोझाँ-सोझी नवकी पोखरि रहै। अहल भोरुका समय रहै। झुंडक झुंड छौंड़ा-छौंड़ी पोखरिक दक्षिणबरिया भिण्डाक सफाइ क' रहल छल। काल्हिए छठिक सँझुका अर्घ पड़तै। छठि पाबनिक नियम-निष्ठा अति कठोर तरहँ पालन होइत छल। सभ कैँ धिया-पूता रहै। सबहक कबुला-पाती होइत छलै। दैव सँ अरारि क' आफद बेसाहब की नीक बात हेतै?

बचकुनेक जिम्मा पोखरिक सफाइक काज रहै। ओ पक्का घाट पर ठाढ़ घाटक दुनू कातक सफाइ काजक निरीक्षण क' रहल छल। मालिक बाबाक परिवारक अर्घ देबाक घाट पूब दिस रहै। ओकर सफाइ दिस बचकुन अधिक ध्यान देने छल। सफाइक बाद घाट पर बाँसक बत्तीक घेराबा पड़तै, ओतय आइए राति सँ दीप जरतै, स्थान कैँ सभ तरहँ स्वच्छ आ पवित्र बनाओल जेतै।

एकाएक बचकुनक नजरि कोबी पर पड़लै। अरौ सार नहितन! ई आफदक जड़ि दुमूहाँ साप अहि ठाम बैसल की क' रहल अछि? बचकुन कटहरक गाछ लग पहुँचि क' कोबी कैँ टोकलक—तोँ एतय किएक बैसल छैँ? की भेलौए? किएक मुह लटकल छौ?

—भाइ! हमर दुखक नहि ओर। सागर सँ गहींर आ आकाश सँ ऊँच हमर दुख अछि। हम की करु, कत' जा क' कपार फोड़ू, किछु सुझिए ने रहलए।

—कपार फोड़ै ले सभ सँ उत्तम स्थान हेतौ नवकी पोखरिक पक्का घाट। कहलकै की ने, बात गढ़े छथि। तोरा भेलौए की जे तोँ कपार फोड़बैँ?

—बचकुन भाइ! हम आइ तक ककरो अपकार नहि केलियै। कवि बनि समाजक उपकारे केलियैए। कवि त' मधुमाछी होइए। जहिना मधुमाछी फूलक पराग चुसि मधु बनबैए तहिना कवि प्रकृति मे पसरल सुन्दर-सुन्दर वस्तुक अनमोल भाव कैँ निचोड़ि क' कविता बनबैए, सभक हृदय जुड़बैए। हम कवि बनि सभ तरहक पुनीत काज कैलहुँ। तकर बदला मे हमरा प्राप्त की भेल? केवल दुख आ कष्ट। गुरुवर दीनजी कहलनि, लोकक सेवा कर, मेवा भेटतौ। मेवा त'दूर, दुखक भवसागर पार कर' लेल

आइ तक हमरा कियो खेबा तक नहि देलक।

—कवि मधुमाछी होइए आ की ललका बिढ़नी, तकर तसफिया कैँ छोड़। बात कैँ बिना घुरछी लगौने कह कि तोहर दुखक कारण की छौ?

—अगिला मास अर्थात अगहनक आरम्भे मे हमर प्राणेश्वरी कमली अपन सासुर चल जायति। जखन सँ हमरा ई समाचार भेटलए तखन सँ हमर संसार अंधकारमय भ' गेलए। ढाबुस बँग बनल हम एतय सँ ओतय कुदि-फानि रहलहुँए।

कोबीक दुखक कारण सुनि बचकुन कैँ प्रबल इच्छा भेलै जे एकर थुथुन पर मुक्काक प्रहार करी। मुदा ओ अपन रंज पर कब्जा कैलक आ कहलक—संसारेक नियम थिकै जे एक ने एक दिन छौंड़ी सासुर जाइत अछि। फतुरनक बेटी कमलीक विदागरी अगहन मे हेतै, अइ मे अजगुत बला कोन बात भेलै? तौँ कि कम करमघट्टू छैँ। तोहर बाप तोहर बिआह करा तोरा कनियाँ आनि देलकौ। पता नहि तौँ कोन प्रकारक उछन्नर कैलहिन जे तोहर कनियाँ पड़ा गेलौ। आब तौँ एक ठाम सँ दोसर ठाम बौआ रहल छैँ।

कोबीक मुखमंडल पर औरो उदासी पसरि गेलै। ओ कुहरैत बाजल—हम अपन कनियाँ कैँ डेबि नहि सकलहुँ ताहि मे जँ हमर कोनो दोख होअए त' बचकुन भाइ, तोहर खिआयल प्लास्टिक चट्टी आ हमर कपार। बात की भेल रहै से कहैत छिअह। तहिया हम अपन काव्य-गुरु सदानन्द झा 'दीन'क प्रभाव मे रही। गुरुजीक कृपाक चलिते कवि-सम्मेलन मे हमरा यथेष्ट यश एवं प्रतिष्ठा भेटैत रहए। हम राति-दिन कविताक रचना करैत-करैत सपन लोक मे विचरण करैत रही। तोरा त' बुझले हेतह। नहि, नहि, गलती भ' गेल। कविता दिआ तोरा की कपार बुझल हेतह। बानर की जान' गेल आदीक सवाद। जे भेल रहै से कहैत छियह। कवि जखन कविता बनबैए त' ककरो ने ककरो ओकरा कविता सुनायब जरूरी भ' जाइत छैक। ककरो जँ नहि सुनौतै त' कवि कैँ पानिओ नहि पचतै। श्रोताक अभाव मे हम अपन पत्निए कैँ अपन रचल कविता सुनब' लागल छलहुँ। कहियो-कहियो त' मध्य राति मे हुनका जगा क' कविता सुना दियनि। हम कते टा गलत काज क' रहल छलहुँ तकर ज्ञान हमरा बाद मे भेल। हम गछै छिअह बचकुन भाइ जे हमर अत्याचार कैँ ओ कोमल कामिनी सहि नहि सकलीह। ओ हमर कविता सुनैत-सुनैत अकछा गेलीह आ एक दिन कवि सम्मेलन सँ प्राप्त आधा दर्जन डोपटा ल' अन्तर्ध्यान भ' गेलीह।

एतबा बाजि कोबी अपन आँखिक नोर पोछलक आ पुनः बाजब शुरू कैलक—भाइ! आब तोहर दोसर लान्छना जे हम एकठाम सँ दोसर ठाम किएक छड़पैत छी, तकरो कारण जानिए लैह। हम रामक पुजारी नहि, कृष्णक भक्त छी। तखन एक

नारी सँ हमरा संतुष्टि कोना भेटत? हमरा त' डारि-डारि, पात-पात घुमैए पड़त। आब त' पनघट नहि होइत छै, पोखरिघट होइत छै। एखनहुँ हम पोखरिघट लग आबि ओहि पद्मिनी कैँ ताकि रहल छी जे कमलीक खाली कएल सिंहासन पर बिराजमान भ' हमर प्रेरणा बनतीह।

बचकुन कैँ नीक जकाँ मोन मानि गेलै जे जँ ओ अधिक काल तक कोबियाक लग मे रहत त' ओकरा कोबिया कैँ अबस्से पीट' पड़तैक। ओ घुमि जयबा लेल पाछाँ घुरले छल कि कोबी कहलकै—बचकुन भाइ! तोँ भेटि गेलह त' एकटा बहुत जरूरी समाचार सुनने जाह।

—तोहर हम एकोटा गप्प नहि सुनबौ। तोँ पापी छँ, लफन्दर छँ। एक ने एक दिन तोहर कपार लाठी सँ अबस्से चूड़ल जेतौ।

—भाइ! हम अपन काव्य-गुरु दीनजीक अभिन्न मित्र श्री अठौरी लाल 'निशाकर'जीक कथन दोहराबैत छिअह जकरा सुनिए लैह। निशाकरजीक कहब अनुसार लफन्दरी एवं नेतागिरी स्वभावतः एकहि किस्मक काज अछि। आब लफन्दरी मे मारि खायब आ नेतागिरी मे गारि सुनब साधारण बात भेल। हमर कपार फोड़ल जायत तकर हमरा एको मिसिया फिकिर नहि अछि। फिकिर त' दोसरे बात ल' क' अछि।

—कोन दोसर बातक तोरा फिकिर छौ?

—तोहर प्रगाढ़ मित्र गंगा मालिकक भविष्य ल' क'। गंगा मालिक एवं मंगलीक प्रेमक खिस्सा गगन मालिकक कान तक पहुँचि गेलैए। हीरा मौसी दुनूक बिआहक स्वीकृति द' देलखिनए तकरो खबरि हुनका भेटि गेलनि अछि। मुखिया आगिक बमगोला बनि फुफकारि रहलए। अहि तरहक बिजातिए बिआह ओ होब' नहि देथिन तकर शपथो खा चुकलाए। मुखियाक मदति लेल प्रधानाध्यापक मिसरी लाल ताँती आ विधायक हरिहर मंडल फाँड़ कसि चुकलाए। बिआह अपन जातिए मे होअय नहि त' मिथिला मे बबंडर उठि जेतै, मारि-दंगा पसरि जेतै, ताहि तरहक विचार विधायकजी डी.एम. एवं एस.पी. कैँ प्रेषित क' चुकलाहए। प्रशासनक पूरा तैयारी भ' चुकलैए। प्रायः आइए मुखिया पुलिस-दरोगा संग एतय अओताह। मंगली कैँ घर मे बन्द क' क' पुलिसक पहरा बैसा देल जेतै। सिनुरिया काकी सभ तरहक तैयारी मे जुटि गेलिए। नेनपने मे मंगलीक बिआह झुटकाही गामक गंगुआ मोचीक बेटा ललुआ मोची संगे भ' चुकल छैक। ललुआ काल्हिए साँझ तक वर बनि साधुपूरा पहुँचि जायत आ छठिक भोरुका अर्घ दिन मंगलीक विदागरी करा क' ल' जायत। चमार जातिक सरगना मुखीराम सिनुरिया काकीक मदति लेल स्वयं ललुआ मोची संगे बुझू बरियात बनि एतय आओत। इएह भेल समाद जकरा कह' लेल बचकुन

भाइ, हम अहुछिया काटि रहल छलहुँ। अएँ यौ भाइ! जँ ई सभटा काज भ' जेतै, मंगली सासुर चलि जेतै त' अहँक दोस्त गंगा मालिकक की हेतनि? की एकरा ओ बर्दास्त क' पौताह? प्रेम रोगक पूर्ण परिचय हमरा नहि अछि। मुदा अहि रोगक कल्पना कर'मे की हर्ज? हे भगवान! जखन हम अइ द' सोचैत छी, मंगलीक गेलाक बाद गंगा मालिकक की दशा हेतनि, तकरा विचारैत छी तखन हमर कलेजा दू टूक मे फाट' लगैए।

कोबी फेर सँ अपन आँखिक नोर पोछलक। बचकुनक माथ कोबी सँ समाचार सुनि घिरनी जकाँ नाच' लगलै। ई की भ' गेलै? एकर खबरि अबिलम्ब गंगा लग पहुँचाब' पड़तै। अपन दोस्त गंगा लेल जँ बचकुन कँ प्राणक निछावर कर' पड़तै त' ओ करत।

बचकुन बताह बनल ओत' सँ बिदा भेल। कनिए आगाँ गेला पर ओकरा छेदिया भेटलै। पुछलकै—तोँ हमर दोस्त गंगा कँ देखलहुनहँ?

—अहल भोरे लगभग दू घंटा पहिने हम गंगा मालिक कँ फैटकी बाधक उतरबरिया धूर दिस जाइत देखने छलियनि। हुनका जरे ललित मालिक आ हुनकर हुअबाली बहुरिया सेहो छलथिन। मुदा बचकुन, तोँ एतेक घबड़ायल किएक छँ? किछु नव बात भेलैए?

—नव आ पुरान बात हम बाद मे कहबौ। छठि पाबनि लेल घाटक सफाइक काज भ' रहलैए। एखन छेदिया तोँ घाट पर जो आ हमरवला 'डिप्टी' कर। हमरा बरदा नहि, जाय दे। हमरा गंगा सँ भेट करब जरूरी अछि।

सही मे पल्लवी गंगा एवं ललितक संग फैटकी बाधक उतरबरिया धूर लग शिबू बबाक दर्शन लेल गेलि छलीह। तकर कारण रहै।

हीरा मौसी सँ भेट कैलाक बाद सँ पल्लवीक मोन उधिया रहल छलनि। ओ मौसीक असल परिचय जान' चाहैत छलीह। एतेक टा गाँव आ एतेक लोक, तखन मौसीक परिचय हेरायल-भुतिआयल किएक छल? पल्लवी कँ अनसोहाँत लगैत छलनि, उटपटांग लगैत छलनि। मात्र मालिक बाबा कँ मौसीक सभ बात बुझल छन्हि। मुदा बाबा त' आदर एवं सम्मानक एतेक टा ने चद्दरि ओढ़ने रहथि जे हुनका लग जेबा मे सभ कतराइत छल। स्वयं पल्लवी कँ सेहो बाबाक धाह दूरे सँ लगैत छलनि। ओ बाबा लग जा क' मौसी द' किछु पुछै मे धखाइत छलीह। पल्लवी पत्रकार बन' जा रहल छलीह। पत्रकारिता नामक कीड़ा हुनकर मोन कँ डँसने छल, चहुटने छल। पल्लवी कँ एको मिनट लेल चैन नहि छल।

पल्लवी पार्वती संग हुनके कोठली मे हुनके पलंग पर सूतल छलीह। निन्नक

अता-पता नहि छलनि। राति आधा सँ अधिक बीति चुकल रहै। ताही समय दूर, बहुत दूर सँ अबैत एकटा हलहली बला ध्वनि पल्लवीक कान सँ टकरायल। ध्वनि मे अजीबे मिठास रहै, दर्द रहै, तरंग रहै। ध्वनि एहन छल जतय संगीत अपन सम्पूर्ण कला संग अपन मूल स्वरूप मे अवतरित भेल होअय। नाद सँ निकलल हलहली पल्लवीक हृदय-स्थली कैँ स्पर्श करैत हुनक सुधि-बुधि कैँ तत्काले हरि लेलक। पल्लवी विभोर भ' गेलीह। आरोह एवं अवरोह मे पिराओल सप्त-सुरी अत्यन्त कर्णप्रिय छल। आब' वला संगीत मे एतेक ने वेदना भरल छलै जे पल्लवी कैँ बेकल क' देलकनि। साधुपूरा मे एहन संगीतक जादूगर के अछि?

पल्लवी पार्वतीक देह छुलनि। पार्वती जगले रहथि आ आब'वला मधुर संगीत मे तल्लीन रहथि। ओ कहलथिन—अहि संगीतक नायक छथि शिवू बाबा। अदौ काल सँ शिवू बाबा एतय रहैत छथि। मुदा ओ गाम मे नहि, गामक बाहर चौर-चाँचर मे बास कयने छथि। हिनका ने किओ कुटुम्ब छनि आ ने सम्बन्धी। ई की खाइत छथि, की पिबैत छथि ककरो किछु ने बुझल छै। जाड़, गर्मी, बरसात अर्थात् बारहो मास शिवू बाबा एकटा धोती पहिरने उघार देहे कोनो आड़ि-धूर पर पड़ल रहैत छथि। हिनकर कंठ सँ निकलल संगीत मे एहन ने आकर्षण छै, जादू छै जकरा सुनि क' समूचा ग्रामवासी अपन-अपन दुख-संताप बिसरि जाइत अछि। सभ हिनका सँ प्रेम करैत अछि, हिनकर आदर करैत अछि आ एक तरहँ हिनका ईश्वरक प्रतिनिधि मानि हिनकर पूजा करैत अछि। ककरो किछु ने बुझल छै जे शिवू बाबा के थिकाह, कतय सँ अयलाह। जँ ककरो किछु बुझल छै त' ओ छथि हमर सभक बाबा। मुदा हुनका पुछतनि कैँ? एकमात्र गंगा कैँ छोड़ि शिवू बाबा गामक आन-आन लोक कैँ अपना मे सटौ ने दैत छथिन। पल्लवी, अहाँ के सुनि कैँ आश्चर्य होयत जे शिवू बाबा गंगा कैँ अपन लग मे बैस' दैत छथिन आ ओकरा सँ गप्पो-सप्पो करैत छथिन। शिवू बाबाक स्नेह गाम भरि मे केवल गंगेटा कैँ प्राप्त होइत छैक।

पल्लवीक वयस अल्पे छल। सहज जीवन जिबैत ओ साधुपूरा गाम अपन शोध विषयक लेख पूर्ण करैक उद्देश्य सँ आयलि छलीह। ग्राम्य जीवन शहरक कोलाहल सँ हटल एक अलग किस्मक हेतै से पल्लवी लेल अनुमानित छल। तेँ गामक लोक एवं ओकर अन्य प्रकारक जीवन शौली कैँ देखि हुनका आश्चर्य नहि भेल रहनि। मुदा पहिले हीरा मौसी आ एखन शिवू बाबाक अद्‌भुत जीवनक वृतान्त सुनि पल्लवीक ओझरौट बहुत अधिक भ' गेल छलनि।

प्रातःकाल पल्लवी गंगाक संगे शिवू बाबा कैँ लग सँ देखैक उद्देश्य सँ बिदा भेल छलीह। ललित सेहो संग भ' गेल रहथिन। तेँ छेदिया तीनू कैँ फैटकी बाध

मे देखने छल।

जखन पल्लवी शिवू बाबाक समीप पहुँचली त' हुनका पूब दिस एकटक देखैत निर्विकार स्वरूप मे देखलनि। गंगा लग मे जा क' शिवू बाबा सँ आग्रह करैत कहलक–बाबा, पल्लवी नामक पाहुन अहाँ सँ भेट कर' लेल अयलीह अछि। ई ललित भैयाक संग पटने मे पढ़ैत छथिन। हिनका अहाँक संग वार्तालाप करक प्रबल इच्छा छनि।

शिवू बाबा किछुओ जवाब नहि देलनि। ओ घुमिक' पाछाँ दिस तकबो नहि कैलनि। हुनकर आँखिक पल स्थिरे भेल रहल। मुह सँ एको शब्द बाहर नहि भेल। मुदा पल्लवी बहुत समीप सँ शिवू बाबाक दर्सन कैलनि। एखन शिवू बाबाक दिव्य स्वरूप मे हजार ऋषि-मुनिक आभा विसर्जित भ' रहल छल। एहन महान आत्माक दर्शन बिरलेक नसीबवला कैँ होइत छैक। पल्लवी कैँ एक अनुपम अनुभूति भेलनि। शिवू बाबाक शरीर सँ एक तरहक ऊर्जाक बहिर्गमन भ' रहल छल जकर ताप कैँ अधिक काल तक सहब पल्लवीक लेल सहज नहि छल। पल्लवी हाथ जोड़ि प्रणाम कैलनि एवं हुनका अपन अर्जल एकांत मे छोड़ि आपस बिदा भ' गेलीह। गंगा आ ललित सेहो बिदा भेलाह।

चारूकात पाकल अध-पाकल धानक सीस सँ धरती पाटल छल। शीतक बोझ मे दबल वायु शान्त छल। एक अपरिचित सुगन्धि सँ वायुमंडल सुभासित छल। आकाश मे पसरल सूर्यक लालिमा अत्यन्त कोमल आ मीठ छल। रस्ताक चारूकात नरम-नरम हरियर कंचन घास पर पयर रखैत पल्लवी चलि रहलि छलीह। आ आनन्दे मगन छलीह। प्रकृतिक अति सुन्दर दृश्यक इच्छा भरि अवलोकन करैत पल्लवी जा रहलि छलीह आ गुनगुना रहलि छलीह। यद्यपि हुनकर मोनक ओझरायल गुत्थी आरो उलझि गेल रहनि, मुदा एखनुका उत्पन्न भेल हुनक मोनक भाव मे भूत आ भविष्यक चिंता मेटा गेल रहनि। पल्लवी वर्तमान मे रहब पसिन्न करैत छलीह। शिवू बाबाक दर्शन क' एक तरहक हर्ष, तृप्ति एखन हुनक मोन कैँ हिलकोरि रहल छल, गुदगुदा रहल छल।

पल्लवी थोड़बे दूर गेलि हेतीह आ की शिवू बाबाक नाद सँ बहरायल हलहलीवला संगीत हुनकर कानक यंत्र सँ टकरायल। 'बिन गोपाल भये वृज सूनो। कहाँ गये गोपाल।' गीतक पद एतबे। रातुक संगीत सँ हँटल कोनो दोसर राग। राग भौरवी छल आ की आन कोनो दोसर, तकर फरिछौट पल्लवी कोना करतथि। हुनक शास्त्रीय संगीतक ज्ञान शून्य छल। मुदा संगीतक सुर मे अजब मिठास भरल छल। मिठास संग दर्द। खासक' 'कहाँ गये गोपाल' पदक स्वरलहरी मे एतेक ने अनुराग आ

बेकलता समाहित छल जे पल्लवीक सांसारिक चेतना कैँ समाप्त क' देलक। पल्लवी ठामहि जमीन पर बैसि गेलीह आ अधीर भेलि संगीत सुन' लगलीह।

कखनहुँ काल संवेदनशील मनुक्खक हृदय मे संवेदनाक एहन भाव जागृत होइत छैक जाहि सँ ओकर संसारक आकर्षण सँ अरुचि भ' जाइत छै। दुख त' दुखे छी, ताहि क्षण अनायास प्राप्त भेल सुख सेहो जनलेबा होइत छैक। शिवू बाबाक गायनक प्रभाव किछु अही तरहेँ पल्लवीक अन्तर्मन पर पड़ल छल। एकाएक पल्लवी आकाश दिस तकैत सृष्टिकर्ता कैँ उलहन देब शुरू कैलनि–किएक तोँ मनुक्ख कैँ बनौलह? किएक ओकर हृदय मे एतेक भाव भरि देलहक? आत्मस्वरूप तोँ त' मनुक्खक हृदय मे रहैत छह ने? आब जखन संगीतक लय सँ मनुक्खक हृदय विदीर्ण भ' जेतै तखन तोँ कत' रहब'? तोरा तोहर करनीक फल भेटि जैतह ने?

पल्लवी कैँ तन-मनक सुधि नहि छलनि। ओ माटि पर बेसले-बैसल बड़बड़ा रहलि छलीह। ललित पल्लवीक हाथ पकड़ि हुनका जगौलनि। देवताक संगीत समाप्त भ' चुकल छल। पल्लवी आयलि छलीह तमाशा देख', एखन स्वयं तमाशा बनि गेलीह। कोनो अव्यक्त भाव सँ ग्रसित भेलि ओ घुमि क' मालिक बाबाक दलान पर पहुँचलीह।

बचकुन गंगा कैँ तकैत मालिक बाबाक खरिहान मे पहुँचल छल। किछुए काल पहिने गंगा पल्लवी एवं ललितक संग आपस आयल छल। खरिहान मे आने दिन जकाँ सभ तरहक काज भ' रहल छलै। दलानक पुबरिया देबाल सँ सटल चौकी पर मालिक बाबा मसनद पर ओँगठल आराम क' रहल छलाह। ओही ठाम कुर्सी पर गंगा बैसल छल। ओलती मे पटिया पर मटरा आ कल्लू मरड़ बैसल छलाह। कल्लूक आगाँ बही-खाता छिड़िआयल पड़ल छल। दलानक पछबारी कात एकटा बैँच आ थोड़ेक खालिए कुर्सी राखल छल।

कोबी सँ प्राप्त समाचारक बाद बचकुन कैँ एको सेकेण्ड लेल चैन नहि। ओ सभटा खबरि अतिशीघ्र अपन दोस्त तक पहुँचाब' लेल व्याकुल रहए। बचकुन हाथ नचा-नचा क' इशारा करैत गंगाक ध्यान अपना दिस अनबाक प्रयास क' रहल छल। ताही बीच ओ मोटर गाड़ीक आवाज सुनलक। बाढ़िक प्रकोप सँ पीड़ापुर सँ साधुपूरा अयबाक सड़क जर्जर छल, खाधि सँ भरल छल। तेँ मोटर गाड़ी साधुपूरा आबिए ने सकैत छल। कहियो-कहियो प्रखण्डक जीप दम तोड़ैत कहुना क' गाम तक पहुँचि जाइत छल।

जीपक आबाज सुनि बचकुने नहि, खरिहान आ दलान परहक सभटा लोक साकांक्ष भ' गेल। जीप नवकी पोखरिक पछबारी कात बुढ़बा पीपर गाछक लग आबि

क’ ठाढ़ भेल।

बचकुन पंचायतक मुखिया गगन यादव कैँ अबैत देखलक। ओकरा संगे ओकर घनिष्ठ मित्र मिसरीलाल ताँती, आ दू गोट सुखायल-टटायल सिपाही, कन्हा पर राइफल टँगने, सेहो छल। बचकुन के माजरा बुझल रहै। भय आ चिंता सँ ओकर देह सिहरि उठलै। ओ गूड़ बनब’वला चुल्हा लग नुका रहल। चुल्हा मे आँच राउत लगा रहल छल। राउत आँच लगौनाइ बिसरि क’ मूड़ी नमरा क’ अबैत गगन दिस ताक’ लागल छल।

गगन दलानक ऊपर आयल। ताँती आ दुनू सिपाही सेहो दलान पर बेंच लग ठाढ़ भ’ गेल छल। गगनक कद भुट्ट छलै। ठेहुन सँ नीचाँ छाबा तक नमरल ओकर कुर्ता, ओकर कद कैँ आरो बनठा बना देने छलै। जखन घृणा, द्वेष आ बदलाक भावक एकीकरण होइत छै तखन बुद्धि घास चर’ लगैत छै। गगन यादव अपन बाबा सँ बदला लेब’ आयल छल आ तँ आन्हर छल। ओकर चेहरा सँ क्रूर भाव टपकि रहल छलै। परोपकारी बाबाक शान्त जीवन मे जहर घोरक लेल सभ तरहक तैयारी गगन क’ चुकल छल। ओ दू डेग आगाँ बढ़ि बाबाक चौकीक समीप पहुँचल आ आँखि तरेड़ि हुनका देख’ लागल। मालिक बाबा चुपचाप स्थिर भेल बैसल रहथि। गगना डंक मारबे करत तकर हुनका अनुमान भ’ गेल रहनि। गंगा कुर्सी सँ उठि क’ देबाल सँ सटि सावधान भ’ ठाढ़ भ’ गेल छल। आँगन सँ आबि क’ ललित सेहो गंगाक लग मे पहुँचि गेल रहथि। पल्लवी आ पार्वती आँगन दिसुका केबाड़ लग आबि गेलि रहथि। कल्लू मरड़ बही-खाता सँ नजरि हटा गगन कैँ टकटक देख’ लगलाह। राउत सहटिक’ दलानक समीप आबि गेल। मटरा अपन मालिकक पयदान लग बैसल टुकुर-टुकुर ताक’ लागल।

गगन दाँत मिचने गुम्हरैत बाजल—अहाँ गंगाक बिआह मंगली सँ करा रहलहुँए?

मालिक बाबा जवाब नहि देलनि। गगन अपन दुनू हाथ कैँ भँजैत बाजल—यादव कुलक बेटाक बिआह चमार जातिक बेटी संगे! अहाँ कैँ लाजो नहि होइए? गंगा हमर सहोदर कनिष्ठ भ्राता अछि। हम ओकर गार्जियन छियै। हम एहन बिआह कथमपि ने होब’ देबैक। जँ अहाँ हमर विरोध करब त’ हम अहाँक से ने दुर्गति करब जे इलाका भरिक लोक देखत। निर्लज्ज नहि तन...!

मालिक बाबा तइयो किछु नहि बजला। मुदा हुनकर दुनू आँखिक ऊपर पकलाहा भौँह सटि गेल छलनि। एमहर गंगाक भृकुटि तनि गेल रहै। बाबाक अपमान कर’वला कैँ ओ जीवित छोड़ि देत? गंगा तमतमायल नजरिए गगन कैँ देखि रहल छल।

जवाब नहि पाबि गगनक धृष्टता मे वृद्धि भेलै। ओ अपन स्वर के प्रखर बनबैत बहुत तरहक प्रचलित-अप्रचलित शब्द, मुहाबराक प्रयोग करैत कहलक—अहाँ हीरा मौसीक कहल मे छी। ओ मौसी नहि डाइन अछि। डनियाँ अहाँक मति हरि लेने अछि। ओकरा एको बीत खेत नहि छैक, एको पाइक आमदनी नहि छैक। तइयो ओ रईस बनल जीवि रहलि अछि। ओ हमरे अन्न खा क' हमरे परिवार कैँ सत्यानाश कर' लेल एखन तुलि गेलए। हम ओहि छुछुनरियाक आरो करतूत कैँ बर्दास्त नहि करबै। ओहि मौगीक सर्वनाश क' देबै। डयनियाँक घर मे आगि लगा ओकरा जीविते डाहि क' यमलोक पहुँचा देबै। ककर मजाल छइ जे हमरा रोकत?

भारी-भरकम आबाज मे मालिक बाबा आदेश देलनि—गंगा, अहि अलच्छा कैँ ठाँठ पकड़ि एतय सँ बैला'।

ठाँठ पकड़ि बैला आ कि ठाँठी दाबि एकर इहलीला समाप्त क' दे। रंजे माहुर भेल गंगाक आँखिक चिनगारी बरसि रहल छल। गंगा ओही ठाम देबालक कोन मे राखल भाला उठौलक आ गगन दिस तानि देलक।

पछिला अनेक बर्खक अरजल सुख, शांति, यश, प्रतिष्ठा एवं मर्यादा एक पापी गगनक चलते ध्वस्त भ' गेल छल। गंगाक भयंकर रौद्र रूप देखि गार्जियन बनल गगनक हवा निकलि गेलै। ओकर सिट्टी-पिट्टी गुम भ' गेलै। गंगाक हाथक भालाक नोक मे अपन मृत्युक छाँह देखि गगनक भीतर आतंक पैसि गेलै।

मिसरीलाल ताँतीक आँखि कुइर छलै। गगनक पेट फाड़लाक बाद गंगा हाथक भाला ओकरे पेटक अंतरी बाहर करत। मात्र अनुमाने टा सँ ओकर कुइरा आँखिक डिम्बा बाहर निकलि गेलै। दुनू सिपाही हाथक राइफल अंग्रेज जमानाक छल। अहिंसक भारत मे प्रायः ओइ राइफलक उपयोग कहियो भेले ने रहैक। दुनू सिपाही दरमाहा उठबैत छल सैह टा। तैँ ईमानदारी सँ अपन कर्त्तव्यक निर्वहन करैत दुनू सिपाही अपन-अपन राइफल गंगा दिस तानि देलक। मुदा राइफलक ओजन अधिक रहलाक कारणेँ दुनु सिपाहीक पयर डगमगाय लागल रहै।

बाबा एवं हुनक पूज्या हीरा मौसी, दुनूक प्रतिए गगन अभद्र शब्दक प्रयोग आ दुर्व्यवहार कयने छल। ताहि पर सँ बाबाक हुकूम से तामिल भ' गेल रहै। गंगा गगनक छाती मे भाला भौँकि देबे टा करत, तकर शत-प्रतिशत सम्भावना बनि गेल रहै। मुदा तखने ललित कुदि क' गंगा आ गगनक बीच पहुँचि गेल आ चिचिआइत बाजल—रुकि जो गंगा। अनर्थ नहि कर।

गंगा थकमकाइत रुकि गेल। ललित गगन दिस घुमैत ओकरा ठेलैत बजला—बाबाक अपमान कर' सँ पहिने अहाँ मरि किएक ने गेलहुँ? अहाँ मनुक्खक भेष मे

जानवर छी। एतय सँ पड़ाउ नहि त' मारल जैब।

ललित ठेलैत-ठेलैत गगन कँ खरिहान मे अनलनि आ दमसबैत कहलनि–पड़ाउ, पड़ाक' जान बचाउ। हम अधिक काल तक गंगा कँ रोकि नहि सकबै। ओहुना जाहि तरहक अहाँ निंदनीय काज कैलहुँ अछि ताहि मे अहाँ कँ दंड भेटब उचिते हेतै। हम फेर कहैत छी जे पड़ाउ।

ताबे तक ताँती आ दुनू सिपाही दलान सँ उतरि खरिहान मे पहुँचि गेल छल। ओकरा सभ कँ चेतबैत ललित ललकारा देलनि–हरौ मूर्ख, भाग। जल्दी भाग। बेहुदा नहितन।

गगन अपन मित्र ताँती आ रक्षक दुनू सिपाही संग लंक लेलक। राउतक हाथ मे लाठी छल। राउत जुमाक' लाठी फेकलक। मालिक बाबा एवं गंगा मालिकक दुश्मन कँ ओ बेदग कोना जाय दितै। राउतक निशाना ताँती पर छल। निशाना अचूक रहै। लाठीक हूर ताँतीक रीढ़ पर बजरलै। ताँती लटपटायल। मुदा लोभी, दुष्ट आ कुकर्मी त' निर्लज्ज होइते अछि। ताँती लाठीक मारि सहि लेलक आ पड़ाइते रहल।

आँखिक पल खसैत मे सभटा तमाशा भ' गेल। एकटा भयंकर बिर्रो आयल आ सभक हृदय पर बज्रक आघात क' बिला गेल। सभक मोन तीत भ' गेलै। पार्वती त' हिचुकि-हिचुकि क' कान लगलीह।

ताही काल मटरा घोघियाइत अनघोल कैलक–गंगा मालिक दौडू, दौड़ि क' आउ। देखियौ ने मालिक कँ की भ' गेलनि?

तमाम लोक मालिक बाबा दिस झपटल। हुनका ऊर्द्ध साँस चलि रहल छलनि।

पल्लवी बाबाक नाड़ी छूलनि। फेर ललित सँ कहलनि–बाबा बेहोश छथि। एखुनका कांडक चलते हिनका मूर्छा आबि गेलनिएँ। मुदा अधिक चिंता करक जरूरति नहि अछि। नाड़ीक गति सामान्ये छै।

पल्लवी पार्वती सँ पानि लाब' लेल कहलनि। गंगा बाबाक दशा देखि अपना कँ सम्हारि नहि सकल, बाबाक पयर पकड़ि कान' लागल।

पार्वती लोटा मे पानि अनलनि। पल्लवी बिना गंगाक रुदन पर ध्यान देने बाबाक उपचार मे लागि गेलीह। ओ पानिक छिट्टा बाबाक माथ, चेहरा आ गरदनि पर छिटलनि। फेर गमछा भिजा क' बाबाक देह पोछ' लगलही। पार्वती कनितो रहलीह आ बाबाक पयरक तरबा कँ सहलाबैत रहलीह।

सभक सहयोग, मनोकामना, बाबाक प्रतिए ममता अपन विशिष्टता देखौलक। जीवनक डगरक अन्त कत' छैक, के जानलकए? मुदा बाबा कनिएँ कालक बाद होश

मे आबि गेलाह। ओ आँखि खोललनि आ कहलनि—आब हम ठीक छी।

ताबे तक साधुपूराक सभ लोक, स्त्रीगण-पुरुष, बाले-बच्चे खरिहान मे जमा भ' चुकल छल। सभक चेहरा उदास आ अगिला समाचार सुन' लेल व्यग्र। ललित सभ कैँ सम्बोधित करैत कहलनि—ईश्वरक अनुकम्पा सँ बाबा होश मे आबि गेलाह। ओ स्वस्थ छथि। चिंता करबाक प्रयोजन नहि अछि। अहाँ सभ अपन-अपन काज लेल जाउ।

मालिक बाबा नीक भ' गेलाह, गामक लोक निश्चिन्त भेल। बाबेक कुशल साधुपूराक कुशल अछि ने? मुदा गगन मुखिया एहन लथार किएक चलबैत छथि? गगन सनक सनकल मनुक्ख जँ मालिक बाबाक परिवार मे नहिए जनमितए त' भगवानक किछु बिगड़ि जैतनि थोड़बे? हौउ, ऊपरबलाक फैसला मे मीन-मेष निकालब ठीक नइँ हेतह। आइ छठि पाबनिक खरना थिकै। चलै-चलह अपन-अपन काज मे।

बबंडर उठल मुदा शान्त भ' गेल। खरिहान खाली भेल। माहौल सामान्य भ' गेल।

ओही दिन बेरिया उखराहा मे मालिक बाबा पल्लवी एवं ललित कैँ अपन शयनकक्ष मे बजबौलनि। गंगा ओतय पहिने सँ छल। पटिया पर कल्लू मरड़ सेहो बैसल रहथि। कोठली मे इजोतक अभाव रहै तैँ एकटा लैम्प जरा देल गेल रहै। आँगन दिसका दुनू खिड़की खुजल रहै तथापि घरक वायु मे धूपक सुगन्धि भरल छलै।

मालिक बाबा अपन पलंग पर बैसले-बैसल कहलनि—आइ एतय, खास क' पल्लवीक सोझाँ मे जे भेलै से नहि होइतै त' ठीक रहितए। मुदा अपन वश मे किछुओ ने छैक। जखन जे किछु होयबाक रहैत छै से भ' क' रहैत छैक। सभटा दैवक इच्छा। हमरा दुख अछि आ हम पल्लवी बेटी सँ क्षमाप्रार्थी छी।

पल्लवी हाथ जोड़ि एहन भाव प्रदर्शित कैलनि जे बाबाक क्षमा माँगब उचित नहि। बाबा आगाँ कहलनि—कोनो बातक आरम्भ होइत छै त' ओकर अन्त अबस्से होइत छैक। हीना दाइ जनिका लोक हीरा मौसीक नामे सोर पाड़ैए आ शिव कुमार मिश्र जनिका सभ शिवू बाबा नामे चिन्हैत अछि तनिका दुनूक जीवन परिचयक हम एखन खुलासा करब। एकर सम्पूर्ण जानकारी हमरा अछि आ कल्लू कैँ छनि। तकर कारण जे हमर आ कल्लूक जीवन हीना दाइ एवं शिवकुमार मिश्रक जीवनक संग फैँटल अछि। शपथ नहि, मुदा एक तरहक निश्चय अबस्से कयने छलहुँ जे हीरा दाइ एवं शिवकुमारक जीवनक नुकायल भाग कैँ कहियो प्रकाशित नहि करब। ककरो एकरा जनबा लेल इच्छो किएक हेतै? मुदा हीना दाइ सँ एकर जानकारी भेटल जे पल्लवी अहि बात कैँ जान' लेल इच्छुक छथि। अस्तु, पल्लवीक इच्छा कैँ सम्मान

करैत हम हीरा मौसी आ शिवू बाबा, सैह ने दुनूक प्रचलित नाम अछि, दुनूक जीवनक वृहत परिचय अहाँ सभ कँ कहब।

पल्लवी सचेत भ' गेलीह। मैथिली भाषा मे सम्भाषण होइतहुँ ओ बाबाक सब बात कँ नीक जकाँ बुझि रहलि छलीह। ओना त' पल्लवीक साधुपूराक यात्रा हुनका नव-नव जानकारी देने छल, मुदा हीरा मौसी एवं शिवू बाबा सनक व्यक्तित्वक महान आ आदर्श प्राणी साधुपूरा मे किएक छथि, अहि प्रश्नक उत्तर हेरायल छलै। एखन मालिक बाबा ओही अनबूझ पहेलीक खुलासा कर' जा रहल छलाह। पल्लवीक मोनक मुराद पूरा होब' जा रहल छलनि। ओ एकाग्र भ' बाबाक बात सुन' लगलीह।

मालिक बाबा कने विश्राम कैलाक बाद कहलनि—अजुका घटना, नहि नहि, दुर्घटनाक चलते हम एकाएक शरीर सँ बहुत कमजोर भ' गेलहुँए। तेँ हीना दाइ एवं शिवकुमारक जीवनक खिस्सा कल्लू कहताह। जतय आवश्यकता हेतै अथवा जे भाग कल्लूक जानकारी सँ हटल हेतनि ओतए हम अपन दिस सँ कथन मे जोड़ि खिस्सा कँ स्पष्ट आ पूर्ण करब।

कल्लू मरड़ सुतरी मे बान्हल अपन चश्मा कँ कान पर सँ उतारलनि आ खिस्सा कहब शुरु कैलनि।

7.

जाहि साल भारत आजाद भेल रहए, पंडित बुद्धिनाथ मिश्रक पुत्र शिवकुमार मिश्र सोलह बर्खक, महावीर यादवक बालक ठक्कन यादव पन्द्रह बर्खक आ रामजी मरड़क नेना कल्लू मरड़ अन्दाजन सात-आठ बर्खक छलाह। तहिया साधुपूरा गाम नहि, पीड़ापुरक एकटा टोल छल। सभ जाति मिलाक' लोकक आबादी सयक भीतरे।

पीड़ापुर मे कुल सात गोटे तौजी, तकर मालिक जमींदार हनुमान भगत। हनुमान भगत पैघ जमींदार रहथि। हुनकर जमींदारी आन-आन गाम मे सेहो रहनि। साधुपूरा मे भगतजीक मौजे। जोता जमीन कलम-गाछी, बँसबारि-खरहोरि आ परती-पराँत मिलाक' कुल साठि बीघाक आस-पास। हुनकर कचहरी गामक आबादी सँ हटल असराहा गैर-मजरुआ खास खाता मे। बड़द, महीस, गाय तकर संगे चरबाह-हरबाह, कमतिआ-भनसिया आ समक मैनेजर कइएक पुस्त सँ विश्वासी, ईमानदार आ अपन काज मे पटु रामजी मरड़। रामजी कचहरिएक एक भाग मे बनल फूसक घर मे सपरिवार रहैत छलाह। जमींदार हनुमान भगतक कोठी दरभंगा शहर मे छल। मालिकक जिरातक आमद-खर्च एवं रैयत सँ प्राप्त मालगुजारी, सभ काजक हिसाब रामजी महिना मे एक बेर दरभंगा जा क' पहुँचा दैत छलथिन।

बाबूलाल यादव आ महावीर यादव सहोदर। बाबूलाल नावल्द। महावीर कँ बहुतो कबुलाक बाद मात्र एकेटा संतान, ठक्कन। ठक्कन अपन-बाप-पित्तीक लगभग नौ बीघा जमीन आ दस कट्ठा घराड़ीक असगरे वारिस छला।

साधुपूराक कोन कथा, समूचा पीड़ापुर पंचायत मे ब्राह्मणक एकेटा घर, जतय रहैत छलाह पंडित बुद्धिनाथ मिश्र। इलाका भरि मे हुनक बड़ आदर-सत्कार होइत छल। नियम-निष्ठाक पालन कैनिहार बुद्धिनाथ मिश्र सभक पूजा-पाठ, बिआह-दुरागमन, मुंडन आदि संगे भागवत पाठ अर्थात् पुरोहितक सभ काज करैत छलाह। हुनकर अचल सम्पत्ति मे मात्र सात कट्ठाक घराड़ी। मुदा जजमनिका सँ हुनका एतेक अन्न-टाकाक आमदनी भ' जानि जे कोनो तरहक त्रुटि नहि रहनि। भगतजीक कचहरी सँ अगौं स्वरूप चाउर, दालि, गूड़, घी, दूध, फल एवं वस्त्र बुद्धिनाथ मिश्र कँ नियमपूर्वक प्राप्त होइत रहनि।

बतरिया रहलाक कारणे शिवकुमार आ ठक्कन मे प्रगाढ़ मित्रता छल। पछिलगुए सही, कल्लू सेहो दुनूक संगे घुमैत-फिरैत छलाह। पीड़ापुर मे अंग्रेज जमानाक मिडिल स्कूल छल। शिव कुमार आ ठक्कन मिडिल पास रहथि। तइ सँ आगाँ ने पढ़ाइक चलन रहै आ ने बेगरता। थोड़े दिन लेल शिवकुमार कैँ राघोपुरक संस्कृत पाठशाला मे अबस्से पठाओल गेल रहनि, किएक त' पुरोहितक पुत्र कैँ संस्कृतक ज्ञान चाहबेटा करी। मुदा मायक मृत्यूपरान्त जखन मुखाग्नि देब' शिवकुमार गाम अयलाह त' घुमि क' राघोपुर नहि गेलाह।

कल्लू कहिओ कोनो स्कूलक मुह नहि देखलनि। मुदा भगतजीक कहचरी मे नियुक्त देवानजी सँ पढ़बा जोग आखर, हिसाब जोड़ै लेल अंक आ खेत नापौ लेल डिस्मिलक नीक ज्ञान हासिल क' नेने छलाह।

ओइ समय मे मनोरंजनक साधन सीमित छल। देहात महक नाटक, कुस्ती आ कमला-जीबछ धारक कात लगएबला मेला देखै लेल दस-बीस कोस पैदल जायब साधारण बात रहैक। शहर मे कहियोकाल सर्कस अबै, मीना बाजार लगै त' गाम-गाम मे गर्द पड़ि जाइक। गामक छौंड़ा नुका क' मौतक छलाँग देखै लेल जैबेटा करए। मनोरंजन मे सभ सँ आगाँ छल सिनेमा। सिनेमा देखै काल हाफ टाइम मे सिनेमाक गीतक किताब बिकाइत छल, मूल्य एक आना। शिवकुमार आ ठक्कन जहिआ कहियो सिनेमा देख' जाथि त' गीतक किताब अबस्से कीनथि। तकर कारण रहै। शिवकुमारक गाओल सिनेमाक गीत जेना 'ओ दूर के मुसाफिर, वादा न भूल जाना। राताँ हुई अंधेरी, तूँ चाँद बन के आना' वा 'एक दिल के टुकड़े हजार हुए, कोइ यहाँ गिरा कोइ वहाँ गिरा।' एतेक ने कर्णप्रिय होइत छलै जे गामक लोकक कोन कथा, राही-बटोही कान पाथि क' गीत सुनए आ प्रसन्नचित्त अगिला यात्रा लेल डेग उठाबए।

पछिला थोड़ बर्ख सँ लहेरियासरायक पोलो मैदान मे दुर्गा पूजाक अवसर पर पैघ मेला लागब प्रारम्भ भेल रहै। नाटक, नाच, नटबाक करतब, पतिआनी मे सजल दोकान आ आस-पास गामक छौंड़ा-छौंड़ीक ठेल्लम-ठेल्ला। मुदा सभ सँ अधिक जकर चर्चा रहै ओ छल संगीत-सम्मेलन। भारतक कोन-कोन सँ प्राचीन शास्त्रीय गीतक नामी-नामी गबैया, तबला-सितार-सारंगी-बाँसुरी वादक कैँ आमंत्रित कयल जाइत रहै। संगीत सभा बेजोड़ होइत छलै। दू शरीर एक आत्मा, शिवकुमार आ ठक्कन अइबेरुका दुर्गापूजाक मेला देखक प्रतिज्ञा कैलनि। मुदा बाधा रहै। बाधा रहै सवारी एवं कैंचा। जँ दुनू दोस्त अपन-अपन गार्जियन सँ मेला देखबा लेल रुपैयाक माँग करितथि त' रुपैयाक बदला मे कनैठी भेटितनि आ ऊपर सँ 'अवारा बनि गेल' से उपाधि।

मुदा अहि बाधाक निदान कल्लू कैलनि। कल्लूक बाप रामजी मरड़ कैँ दरभंगा ऐबा-जैबा लेल जमींदार साइकिल देने छलथिन। अस्तु, सवारीक इन्तजाम भ' गेलनि। कल्लू अपन आदर्श अभिभावक शिवकुमार एवं ठक्कन लेल सभ तरहक जोखिम उठा सकैत छलाह। कल्लू जोखिम उठौलनि। कल्लू अपन बापक काठक कन्तोड़क कब्जा कैँ टकुआ सँ अलगा सात गोट रुपैया चोरौलनि। ताहि समय मे सात रुपैया सँ दरभंगा जिलाक सभटा खुशी खरीदल जा सकैत छल।

साइकिलक ड्राइभर बनल ठक्कन। पछिला केरियर पर धोती-कुर्ता पहिरने खालिए पयरे शिवकुमार बैसला। साइकिलक अगिला डंटा पर बैसला कल्लू। कल्लूक भाव-भंगिमा सँ एहन खुशी छलकि रहल छल जेना ओ सिनेमाक हिरोइन सुरैया कैँ देख' जा रहल होथि। सप्तमी, अष्टमी आ नवमी, मेला तीन दिनक। मेला मे पहुँचि तीनू दुर्गा माताक मूर्तिक दर्शन कैलनि, चोरौल रुपैया मे सँ एक-एक आना दक्षिणा चढ़ौलनि, चारि-चारि आना मे तीनू भरिपेट पूड़ी-तरकारी-जिलेबी खैलनि आ मस्त कलन्दर बला नाटक देखलनि। एक दिन बीतल, दोसरो दिन बीति गेल।

तेसर दिनुक गप्प थिक। समय भेल बहुरुपिया। मनुक्ख भेल विधाताक खिलौना। लिखल नसीबक भोग कर' लेल जुगुत लगा क' विधाता मनुक्ख कैँ उचित अवसर पर उचित जगह पहुँचा दैत छथिन। तेहनेसन बात भेल रहैक। तीनू संगीत सभा मे पहुँचल रहथि। सामयाना संगीत प्रेमी सँ भरल छल। संगीतक प्रोग्राम चलि रहल छल। रातिक बारह बजे माइक पर एनाउन्स भेल रहै जे आब भारतक सुप्रसिद्ध तराना गायक निसार हुसैन खाँक गायन शुरू हैत। निसार साहेब स्टेज पर अयलाह। हुनक आलाप शुरू भेल। कल्लू कैँ निन्न पछाड़ि देने छलनि। ओ ठक्कनक अढ़ मे फौँफ काट' लगला। ठक्कन धरि जगले रहलाह। शिवकुमार कैँ शास्त्रीय संगीतक ज्ञान नहिएक बरोबरि छलनि। मुदा एखन ओ एकाग्र भ', एकतरहेँ बेसुध भेल निसार हुसैन खाँक तराना मे डुबि गेल छलाह। समयक हिसाब कोना रहितए? समय त' स्वयं स्थायी सँ द्रुत आलाप मे जयबा लेल आकुल छल। शिवकुमार कैँ निसार साहेबक गायन मे कोन सुआद भेटलनि से त' वैह जनता, मुदा ओ तल्लीन भेल गायन कैँ सुनैत रहलाह। तीन घंटाक बाद निसार साहेबक गायन मे बिराम पड़ल। शिवकुमारक चेतना आपस आयल। ओ अधीर भेल ठक्कन सँ कहलनि—हम हिनका सँ हिनकर डेरा पर अलग सँ भेट करए चाहैत छी।

शिवकुमारक आतुरता कैँ परखि कैँ ठक्कन जवाब देलनि—कनिकबो चिंता नहि करू। हिनकर डेराक पता लगा हिनका सँ अहाँ कैँ भेट करा देब। भोर भ' रहलैए। एखन मुदा अपन सभक डेरा पर चलब ठीक हैत।

निसार हुसैन खाँ कैँ जखन संगीत-सभा मे भाग लेबाक निमंत्रण भेटल रहनि त' हुनका प्रसन्नता भेल रहनि। मिथिला आ मिथिला मे दरभंगा। दरभंगा जिला मे अमता गाँव। अमता गाँव मे रहैत छथि ध्रुपद सम्राट रामचतुर मल्लिक। संगीत-सभा मे रामचतुर मल्लिक अवश्ये रहताह। निसार साहेब कैँ रामचतुर मल्लिक सँ ध्रुपद सुनबाक अवसर भेटतनि। ओ तत्काल संगीत-सभा मे भाग लेबाक निमंत्रण स्वीकार करैत संयोजक कैँ खबरि पठौने रहथिन जे हम अपन साज बजौनिहार, खबास, बाबुर्ची एवं खेबा-पीबाक सभ वस्तु ल' क' पहुँचब। संयोजक कैँ एको टाकाक खर्च हुनका लेल कर' नहि पड़तनि। हुनका लेल संगीत-सभाक संयोजनक केवल एकटा फैल, साफ-सुथरा डेराक इन्तजाम क' क' राखथि।

एकटा खाली पड़ल मकान मे निसार साहेबक आदेशानुसार सभ तरहक नीक इन्तजाम क' देल गेल छल। निसार हुसैन खाँ पैघ खानदानक वारिस छलाह। संगीत हुनकर शौख रहनि। हुनकर नोकर-चाकर एवं वाद्य बजैनिहार रेलगाड़ी सँ एक दिन पहिने पहुँचि गेल छल। निसार साहेब हवाइ जहाज सँ पटना आ कार सँ लहेरियासराय पहुँचल रहथि।

दिनक जखन एक बाजल हेतै, शिवकुमार, ठक्कन आ साइकिल गुड़कबैत कल्लू, तीनू निसार साहेबक डेरा पर पहुँचल छलाह। रातुक थकान सँ निवृत्त भ' भोजन आदि क' निसार साहेब फर्स पर ओछौल ओछान पर आराम सँ हुक्का गुड़गुड़ा रहल छलाह। खबास हुनकर पयर जाँति रहल छल। बाँकी हुनकर साज बजौनिहार बादक एक कात मे बैसल अपना मे गप्प-सप्प क' रहल छल। संयोजक पहिने सँ ओतय पहुँचल रहथि। ओ निसार साहेबहक सोझाँ आदर सूचक हाथ जोड़ने कहि रहल छलाह—अपनेक आगमन सँ संगीत-सभाक यश आ प्रतिष्ठा मे वृद्धि भेलैक अछि। समिति दिस सँ हम आभार प्रगट कर' अयलहुँ अछि। आपस जैबा लेल काल्हि भोरे दू गोट मोटर अपनेक सेवा मे पहुँचि जायत। मोटरक पेट्रोल एवं भाड़ा संगीत-सम्मेलन समिति दिस सँ देल जेतैक।

निसार साहेब हुक्काक नली कैँ मुह सँ हटबौत कहलनि—"खर्चे-बर्चे की बात छोड़ो। तुम लोगों ने इतना बड़ा संगीत महफिल का इन्तजाम किया, मुल्क के नामी-नामी गायक और बादक को इकट्ठा किया, यही काबिले-तारीफ है। मैं तुम सभी को मुबारकबाद देता हूँ। मेरा जो भी खर्च है वह मैं ही करूँगा। अभी तुमसे मुझे एक खास बात की जानकारी चाहिए थी।"

—"हुकूम देल जाए?"

—"रामचतुर मल्लिक जो दरभंगा के नजदीक अमता गाँव के रहने वाले हैं, उनको

इस संगीत-सभा मे आने का निमंत्रण क्यौँ नहीं दिया गया?"

—"रामचतुर मल्लिक? नाम सुनल जकाँ लगैत अछि। मुदा हुनका द' विशेष जानकारी नहिए जकाँ अछि।"

जवाब द' संयोजक डपोरसंख भेल ठाढ़ भ' गेला। निसार साहेब खौंझा क' हुक्काक नली कैँ पटकैत बजला—"तुमने रामचतुर मल्लिक का सिर्फ नाम भर सुना है? उनके संगीत के बारे मे कुछ जानते नहीं हो? लानत है तुम्हारी जानकारी का।"

एतबा बजैत-बजैत निसार हुसैन खाँ रंजे वाक्य-शून्य भ' गेलाह आ अफसोच करैत मुह नीचाँ क' लेलनि।

रामचुतर मल्लिक के छलाह? ध्रुपद गायकी छैक की? किएक निसार हुसैन खाँ संयोजकक जवाब सुनि उदास भ' गेलाह?

कहल जाइए जे वैदिक युग मे जखन समस्त आर्यावर्त मे वेद सम्मत एवं प्रतिपादित आचरण तथा धर्माचरणक पहल होइत छल तखन नौ सय निनानबे राग भूतल पर विद्यमान छल। कालक्रमे वैदिक धर्मक ह्रास भेल। पाखण्ड आ घमण्ड सँ परिपूर्ण वेद पंडित जन साधारण सँ अलग-थलग भ' गेलाह। वैदिक पंडितक निम्नाचरण ओहि सीमा तक निखिद्ध भ' गेल छल जे ओ सभ सोमरस पीबि क' यज्ञ कुंड मे बछड़ाक मांस पका-पका क' खाय लगलाह। तखन धार्मिक रूपे चहुँ दिसि अराजकता पसरि गेल छल। जखन वैदिक धर्म सर्वनाशक कगार पर पहुँचि गेल रहए तखन आन-आन धर्मक उदय भेल, जाहि मे बौद्ध धर्म सर्वमान्य एवं सर्वश्रेष्ठ बनल। जनसाधारण सँ देशक राजा तक बौद्ध धर्मक दीक्षा ग्रहण कैलनि। अहि देश मे छह-सात सय बर्ख धरि बौद्ध धर्मक आधिपत्य रहलै। वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता आदिक संगहि नौ सय निनानबे राग बुद्धं शरणं गच्छामि मे विलीन भ' गेल, नष्ट भ' गेल, हेरा गेल।

बौद्ध धर्म सहज आ सरल छल। भारतक अतिरिक्त आन-आन देश मे सेहो एकर प्रचार-प्रसार भेलै। एखनहुँ एशिया महादेशक अनेक देश मे बौद्ध धर्म राजधर्म बनल कायमे अछि। मुदा अपन देश मे बौद्ध धर्मक ह्रास भेलै। बौद्ध धर्मावलम्बी कालक्रमे तांत्रिक बनि गेलाह। तंत्रो मे ओ सभ वाममार्गी, अघोरपंथी बनि सम्पूर्ण भारत मे पसरि गेलाह। कामी, क्रोधी, लालची, अघोरपंथी तांत्रिकक व्यभिचार-अत्याचार सँ देशक लोक त्राहि-त्राहि कर' लागल। एतुक्का राजा तक तंत्र मार्गी सँ भयभीत भ' गेल छलाह।

तखन आदि गुरु शंकराचार्यक आगमन भेल। शंकर फेर सँ चारू धाम तथा अनेक मंदिर एवं मठक पुनः स्थापना कैलनि। उत्तर आ दक्षिण भारत मे नव-नव

मंदिर बनल। वैदिक धर्मक अनुकूल पंच देवताक पूजा आरम्भ भेल। मंदिर एवं मंदिर परिसर उपयुक्त स्थान बनल, जतय पुस्त-दर-पुस्त सँ ब्राह्मणक कंठ मे सुरक्षित वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता आदि ग्रंथक फेर सँ संचय तथा संकलित कयल गेल। मंदिरे मे बीजरूपँ सुरक्षित राग-रागिनीक मधुर ध्वनि पुनः गुंजायमान होब' लागल।

चौदहम सदी सँ आइ तकक इतिहास मे प्राचीन भारतीय शास्त्रीय संगीतक प्रथम पयदान ध्रुपद स्वरूप मे भेटैए। ध्रुपद विशुद्ध हिंदू संगीत बनि प्रगट भेल। आरम्भ मे ध्रुपद मात्र मंदिरे मे देवताक समक्ष गाओल जाइत छल। ध्रुपद मे सभ सँ पहिने छंद-प्रबंध गाओल जाइत अछि। एकर बंदिश संस्कृत तथा संस्कृत-प्राकृत मिश्रित भाषा मे होइत छल। गायनक गंभीरता आ कि चपलता रागक प्रकृति, रस एवं भावक अनुसार होइत छल।

ध्रुपदक आरम्भ आलाप सँ आ आलापे सँ षरज, रेखव, गंधर्व, मध्यम, पंचम, धैवत एवं निषादक कोमल आ कठोर पक्ष कैँ जागृत कयल जाइत अछि। अही तरहँ ध्वनि सूक्ष्म कण मे वितरित भ' संगीतक लय बनैत अछि। तखने ध्रुपद मे पखावजक मेल होइत छैक। कहल जाइत अछि जे शुद्धतम स्वरूप मे ध्रुपदक गायन लेल चारि हाथीक दम्मक आवश्यकता होइत छैक। पखावजक माध्यमे देवी-देवता सँ अनुग्रहपूर्वक शक्ति प्राप्त कयल जाइत अछि। तखन राधा-कृष्णक प्रेममय केलि-क्रीड़ाक प्रदर्शन होइत अछि। अन्त मे झपतालक एहन समाखा बनैत अछि जे गायक, वाद्य-वादक एवं श्रोता सभ एकात्म भ' स्वर्गक आनन्दक अनुभूति मे डूबि जाइत छथि। ध्रुपद मे पन्द्रहम सदीक भक्ति आन्दोलनक अद्‌भुत भाव दृष्टिगोचर होइत अछि। भगवान विष्णुक आओर हुनक अवतारक भक्ति-भाव संगीत सँ प्रस्तुत करब भेल ध्रुपद गायनक मुख्य लक्ष्य आ प्रयोजन। ध्रुपदक स्थायी, अंतरा, आमोग एवं संचारी सदिखन शुद्ध रूपे गाओल जाइए आ अहि मे डुबकी लगौलाक बाद ककरो सांसारिक ज्ञान रहिए ने जाइत छैक।

अठारहम सदी मे मुसलमान राजाक समय 'खयाल'क उत्पत्ति भेल। मोहम्मद शाह 'रंगीला'क दरवार मे नेमत खाँ 'सदारंग' नामक संगीतज्ञ भेल छलाह जे 'खयाल' एवं 'मुण्डा-खयाल'क गायकी चलौलनि आ एकरा ध्रुपदक समकक्ष बतौलनि। मुदा 'खयाल' पूर्णतः शृंगारिक संगीत अछि। 'खयाल'क बाद क्रमशः 'तराना', 'ठुमरी', 'ठप्पा', 'रुबड़ी' तथा उर्दू भाषाक जन्मक बाद 'गजल' गायकीक परम्परा चलल। ध्रुपद यद्यपि विशुद्ध हिन्दू संगीत अछि, मुदा एकर आध्यात्मिकताक पृष्ठभूमि रहितहुँ मुगल शासनकाल मे ध्रुपद संगीत मे रुहानियत एवं रुमानियतक समावेश भेल अछि।

वर्तमान काल मे ध्रुपद डागर बंधु तथा दरभंगाक अमता घराना मे सुरक्षित पाओल गेलए। अमताक मल्लिक घराना मे पछिला दू सय बर्ख सँ ध्रुपदक इतिहास अछि। ध्रुपद गायक मे मल्लिक घरानाक रामचतुर मल्लिक कैँ सर्वश्रेष्ठ गायक मानल गेल अछि। डागर बंधु, जनिका चलिते ध्रुपद युरोप आ खास क' जर्मनी मे प्रसिद्ध भेल, रामचतुर मल्लिक कैँ गुरुवरक सम्मान दैत छलथिन।

अमताक मल्लिक घरानाक इतिहास अहि प्रकारक अछि। मल्लिकक पूर्वज राजस्थान सँ आबि हाजीपुरक समीप घटारो नामक गाम मे बसलाह। ओही वंशक राधाकृष्ण एवं कर्ताराम बाद मे अमता गाँव मे आबि क' बसि गेलाह। अमता नामक गाँव दरभंगा जिलाक बहेड़ी प्रखण्ड मे अछि। राधाकृष्ण एवं कर्ताराम ध्रुपद संगीतक दिवाना रहथि। लगभग बाइस बर्ख तक दुनू भाइ विभिन्न स्थान पर आ खास क' नेपालक भूपत खाँक शिष्य बनि ध्रुपदक साधना कैलनि। ध्रुपद संगीत मे निपुण भ' जाहि बर्ख दुनू भाइ आपस अमता आयल छलाह ताहि साल मिथिला मे भीषण अकाल पड़ल छल। दरभंगाक तत्कालीन महाराज माधव सिंह राधाकृष्ण एवं कर्ताराम कैँ बजबौलथिन। महराजेक आग्रह पर दुनू भाइ ध्रुपद आधारित 'मेघ मल्हार' नामक राग गायब शुरू कैलनि। बर्खा भेलै। महाराज प्रसन्न भ' नौ सय बीघाक जमीन्दारी दुनू भाइ कैँ इनाम मे देलथिन। पहिने हिनका सभक टाइटिल 'शर्मा' छल। जमींदारी भेटला पर ई सभ 'मालिक' बनलाह। कालान्तर मे मालिकक अपभ्रंश 'मल्लिक' हिनकर खानदानक पहिचान बनि गेल।

राधाकृष्णक वंश मे पंडित विदुर मल्लिक एवं कर्तारामक वंश मे पंडित रामचतुर मल्लिकक जन्म भेलनि। पछिला दू सय बर्ख सँ अमताक मल्लिक घराना ध्रुपदक मौलिकता कैँ अक्षुण्ण रखने छथि। ध्रुपद गायन मे अमता खानदानक पंडित विदुर मल्लिक एवं पंडित राम चतुर मल्लिकक नाम भारते नहि सम्पूर्ण यूरोपक संगीतज्ञक बीच प्रसिद्ध अछि। तुलसी घाट पर एक बेर निसार हुसैन खाँ कैँ राम चतुर मल्लिक सँ 'अवधपुरी नगरीक राजा श्री रामचन्द्र' नामक ध्रुपद संगीत सुनबाक सौभाग्य भेटल रहनि। ओ ओही अभिलाषा ल'क' दरभंगा आयल रहथि जे रामचतुर मल्लिकक गायन सुनबाक हुनका अवसर भेटतनि। मुदा एतय उन्टे गंगा बहि रहल छल। संगीत-सभाक संयोजक रामचतुर मल्लिकक नाम अबस्से सुनने रहथि, मुदा मल्लिक घरानाक जानकारी हुनका एकदमे सँ नहि छलनि। निसार हुसैन खाँक मोन तीत-अकत्त भ' गेल रहनि।

संगीत-सभाक संयोजक कैँ गेलाक बाद लगले निसार साहेबक एकटा खिदमतगार हुनका कह' अयलनि—"हजूर, कम उम्र के तीन लड़के आपके दीदार का ख्वाइशमंद

हैं। हजूर की तबियत गमगीन है। हजूर के इस मुकाम पर किसी का मिलना जायज नहीं होगा। हजूर बताएँ की क्या कहकर तीनों लड़के को वापिस किया जाए।"

—"वापस मत भेजो, उन्हेँ अन्दर आने को बोलो। मैं उनसे मिलना पसंद करूँगा।"

शिव कुमार, ठक्कन आ कल्लू ओही कोठली मे पयर रखलनि जतय निसार हुसैन खाँ अपन बिछौन पर उदास भेल बैसल रहथि। कोठलीक एक कात खाली पड़ल फर्स पर तीनू बैसि गेलाह। निसार साहेब पुछलनि—"मुझसे मिलने का दरकार क्योँ कर हुई है, बताओ।"

शिव कुमारक इशारा पबिते ठक्कन जवाब देलनि—"श्रीमान, हमर दोस्त शिवकुमार अहाँ कँ गीत गाबि क' सुनब' चाहैत छथि।"

भाषा मैथिली रहितहुँ निसार साहेब गप्पक भाव कँ बुझि गेलाह। तखन कहलनि—"गीत गाकर सुनाना चाहता है? यह तो अच्छी बात है। गाओ, मैं सुनना चाहूँगा।"

कोठली पैघ रहै। ओही कोठली मे कने हटल निसार साहेबक निजक तबालची, सितार बादक आ सारंगी बादक सेहो बैसल रहथि। एक तरहक तफरी हैत, से विचारि तीनू मुस्कियाय लगला। शिव कुमार धोती-कुर्ता पहिरने छलाह, पलथी मारि आराम सँ बैसि गेलाह। प्रसिद्ध गीतकार शकील बदायुनीक लिखल विख्यात संगीतकार नौशादक संगीतबद्ध कयल एवं गायक मे सर्वश्रेष्ठ रफी द्वारा गाओल 'बैजू बाबरा' फिल्मक गीत जकर पद रहै 'मन तड़पत हरि दर्शन को आज' शिव कुमार गाबए लगलाह।

शिव कुमारक गलाक आबाज मे विधाता कोन तरहक विशिष्टता आ कि जादू भरने रहथि तकर परीक्षाक घड़ी उपस्थित भ' चुकल छल। परीक्षक रहथि शास्त्रीय संगीतक मर्मज्ञ एवं 'तराना' धुनक धुरन्धर गायक निसार हुसैन खाँ। शिव कुमार अपन जीवनक ओहि मोड़ पर पहुँचि गेल रहथि जकर आगाँ हुनक भविष्य हुलकी द' रहल छल।

जे कमाल हैबाक चाही से भ' गेल रहैक। तीन मुसलमान संगीतज्ञ द्वारा निर्मित हिन्दू देवताक अर्चनाक गीत आ शिव कुमारक गलाक मिठास एवं ओज। बिना कोनो वाद्य यंत्रक मदतिए एकटा देहाती छौंड़ा पता नहि कोन अदृश्य शक्तिक प्रभाव मे गीत गाबि रहल छल जे मात्र एकहि पल मे निसार हुसैन खाँ कँ तड़पा देलक। यद्यपि संगीतक संसारे मे निसार साहेबक समग्र जीवन व्यतीत भेल छलनि मुदा एखनुका एक निर्दोष गीत सुनि क' ओ बेवाक् भेल मदहोसी मे पहुँचि गेल रहथि।

कोठली मे उपस्थित हुनक वाद्ययंत्र वादक कंजूसी छोड़ि शिव कुमारक गीतक रस कैँ पान कर' लागल छल। मुश्किल सँ पाँच मिनट तक शिव कुमार गीत गओने हैताह मुदा ओतबहि काल मे ओहि कोठली मे एहन धुन पसरि गेल जकर कर्ण-स्पर्श सँ सभक आत्मा तक संवेदना सँ भरि गेलै। निसार साहेबक आँखि मे नोर भरि गेलनि। ओ बजलाह–"अल्ला हो अल्ला! ऐसी मीठी आवाज जो रुह तक को जजवाती बना दे, मैंने अपनी जिन्दगी मे पहले कभी नहीं सुना था। मुझे तो कुछ ऐसा अहसास हो रहा है जैसे ओँकार नाथ ठाकुर का फिर से जन्म हुआ है। उनकी भी गले की मिठास कुछ ऐसी ही थी। मेरा यहाँ आना बेकार नहीं गया।"

कनेकाल तक चुप रहलाक बाद निसार साहेब अवरुद्ध भेल गलाक भरभरी आवाज मे कहलनि–"बिना मतलब का कोइ भी काम उपरबाला नहीं करता है। तुम्हारे गले की मिठास अल्ला की अमानत है। खुदा ने तुम्हेँ जो दौलत बख्सा है उसकी कीमत का अन्दाजा लगाना बेमानी होगा। कोई भी तुम्हारे सामने टिक नहीं सकता। अल्ला की गरज क्या है, मैं नहीं जानता। फिर भी मुझे दरभंगा आने को क्यों कहा, उसका अन्दाज अब मुझे बखूबी हो रहा है। ठीक है, मैं खुदा के हुक्म का तामील करने को तौयार हूँ। शिव कुमार, तुम खुदा के हुक्म से ही मेरे पास आये हो। अब आ ही गये हो तो तुम्हें मेरे पास ही रहना लाजमी है। मैं तुम्हें संगीत का सभी तरह का तालीम दूँगा। तुम सारे जहान को अपने हूनर के बल पर अपने हजूर मे रखोगे। शिव कुमार बोलो, क्या तुम मेरे साथ जाने को राजी हो?"

शिव कुमार चुप्पे रहलाह। जवाब ठक्कन देलनि–"श्रीमानजी, ई एखने सँ अहाँक लग मे रहताह। अहाँ जतय हिनका ल' जैबनि ई जौताह। जाबे तक हिनकर संगीतक शिक्षा पूर्ण नहि हैतनि हिनकर अगिला जिनगी अहाँ लग गिरवी रहतनि।"

शिव कुमार सँ अलग भेलाक बाद ठक्कन कैँ ज्ञातभेल छलनि जे कतेकटा हुनकर खुशी हुनका सँ छिना गेल रहनि। कल्लूक हाथ पकड़ि ओ बड़ी काल धरि कनैत रहलाह आ ओही दशा मे घुमि क' साधुपूरा अयलाह। सही मे ठक्कनक त्याग बड़ पैघ आ पीड़ादयक छल। शिव कुमार सँ अलग होयब ठक्कनक आँखिक नोर कैँ सुखा देलक, हुनक मुहक हँसी सर्वदा लेल छिना गेल।

शिव कुमारक संग निसार हुसैन खाँ अपन महल मे पहुँचलाह। इन्दौर शहर सँ चालिस मील दक्षिण नर्मदा नदीक समीप आ बिन्ध्य पर्वत श्रेणी सँ घेरल हुनक लगभग डेढ़ सय एकड़क फार्म छल। फार्मक एक-तिहाइ हिस्सा मे चुनल-चुनल दामिल लकड़ीक जंगल रहै। फार्मक बीच मे कृषि लेल उपयुक्त भूमि रहै जतय मुख्यतः विभिन्न तरहक फूलक खेती होइत छलै। फूलक निर्यात सँ प्रचुर विदेशी

मुद्राक उपार्जन होइत रहै। फार्मक पश्चिमी भाग पथरीली, उभर-खाभर चश्मा आ जलप्रपात सँ भरल। ओतहि लगभग दु-अढ़ाइ सय बर्ख पुरान ईरानी वास्तुकला सँ निर्मित निसार साहेबक पुस्तैनी महल छलनि। महल सुन्दर, स्वच्छ एवं हवादार रहए। महलक थोड़ेक हटल छोट-पैघ अनेको क्वार्टर बनल रहै जाहि मे निसार हुसैन खाँक महल एवं फार्मक कर्मचारी सपरिवार रहैत छल।

फार्मक अलावा निसार साहेबक औरो तरहक कारोबार छल। ओ चानीक थौक व्यापारी रहथि। खनिज पदार्थ सम्बन्धी कम्पनी मे हुनक करोड़ो टाकाक शेयर रहनि। मुम्बइक रिजर्व बैंक तथा लंदनक चार्टर्ड बैंक मे हुनकर लॉकर रहए, जाहि मे हुनक परिवारक सोना, कीमती पाथर एवं जवाहरात सँ बनल जेवरात सुरक्षित राखल छल। निसार साहेबक अगाध सम्पत्ति ट्रस्टक अधीन रहए। देख-रेख लेल सोलिसीटर एवं ऑडीटर नियुक्त रहनि। प्रत्येक बर्ख ट्रस्टक आमद-खर्च सम्बन्धी हिसाब सरकार लग प्रस्तुत होइत रहए। इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स, एकसाइज टैक्स तथा कॉरपोरेट टैक्सक अदायगी नियम सँ समय पर कयल जाइत छल।

निसार हुसैन खाँक सम्पत्ति एवं कारोबार देख' लेल योग्य एवं समर्पित अलग-अलग मैनेजर नियुक्त छल। मुदा हुनक समस्त निजी जीवन संगीत लेल समर्पित रहए। महलक एक भाग मे देबाल सँ घेरल एकटा कक्ष छल। कक्षक बीच मे तड़ाग। तड़ाग उज्जर-लाल कमलक फूल एवं छोट-छोट रंग-बिरंगी माछ सँ भरल। तड़ागक चारूकात संग मर्मरक फर्सबला बरामदा जे खसक टाट सँ घेरल-मूनल-झाँपल। अत्यन्त मनमोहक स्थान, सदिकाल संगीत सँ गुंजायमान। शास्त्रीय संगीतक लेल अलग कक्ष आ तबला, सितार, सारंगी आदि लेल अलग कक्ष। योग्य गुरुक देख-रेख मे अभ्यास होइत छल। संगीतक विद्यार्थी एवं हुनकर शिक्षक लेल भोजन, वस्त्र तथा आवास ट्रस्ट सँ देल जाइत रहए। संगीत पाठशाला पछिला अनेक बर्ख सँ चलि रहल छल।

शिव कुमारक संगीत शिक्षा स्वयं निसार साहेब अपन समक्ष मे करबैत रहथि। शिव कुमार पर अल्लाक मेहरवानी रहए। किछुए महिनाक अन्दरे ओ राग भैरव, राग रामकली, राग असावरी, राग पुरिया धनाश्री, राग मुल्तानी आदि अनेको राग मे निपुण भ' गेलाह। एकटा बात आश्चर्यक रहैक। जखन शिव कुमारक आलाप आरम्भ होइत छल तखन संगीत कक्षक तमाम गुरु-चेला अपन-अपन अभ्यास बिसरि हुनका लग जमा भ' जाइत छल। शिव कुमारक कंठ सँ निकलल थिरकैत, छलछलाइत संगीत-ध्वनिक माधुर्यसँ सभ सम्मोहित भ' जाइत छल। शिवकुमारक आवाजक मिठास, ओज एवं अन्दाज ओतय उपस्थित संगीत-प्रेमीक हृदय कैँ पिघला दैत छल। सभ हुनक आलाप

सुनै लेल व्यग्र रहैत छल।

निसार हुसैन खाँ स्वयं शिव कुमारक आवाजक दिवाना बनि गेल रहथि। हुनका शिवकुमारक आलाप मे एहन विशेषताक साक्षात्कार होनि जेना जर्रा-जर्रा मे अल्लाक प्रत्यक्ष कारगुजारी दमकि रहल होअय। अभ्यास सँ संगीतक इल्म कियो सीखि सकैत अछि मुदा आवाज मे एहन दर्द भरब त' वैह क' सकैत छल जकरा पर खुदाक मेहरबानी होअय।

निसार साहेबक एक मात्र औलाद मेहदी अली खाँ। पता नहि कोन नक्षत्र मे मेहदी अलीक जन्म भेल रहनि जे, यद्यपि हुनका संगीत सँ झड़क नहि लगैत छलनि, मुदा संगीत मे कोनो टा रुचि नहि छलनि। ओ इंगलैंड मे अपन अध्ययन समाप्त क' सम्प्रति अमेरिका मे कार्यरत छलाह। ट्रस्ट दिस सँ केलिफोर्निया नामक स्टेटक सनफ्रान्सिसको शहर मे हुनका लेल एकटा घर कीनि देल गेल छल। ओतहि मेहदी अली खाँ रहैत छलाह।

मेहदी अलीक प्रेम विवाह भेल रहनि। हुनक पत्नीक नाम छल परीशा। बारहम सदी मे बनल तेहरान सँ काला सागर तकक सड़क। सड़कक दुनू कात मे बसल गाँव। सभटा गाँव मे सूफी समुदायक जमघट। सभठा गाँव फूल एवं फलक बगीचा सँ घेरल। अरमेनियाँक समीपे एकटा गाँव मे परीशाक माय-बाप रहैत छलथिन। ईरानक प्रसिया प्रांतक सौन्दर्य संसार भरि मे प्रसिद्ध अछि। परीशा जहिना अद्वितीय सुन्दरि छलीह तहिना संगीत सँ हुनका अगाध लगाव रहनि। परीशाक माता-पिता इरानक राजाक वंशज रहथि आ धन सम्पदा सँ सम्पन्न रहथि। परीशाक जन्म हवाइ द्वीपक हनुलूलू शहर मे भेल छल। परीशा ओही शहरक बासी बनि गेलि रहथि। कोनो कन्सर्ट मे परीशाक मुलाकात मेंहदी अली सँ भेल रहनि। मुलाकात मे आकर्षण आ तकर लगले प्रेम निवेदन। दुनूक परिवारक रजामंदी सँ दुनूक विवाह भेल। परीशा सनफ्रान्सिसको शहर मे अपन शौहरक संग रह' लगलीह। दुनूक प्रेम मिलनक प्रतापे एकटा संतानक जन्म भेल। संतानक छोट सन नाम राखल गेल—हीना।

8.

हीना पैघ भेलीह। स्कूलक पढ़ाइ समाप्त कैलनि। हीना आब आगाँ की करतीह, तकर विचार होइते रहए तखने अमेरिकाक अभिशाप हुनकर नसीब पर कहर बरसा देलक। संसारक तीन-चौथाइ धनक मालिक अमेरिका। अमेरिकाक सब सँ धनिक प्रांत केलिफोर्नियाँ। केलिफोर्नियाँक क्वीन सीटी सनफ्रान्सिसको। ओही शहरक वासिन्दा छलीह हीना। सभ किछु पर्याप्त रहितो हीना अमेरिकाक अभिशाप सँ बचि नहि सकलीह। अमेरिकाक अभिशाप भेल शराब। जहिना अपन मिथिला मे गली-गली, कोने-कोन पानक दोकान भेटत, तहिना अमेरिका मे शराबक दोकान। आहार कमे मुदा शराब भरि पेट। पानिओ सँ बेशी शराबक खपत। शराब पीबि क' बुत्त भ' जायब तखन मोटर ड्राइभ करब भेल शौख। अहि शौखक चलिते दुर्घटना कैँ रोकब असंभव। कहल जाइत अछि जे अमेरिका मे लोक प्राकृतिक मृत्यु सँ अधिक सड़क दुर्घटना मे मरैत अछि। लॉस-एंजिल जेबा काल एक सय एक नम्बरक हाईवे पर एक्सिडेन्ट भेल छल आ हीनाक माता-पिताक एकहि संग मृत्यु भ' गेल छलनि।

शोक संतप्त हीना भारत आबि अपन बाबाक महल मे रह' लगलीह। समय बितलै, हीना अपना कैँ सम्हारि लेलनि आ तखन सनफ्रान्सिसकोक घर मे आबि क' रह' लगलीह। केलिफोर्नियाँ मे भारतक दू गोट संगीतक पाठशाला। पहिल भेल रविशंकरक सितार सिखबौक पाठशाला। दोसर अली अकबर खाँ नामक पाठशाला छल जतय सरोदक शिक्षा भेटैत छलै। हीना सरोद सिखैक अभिलाषा सँ अली अकबर म्यूजिक इन्स्टिच्युशन मे नाम लिखौलनि।

समय अपन गति सँ बीति रहल छल। हीना आब उन्नैस बर्खक भ' गेल रहथि। हुनकर एकांत जीवन संगीतक संसार मे शान्तिपूर्वक बीति रहल छलनि। एक दिन हीना कैँ अपन बाबा निसार हुसैन खाँक एकटा खत भेटलनि। खतक मजमून छल जे बाबा उत्तर भारतक मिथिला नामक प्रदेश मे एक गोट संगीत-सभा शिरकत कर' गेल रहथि। ओतए हुनका नायाब, बिना तरासल एक गोट हीरा भेटलनि अछि। हीरा पाबि बाबा खुदाक शुक्रगुजार भेलाह आ सम्प्रति तमन्ना रखने छथि जे जल्द सँ जल्द हीना हिन्दुस्तान आबि ओहि हीरा सँ दीदार करथि।

हीना केँ आश्चर्य भेल रहनि। बाबाक खजाना त' हीरा सँ भरले छल। तखन कोन एहन कीमती हीरा हुनका भेटलनि अछि जकर चर्च ओ चिट्ठी मे कैलनि अछि? लगभग चारि महिनाक बाद इरानक भ्रमण करैत हीना अपन बाबाक महल मे पहुँचलि रहथि।

सभ किछु सामान्ये छल। उत्तेजित होयबाक ने कोनो बात रहै आ ने दरकार। मुदा बाबा आवश्यकता सँ बेशिए चंचल रहथि। हीना असमंजस मे आबि गेल रहथि। दुआ-सलामक बाद सभ तरहक काज सँ पहिने निसार हुसैन खाँ अपन नायाब हीरा पेश करबाक फरमान पेश कैलनि।

शिव कुमारक पेशी भेल। हुनका मे आमूल-चूल परिवर्तन भ' गेल छल। रेशमी शेरवानी आ पैजामा, पयर मे राजस्थानी जूता, ऊँचाइ छओ फूट, माथक जुल्फी चेहरा पर छिड़िआयल, पनिआयल आँखि। तकरबादो शिवकुमारक मुखमंडल सँ ग्राम्य जीवन मे पोषित सरसता, सरलता आ सज्जनता एना भ' क' परिदर्शित भ' रहल छल जे अबिलम्ब हीना केँ आकर्षित क' लेलक। शिव कुमारक निराभिष व्यक्तित्व सँ हीना नीक जकाँ प्रभावित भ' गेलि छलीह। पहिले भेट मे प्रेमक बीजारोपण भ' गेल, एकरा कियो रोकियो ने सकैत छल।

निसार हुसैन खाँ अपन नायाब हीरा केँ आदेश देलनि—"शिवू, तुम जिस तरह दरभंगा मे पहली मुलाकात के वक्त जिस अन्दाज मे गाना सुनाया था, उसी अन्दाज मे उसी गाने को गाकर अभी सुनाओ। मैं अपनी हीना को संगीत का शुद्धतम ध्वनि से परिचित करबाना चाहता हूँ।"

शिव कुमार आज्ञाकारी बालक सदृश फर्स पर पलथी मारि क' बैसि गेलाह। बिना कोनो साजक मदतिए सोलो-स्वरूप 'मन तड़पत हरि दर्शन को आज' नामक गीत गाबए लगलाह। शिव कुमारक गला सँ निकलल आ कण-कण मे पिघलल संगीतक ध्वनि हीनाक कानक रस्ते प्रवेश क' हुनक हृदयाकाश केँ कोमलता आ मधुरता सँ भरि देलक। एखन तक हीनाक मोन विरान छल, उदास छल। शिवकुमारक संगीत एवं हुनक ग्राम्य जीवनक कोमल छवि हुनकर मोन केँ प्रेमभाव सँ भरि देलक। हीनाक हृदय मे केहन भावक उदय भेल तकरा शब्द मे बान्हि क' व्यक्त करब संभव नहि अछि। एहन भाव केँ त' कल्पनाक पाँखि पर आरूढ़ भैए क' अनुभव कयल जा सकैत अछि।

तकरबाद भेलै की? जे होयबाक चाही सैह भेलै। निसार साहेबक कृषि फार्म मे फूलक अलावा ममता, करुणा, दयाक फसिल सेहो सदिकाल लहलहाइते रहैत छल। ओ दू गोट अपरिचित युवक-युवती केँ एक-दोसराक प्रिय एवं प्रियतम बनैत

देखलनि। निसार साहेबक मजहब छल संगीत, इबादत छल संगीत। हुनक मोनक मुराद पूरा भेलनि। आब ओ अपन सम्पत्तिक एकमात्र वारिस हीनाक माकूल भविष्य देखि अल्लाहक शुक्रगुजार भेलाह। हुनकर पसंद हीनाक पसंद। आब निसार साहेब परवरदिगार सँ औरो किछु नहि मंगथिन। हुनकर सभटा मांग हुनक इच्छानुसार त' भेटिए गेल रहनि।

बिना कोनो मुल्ला, पंडितक मात्र ट्रस्टीक सोलिसिलीटर, जिलाक रजिस्ट्रार एवं फार्मक कर्मचारीक समक्ष शिव कुमार आ हीनाक निकाह सम्पन्न भ' गेल। सुखी जीवन ले की सभ वस्तु चाही? सुखी जीवन जीबाक लेल जतबा सामग्री चाही से दुनू लेल सहजे उपलब्ध छल। हीना चौदहवींक चाँद आ शिवकुमार आफताब। दुनू भारत, यूरोप आ अमेरिकाक विभिन्न शहर मे हनीमून मनबैत रहलाह। ताहू समय मे विभिन्न देशक संगीत-सभा मे शिरकत करैत रहलाह। अन्त मे, दुनू सनफ्रान्सिसको शहरक अपन घर मे रह' लगलाह।

समय बितलै। जेना कि अहि भूतलक नियम-कानून-कायदा छैक निसार हुसैन खाँ अपन शरीर सँ प्राणक त्याग कैलनि। हीना लेल सभ तरहक कागत-पत्तर तैयारे छल। हीना अपन बाबा निसार हुसैन खाँक सभटा सम्पत्तिक मालकिन बनलीह। ओ शिव कुमारक संग भारत आबि महल मे रह' लगलीह। फार्म एवं आन-आन सभटा कारोबार हीनाक अधीन छल। ओ कुशलता सँ अपन कर्तव्यक निर्वहन कर' लगलीह। अहि तरहँ समय सुख सँ व्यतीत भ' रहल छल। शिव कुमार कैँ अपन बाल सखा ठक्कन एवं अनुज कल्लू सँ अलग भेलाक आठम बर्ख बीति रहल छल।

शिव कुमार कोनो देश मे होथि, कोनो दशा मे रहथि ओ साधुपूरा कैँ कहियो ने बिसरला। नियम सँ ओ ठक्कन के पत्र लिखैत रहथि आ गायन सँ उपार्जित धन अपन पिता कैँ पठबैत छलाह। जखन हुनका अपन पत्रक जवाब मे ठक्कनक चिट्ठी भेटनि त' ओ भाव-विह्वल भ' जाथि। ठक्कनक चिट्ठी मे साधुपूराक माटिक गमक हुनका सम्मोहित क' दैनि, चंचलता भरि दैनि। अपन बाल संगी ठक्कन आ कल्लू, अपन पिता एवं अपन गामक पोखरि-झाँखरि, चौर-चाँचर कैँ स्मरण क' शिवकुमार कान' लागथि। हीना संगीतक छात्रा, अत्यन्त संवेदनशील प्राणी छलीह। ओ शिवकुमारक प्रति समर्पित छलीह तथा हुनकर पसिंद, नापसिंद कैँ बुझैत छलीह। शिव कुमारक दुख हीनाक दुख। गामक चिट्ठी भेटला पर शिवकुमारक जे मनःस्थिति भ' जाइत छल तकर प्रतिकार लेल ओ किछु करितथि त' की करितथि? तथापि शिवकुमारक पीड़ा कैँ कम करबाक ओ एकटा मार्ग तकलनि।

एक दिन हीना अपन ताकल विचार द' शिवकुमार कैँ कहलनि। शिवकुमार

हीनाक विचार केँ पसिन्न कैलनि। निसार हुसैन खाँक सम्पत्ति मे हीनाक ओतबे हिस्सा छल जतबा की शिवकुमारक। हीनाक विचार केँ अनुमोदन करैत शिवकुमार अपन मित्र ठक्कन केँ पत्र लिखलनि। पत्रक आशय छल जे ठक्कन पीड़ापुर मे सात-आठ एकड़ जमीन कीनि ओहि पर उच्च विद्यालयक भवन तैयार करथि। उच्च विद्यालयक नाम शिवकुमारक पिता श्री बुद्धिनाथ मिश्रक नामे रहत। जमीन आ भवन निर्माणक सभटा खर्च पठाओल जैतनि। स्कूलक उद्‌घाटनक दिन शिवकुमार सशरीर साधुपूरा मे रहताह।

कल्लूक पिता रामजी मरड़क देहान्त भ' चुकल छल। एखन हनुमान भगतक साधुपूरा मौजेक मैनेजर कल्लूए छलाह। संयोग सँ पीड़ापुरक सटले भगतजीक सात बीघा परता पड़ल जमीन छल। ओही जमीन केँ कीनल गेल। ठक्कनक प्रयासे मात्र एक बर्खक भीतरे स्कूलक भवन बनि गेल, प्रांतीय सरकार सँ मान्यता प्राप्त भ' गेल तथा विद्यार्थी, शिक्षक एवं कर्मचारीक चयनक काज सेहो पूरा भ' गेल।

स्कूल सम्बन्धी सभटा काज सम्पन्न भेल। उद्‌घाटनक तिथि पक्का भेल। निमंत्रण कार्ड छपल। गामे-गाम ढोलहो पड़ल। आब ठक्कन व्यग्र भेल अपन मित्र शिवकुमारक आगमनक प्रतीक्षा कर' लगलाह।

पहिल मोटर कार सँ शिवकुमार एवं हीना आ दोसर सँ निसार हुसैन खाँक फार्म एवं कारोबारक चुनल-चुनल कर्मचारी पहुँचलाह। शिवकुमार थ्री पीस सूट मे रहथि आ हुनक एखुनका हुलिया देखिक' ठक्कन एवं कल्लूक आँखिक पल स्थिर भ' गेल रहनि। स्कूलक फिल्ड मे ठाढ़ कयल सामियाना लोक सँ खचाखच भरि गेल छल। एक कात स्टेज बनल रहए जतय पतियानी मे कुर्सी राखल छल। कुर्सी पर शिवकुमार, हीना, शिवकुमारक पिता बुद्धिनाथ मिश्र, जिलाक कलक्टर, एस.पी., प्रखण्ड प्रभारी एवं लगपासक थोड़ेक गण्यमान्य व्यक्ति बैसैत गेलाह। ठक्कन आ कल्लू सभ तरहक व्यवस्थाक कर्णधार रहथि। दुनू एमहर-ओमहर घुमि-फिरि क' सभ तरहक काज क' रहल छलाह।

हीनाक उपस्थिति आश्चर्यक संग आकर्षणक केन्द्र बिंदु बनल छल। गौर वर्ण, नील आँखि आ उज्जर साड़ी पहिरने सौन्दर्यक महारानी के छथि? की ई स्कूलक उद्‌घाटन लेल परी देश सँ नीचाँ उतरि क' आयल छथि? मात्र ठक्कन आ कल्लू केँ बुझल छलनि जे हीना के छलीह। बुद्धिनाथ मिश्र तक केँ अपन बालकक विवाहक मादे किछु ने बुझल छलनि।

सभ सँ पहिने जिला कलक्टरक भाषण भेल। फेर भाषणक क्रम चालू भेल छल। बुद्धिजीवीक भाषण लम्बा आ बोरियत सभ दिन सँ होइत एलैए। अन्त मे बुद्धिनाथ

मिश्र कँ निवेदन कयल गेलनि जे ओ दू शब्द बाजि विद्यालयक मंगल लेल आशीर्वाद देथि। बुद्धिनाथ मिश्र ठाढ़ भ' माइक मे मुह सटा बाजब शुरु कयने रहथि–शिव कुमारक खर्चे, ठक्कनक परिश्रमे, कल्लूक सहयोगे आ पीड़ापुरक भाग्ये विद्यालयक निर्माण भेल अछि। विद्यालयक उपयोगिता की छैक से सर्व विदित अछि आ पछिला सभ वक्ता वृहद रूपँ बाजि चुकला अछि। हमर बस एकेटा बात कहब अछि जे विद्यालयक नाम मे जोड़ल हमर नाम अनुचित अछि। कोनो देवी-देवताक नामे विद्यालयक नाम होअय त' नीक बात भेल। धरती पर जनमल मनुक्ख पछिला जन्मक अर्जन कयल कर्मक भोग करैत अछि। ओ एखनुका जीवन मे अगिला जीवन लेल पुण्य आ कि पापक मोटरी तैयार करैत अछि। तँ मनुक्ख पृथ्वीक आन-आन जीव जकाँ एक साधारण प्राणी मानल जैबाक चाही। ओकर नाम कँ विशिष्ट बनायब पाप भेल। तँ हमर आग्रह होयत जे विद्यालयक नाम सँ हमर नाम हटा देल जाय। विद्यालयक उचित नाम हेतै 'उच्च विद्यालय, पीड़ापुर'। हम अहि विद्यालयक कुशल लेल ईश्वर सँ प्रार्थना करैत रहब तकर बचन दैत छी। धन्यवाद!

थपड़ीक गरगराहटि सँ सभा समाप्त भेल। सभलोक आ पदाधिकारी प्रस्थान केलनि। शिक्षक वृन्द एक कात जमा भेलाह। सभ कँ मधुर एवं फलक पॉकिट भेटलनि। विद्यालयक एक कात मे बनल एकटा कोठली मे विशिष्ट अतिथिक अल्पाहारक व्यवस्था छल। ओही कोठली मे कुर्सी पर बुद्धिनाथ मिश्र बैसलाह। हुनक बक्र भेल आँखि मे घनघोर जिज्ञासाक अन्हड़ हिलकोरि रहल छल। बुद्धिनाथ एकटक हीना कँ निहारि रहल छलाह। बीच मे टेबुल छल। टेबुलक ऊपर छोट-छोट प्लेट मे फल आ मिठाइ राखल छल। टेबुलक दोसर कात एक कुर्सी पर शिवकुमार तथा दोसर पर हीना बैसलि छलीह। ठक्कन आ कल्लू कने हटल ठाढ़ भेल शिवकुमार एवं हीना कँ स्नेह सँ देखि रहल छलाह।

बिना कोनो औपचारिकताक बुद्धिनाथ मिश्र अपन बालक शिवकुमार सँ प्रश्न कैलनि–ई कन्या के छथि? हिनक नाम कि थिकनि?

–हिनक नाम छनि हीना आ ई हमर पत्नी छथि।

–हीना? हीना केहन नाम भेलै? हिनक माता-पिताक नाम की छन्हि?

–हिनक माताक नाम परीशा आ पिताक नाम मेहदी अली खाँ।

शिवकुमारक जवाब सुनि बुद्धिनाथ मिश्रक चेहरा पर भयंकर प्रतिक्रिया भेलनि। ठोर पर ठोर जमि गेलनि, आँखिक डिम्हा बाहर निकलि गेलनि। ओ कातर वाणी मे बजला–तोँ मुसलमानी सँ बिआह केलए? हमरा एकर खबरियो नहि। हे राम! हे राम!! हमरा सँ एहन अनर्थ किएक केलह? हे ईश्वर! तोँ हमर बालक कँ हमरा

मुखाग्नि देबा जोकरक नहि छोड़लह। कोन जन्मक पापक बदला तोँ लेलह अछि? अइ सँ नीक होइत जे हम निपुत्रे रहितहुँ। हमर त' वंशके नाश भ' गेल। हमर त' लोक-परलोक, दुनूक सत्यानाश भ' गेल।

बुद्धिनाथ मिश्र बड़ी काल धरि बड़बड़ाइत रहलाह। हुनकर ठोर मे कम्पन होइत रहल। बेग मे आबि ओ कुर्सी सँ उठ' चाहलनि, मुदा उठि नहि सकलाह। हुनका हिचकी होयब प्रारम्भ भ' गेलनि। हुनकर पुस्त-दर-पुस्तक संस्कार, विश्वास आ ताहि सँ उपार्जित भेल अहंकार पर जबर्दस्त वज्रपात भेल छलनि। आघात कैँ ओ सहि नहि पौलनि। कुर्सी पर बैसले-बैसल हुनक प्राणान्त भ' गेलनि। बुद्धिनाथ मिश्रक गरदनि एक कात झूल' लगलनि। कल्लू जल्दी सँ कुर्सी लग पहुँचि हुनकर देह कैँ पजिया लेलनि, मिश्रजीक मृत शरीर कुर्सी सँ नीचाँ नहि खसल।

शिवकुमार एकटक अपन पिता कैँ देखि रहल छलाह। हुनका द्वारा बाजल शब्द कैँ श्रवण क' रहल छलाह। पिताक स्थिति देखि हुनक शरीर मे शोणितक प्रवाह रुकि गेलनि, चेहरा उज्जर भ' गेलनि, आँखि स्थिर भ' गेलनि। शिवकुमार विक्षुब्ध भेल कुर्सी सँ उठलाह आ पूर्णतः अचेतन अवस्था मे बताह बनल कोठली सँ बाहर निकलि एक दिस पलायन क' गेलाह।

सभटा घटना एक-दू मिनट मे खत्म भ' गेल रहए। विधाता अपन तमाशा समाप्त क' प्रस्थान क' गेल रहथि। हीना यद्यपि स्थानीय भाषाक जानकार नहि रहथि मुदा ओत्तय तखन की भेल रहै तकरा ओ नीक जकाँ बुझि गेलि छलीह। हीना चुपचाप कुर्सी पर बैसले रहलीह।

एखन तक खिस्सा कल्लू कहि रहल छला। कल्लू कैँ रोकि मालिक बाबा पल्लवी दिस तकलनि। पल्लवी एकाग्र भेलि खिस्सा सुनि रहल छली। खिस्सा मे विराम भेल छल, पल्लवीक ध्यान भंग भ' गेलनि। ओ मालिक बाबा दिस एना तकलनि जेना पूछि रहल होथि—तखन की भेलै, से कहियौ ने!

मालिक बाबा गला साफ कैलनि तखन कहब आरम्भ कैलनि—तकरबाद की की भेल रहै, से हमरा कह' दिअ। एक अजीबे दृश्य उपस्थित भ' गेल रहैक। एहन दृश्य जे हमरा आ कल्लू कैँ मथि देलक, दुनू कैँ अबिचंक पैसि गेल छल। सभटा उत्साह हतोत्साह मे परिवर्तित भ' गेल छल। बुद्धिनाथ मिश्र कुर्सी पर मरल पड़ल रहथि आ शिवकुमार बताह बनल कतहु चल गेल रहथि। एक अनजान महिला जनिका पहिले-पहिल देखने छलियनि, कुर्सी पर चुपचाप बैसल रहथि।

—मुदा वाह रे हीना दाइ! हम ओही दिन सँ हुनक प्रशंसक छी, हुनका आदर करैत छियनि आ एक तरहेँ हुनकर दास बनि अपना कैँ हुनकर अधीन क' देने छी। हीना

दाइक धौर्य, सहनशीलता एवं कार्यकुशलता एहन विकट परिस्थितियोँ केँ काबू मे ल' अनने छल। हीना दाइ हमरा कहलनि—"आपका नाम ठक्कन है न? ठक्कन जी, आप और आपका साथी कल्लूजी जिस हालात मे अभी इस रूप मे हैं, वैसे ही बने रहँ। मैं बाहर जाकर तुरंत वापस आ रही हूँ। उसके बाद हम तीनोँ को क्या करना है उस पर विचार करँगे।"

हीना दाइ कोठली सँ बाहर गेलीह। हुनका संग आयल हुनकर सभटा कर्मचारी स्कूलक बरामदा पर राखल ब्रँच पर बैसल छल। हीना दाइ आवश्यक निर्देश द' सभटा कर्मचारी केँ बिदा कैलनि। आपस कोठली मे आबि हमरा कहलनि—"फिलहाल शिव कुमार की चिंता को दरकिनार करके उनके मृत पिताजी का हिन्दू धर्म एवं रीति-रिवाज के अनुसार क्रिया-कर्म की व्यवस्था करँ। जब तक यहाँ का काम पूरा नहीं हो जाता है, शिवकुमार वापस नहीं आ जाता है, मैं तबतक यहीं शिवकुमार के पिता के घर मे रुकी रहूँगी।"

पल्लवी, हमहीं बुद्धिनाथ मिश्र केँ मुखाग्नि देलियनि, हुनकर सराध कैलियनि। हीना दाइ शिवकुमारक पिताक घर मे आवास बना रह' लगलीह। किछु दिनक बाद ओ हमरा आ कल्लू केँ संग ल' क' दरभंगा गेलीह। स्टेट बैंक मे अपन खाता खोलबौलनि। चिट्ठी आ टेलीग्राम सँ अपन कर्मचारी केँ निर्देश पठौलनि। तहिए सँ ल' क' एखन तक बैंकक, पोस्ट ऑफिसक एवं टेलिग्रामक हुनकर सभठा काज कल्लू करैत आबि रहलए।

—करीब छह मास बीतल हेतै। हीना दाइ हमरा कहलनि जे शिवकुमारक आपसीक हुनकर प्रतीक्षा लम्बा भ' सकैए। तँ ओ जाहि घर मे रहै छथि ओकर मरम्मति करौतीह। बुद्धिनाथ मिश्रक बासडीह मे बंशीवट गाछ एवं इनार केँ कायम रखैत समूचा सिकमी घर केँ अपन जरूरति मोताबिक ओ बनबौलनि।

—तकर किछुए महिनाक बाद कल्लू समाचार अनलनि जे हनुमान भगत अपन साधुपूराक मौजे बेच' चाहैत छथि। हीना दाइ केँ एकर खबरि भेटलनि। भगतजीक जोता जमीन, कलम-गाछी आदि मिला क' सभटा रकवा एकावन बीघाक छल। कल्लूक माध्यमे सबटा जमीनक तौजी, खाता, खेसरा, रकबाक व्योरा तैयार करबा आ तकर दाम-दिगर तय करबा केँ हमरा नामे हीना दाइ खरीदबौलनि। जमीनक मूल्य संगे रजिस्ट्री तकक खर्च हीने दाइ देलथिन। हमरा बापक देल नौ बीघा खेत, सात कट्ठाक घराड़ी आ दू गोट महींस मात्र छल। बाल्यकाल मे हमहूँ महींस चरबैत रही। बाढ़िक कारणे उपजा नाम मात्रक होइत रहै। तँ दूधे बेचि क' घरक नोन-रोटी चलैत छल। हीना दाइक कृपा सँ एतेकटा हमर सम्पत्ति बनल। ओही हीना दाइ केँ गगना

डाइन कहि अपमान कैलक अछि।

—एतबे नहि, थोड़ेक आगूक बात सुनू। बाढ़िक कारणे नवकी पोखरि भथि गेल छलै। हीना दाइ ओकरा उड़हबा क' ओही माटि सँ एखन जतय हमसभ बैसल छी तकरा उँच्च क' भरबौलनि। हमर एखुनका पोखरिया पाटन आँगन-दलान राधे-श्यामक मंदिर तथा नवकी पोखरिक पक्का घाट हुनके खर्चे बनल। कल्लू हनछिन-हनछिन करिते रहलाह। हीना दाइ हिनका नामे पुष्ट क' फिक्स डिपोजिट बैंक मे क' देने छथिन। कल्लू अपन विचारे आ की प्रेमवश हमर देबान बनि हमर सेवा मे छथि।

—पल्लवी, एखन जतय नाटक आ कबड्डीक खेला भेलैए ओतहि हनुमान भगतक कहचरी छलै। ओतए एक कात मे एखनहुँ कल्लूक पिता बला घर छैहे। घर एकांत मे छै आ वैह घर शिवकुमारक रैन-बसेरा बनलए। ओना त' शिवकुमार चौरे-चाँचर मे बौआइत रहैत छथि, मुदा ओहि घर मे एक बेर अवश्ये अबैत छथि। शिवकुमार लेल भोजन आ जरूरतीक मोताबिक वस्त्र हीने दाइक ओहि ठाम सँ जाइत अछि। ई सभटा काज पहिने कल्लू करैत छलाह। मुदा पिछला एक बर्ख सँ अहि काजक भार गंगा पर छनि। शिवकुमार पता नहि किएक, गंगा सँ बड़ बेशी स्नेह करैत छथि।

—लगभग पछिला पचास बर्ख सँ हीना दाइ एतय तपस्या क' रहलीह अछि। एतय किछु नइँ बदलौलै। बदललै अछि एतबेटा जे हीना दाइ हीरा मौसी, शिव कुमार शिबू बाबा आ हम ठक्कन, मालिक बाबा बनि जीवि रहलहुँ अछि। हीना दाइ कहने छलीह जे हिन्दू होअय आ की मुसलमान, परोपकार सँ बढ़ि क' कोनो टा धर्म नहि अछि। हुनके सँ प्रेरणा पाबि हम सम्पूर्ण साधुपूराक दुख आ जरूरति कँ पूरा करैत हीना दाइक देल सम्पत्तिक सदुपयोग क' रहल छी।

—पल्लवी, अहाँक प्रबल जिज्ञासा छल जे हीरा मौसी के छथि, शिवू बाबाक गला मे एतेक दर्द किएक छनि आ मालिक बाबा सभ सँ खुलि क' गप्प-सप्प किएक ने करैत छथि, तकर समाधान भ' गेल ने! हीना दाइक अंतहीन धैर्यक पीड़ा हुनके टा नहि, हमर आ कल्लूक हृदयक पीड़ा सेहो बनल अछि। मुदा एकर प्रतिकार मे हम आ कल्लू कैए की सकैत छी। कखनहुँ काल मोन जखन बहुत दुखी होइत अछि त' भगवान कँ उलहन द' मोन कँ शान्त करैत छी।

—पल्लवी अहाँ पढ़लि-लिखलि छी, हमर प्रश्नक जवाब दिअ। प्रश्न अछि जे हीना दाइ बिना अपराधक एतेकटा प्रायश्चित्त किएक क' रहलीह अछि?

पल्लवी मालिक बाबाक प्रश्नक जवाब देबा मे असमर्थ छलीह। हुनका हृदय मे हाहाकार मचल छल। बिना अपराधक एतेकटा प्रायश्चित्त? की हीरा मौसी सीताक धैर्यक यातना सहि रहल छलीह? एक अंतहीन धैर्य जकर कोनो सीमा नहि, तात्पर्य

नहि। मात्र प्रेमक ताग पर अटकल एकटा विश्वास। मौसीक त्यागक सामने शिवकुमारक प्रेम? कोन बात कैँ पल्लवी सही मानथि, हुनका बुझ' मे किछु आबिए ने रहल छल।

मौसीक जीवनक खिस्सा सुनि पल्लवीक हृदय मे मौसी लेल अपार श्रद्धा उमड़ि अयलनि। मौसीक त्यागक आगाँ ओ नतमस्तक भ' गेलीह। ताहि क्षण पल्लवीक एकेटा उत्कट इच्छा छलनि जे ओ मौसीक पयर पर मूड़ी राखि कनथि आ चिचिया-चिचिया क' बाजथि—मौसी, अहाँ मनुक्ख नहि देवी थिकहुँ।

9.

कोबी कैँ एको मिनटक फुर्सति नहि। ओकरा उखी-बिखी लागल रहै। ओ भोरेभोर गगन यादवक दूरा पर पहुँचल। पीड़ापुरक सभटा स्थान शांत आ सुनसान। मुदा मुखियाक आवास मे चहल-पहल। मुखिया कुर्सी पर बैसल छल। ओकर बगल मे तीन जन आरो कुर्सी पर बैसल रहए। कोबीक अनुमान सही निकलल। तीन जन मे मंगलीक वर ललुआ मोची, ओकर बाप गंगुआ मोची आ मोची जातिक माइनजन मुखीराम पहिने सँ ओतय पहुँचल रहए। मंगलीक कहूँ एहन वर होइक? शरीर आ वस्त्र, दुनू सँ गनहाइत। संविधान मे आरक्षणक प्रावधान अछि से सही। मुदा आरक्षित जाति लेल नित्य स्नान करक निर्देश सेहो रहबाक चाही। कोबी नाक-मुह सिकोड़लक। गगन यादव कोबी कैँ देखिते पुछलक—बौना आ मधुरिया, दुनू किएक ने अयलै?

अफसोच करैत कोबी जवाब देलक—बौना जातिक हजाम, बुद्धिक तेज आ बाज' मे मुहफट। कहलक जे ओ मुखियाक जमीन मे नहि बसैत अछि जे ओकर बात मानत। छठि पाबनि दिन ओ कैंची-अस्तूरा नहि छुबैत अछि। मधुरिया त' आरो बिख बला बात बाजलए। ओ कहलक जे मलाहो छठि पाबनि दिन ने माछ मारैत अछि आ ने माछ खाइत अछि। मुखियाक मति मारल गेलैए। हिन्दू भ' क' अजुका दिन जे माछ खाइये से मलेच्छ अछि, कुलबोरन अछि।

गगन अपन खौंजाहटिक प्रदर्शन करितए, मुदा ताहि सँ पहिने हनहनाइत ओतए एकटा जीप पहुँचि गेल। जीप स्थानीय थानाक छल। जीप सँ दरोगा एवं मिसरीलाल ताँती उतरल आ सोझे गगन लग राखल कुर्सी पर बैसि गेल। गगन कोबीबला समाद मिसरीलाल कैँ कहलकै। मिसरीलाल जवाब देलकै—हम एकर अनुमान पहिने सँ लगा चुकल छी। साधुपूरा मे कोनो जातिक छौंड़ा किएक ने होअय, अपन सभक मति मे नहिए आओत। सभटा छौंड़ा गंगाक दोस्ते छियै ने? एकटा कोबिए टा अछि जे जी जान सँ अहाँक सहायता मे लागल अछि। मुदा घबड़ैबाक बात एको पाइ ने।

कोबी अपन प्रशंसा सुनि प्रसन्न भेल। मदतिगार जँ मिसरीलाल सनक होअय त' सही मे घबड़ैबाक कोनो बात नहि छल। मिसरीलाल बजिते रहल—हजाम आ की हलुआइ मुसलमानो मे होइत छै। कनिए काल मे हजाम आबि जाएत आ वर, वरक

बाप आ मुखीरामक हजामत क' देत। तखन ई तीनू गमकौआ साबुन रगड़ि-रगड़ि स्नान करत, कटेली-चम्पा तेल लगा केश सीटत आ ललका धोती तथा पिअरका कुर्त्ता पहिरि क' फीट भ' जैत। तकरबादक हमर गप्प सुनू। हम माछक प्रोग्राम केन्सिल क' मुर्गा पर आबि गेलहुँए। भोरका जलखै भेल पूड़ी-जिलेबी-तरकारी। दिनुका आ रतुका भोजन हैत मुर्गा-पोलाव-रसगुल्ला।

कोबीक मुह मे रसगुल्लाक रस भरि गेलै। ओ मुह चोभैत मिसरीलालक इन्तजामक अनुमोदन कैलक। गाम आ गामक जनताक उन्नति लेल सरकार बहुतो किस्मक योजना चला रहल अछि। आजुक समय मे जाहि मुखियाक महिनाक आमदनी लाख टका सँ कम छै से मुखिया अयोग्य अछि, अभागल अछि आ मूर्ख अछि। मुखियाक जमात मे गगन ने अयोग्य छल आ ने मूर्ख। ओ एक दिन पहिने मिसरीलालक हाथ मे दस गोट हजारी नोट दैत कहने रहए—मास्टर, सभटा इन्तजाम करक तोरे जिम्मा। खरचाक परबाहि नहि करिहेएँ। हम बाबा कैँ चित्त कर' लेल कोनो सीमा तक खरचा क' सकैत छी। गंगा आ मंगलीक बिआह कोनो तरहेँ ने होअय से एखुनका हमर जीवनक लक्ष्य अछि।

मिसरीलालक आँखि कुइर रहै, अकिल मे खुराफात भरल रहै आ साधुपूरा मे एक दिन पहिने भेल अपमानक ज्वाला ओकर मोन मे धू-धू क' धधकि रहल छलै। विधायकक कारणे थाना मुट्ठी मे आ मुखियाक नजायज कमायल धन जेबी मे। ओकर बुद्धि फुल स्पीड मे ओकर सहायता क' रहल छलै। ओकर योजना सफल हेबै टा करतै। काल्हि मंगलीक वर मंगलीक विदागरी करा क' लइए जेतै। तखन? मालिक बाबा बनल ठक्कन यादवक दशा केहन हेतनि? मिसरीलाल भीतरे-भीतर घुटकि रहल छल।

तखने भीतर आँगन दिस सँ कोबीक काव्य-गुरु सदानन्द झा 'दीन' प्रगट भेलाह। दीनजीक हाथ मे ट्रे छलनि। ट्रे मे गर्म चाहक भरल लगभग दस गोट गिलास भफा रहल छल। कोबी अचम्भित भेल पुछलक—श्रीमानक हाथ केहुनी तक पिअर किएक छनि?

जवाब गगन देलकै—मूर्ख चपाट नहितन! एतबो ज्ञान नहि छह! आगाँ बाम कात टाट दिस तकलक। हौउ, सदानन्द वर आ बरियात लेल धोती रंगलनि अछि।

कोबी टाट दिस तकलक। रंगल धोतीक पाँत मे कोरबला नुआ सेहो पसारल रहै। कोबी कैँ अपन गुरुक रंगल हाथक कारण बुझ' मे आबि गेलै।

दीनजी चाहक ट्रे मुखियाक आगाँ राखि देलनि। गगन खोखिया क' बाजल—मूर्खाधिराज नहितन! चाह पहिने पाहुन कैँ देबहुन से नइँ?

दीनजी सभ कैँ चाह बँटैत कोबी लग पहुँचला। कोबी फुसफुसा क' बाजल—गुरुवर, हम एखनहि एकटा कविता रचलहुँ अछि। सुनि लिअ, "बाभन कुल मे जनम देल', आउर देल अभिमान। दुर्गति हमर देखि कए, सभ करए अपमान। दैव हौ, हमर फँसल अछि परान।"

कविता सुना क' कोबी जिज्ञासा कैलक—केहन लागल हमर कविता? मात्रा एवं अलंकार सही छै ने?

सदानन्द बाचाल कोबी दिस आँखि गुरेरि क' देखलनि। हुनका मोन मे भाव जगलनि—कोबी कैँ रगड़ि-रगड़ि, धो-माँजि क' किएक कवि बनौलनि? सदानन्द अपन बुड़िपनाक लेल अफसोच कर' लगलाह।

चाहक गिलास नीचाँ करैत दरोगा अपन मुहक ढक्कन कैँ अलगौलक—"मुखिया जी, हमार बतबा कैँ रौआ सुनी। विधायक का हुकुमबा। डरेबर साथे पेट्रोल भरल जीपबा साला रौआ के खातिर हाजिर बा। पीड़ापुर का टेन्ट हाउस का मालिक को खबर चल गइलबा। टेबुल, कुर्सी, सतरंजी, जाजीम, बर्तन, पेट्रोमैक्स जेतना सामान का जरुरत होइ सरौं के देबै के बा। आब आउरो सुनल जाओ। थाना का सभ हिंदू सिपाही छठ क छुट्टी मे गइल बारन। बच गइल दो ठो मुसलमान सिपाही। दुनू साला हजूर के खिदमत मे रहिहएँ।

—विधायक चेता गइलनहँ जे अनुसूचित जाति का इज्जत का सवाल बा। हमर जरूरत जब-जब होइ हम हाजिर रहबे करब। दलित जाति का रक्षा करब सभ से अधिक पुनीत काजबा। एखनी थाना खाली बानु, हम जात बानी।"

दरोगा गेल। पहिल खेप मे कुर्सी, टेबुल, सतरंजी, जाजिम आदि सामान जीप पर लादल गेल। दुनू सिपाही काठक राइफिल लेने पाछाँ बैसल आ पान चिबबैत मुह लाल कयने कोबी डरेबरक बगल मे जगह पकड़लक। जीप कैँ स्टार्ट हेबा सँ पहिने गगन कोबी कैँ बुझबैत कहलकै—दोसर खेप मे कनियाँ, कनियाँक माय आ कनियाँक बहीन लेल नुआ-आँगी देबौ। ओही खेप मे खेबा-पिबाक सभटा सामग्री सेहो जेतै। एखन एतबा वस्तु कैँ तौँ उघने अबै।

जीप साधुपूरा पहुँचल। बुढ़बा पीपरक गाछ लग जीप ठाढ़ भ' गेल। आगू रस्ते ने छलै। सभटा धानक खेत। नवकी पोखरिक उतरबरिया मोहार तक आरिए-आरिए रस्ता। मोहार लग सँ सिनुरिया काकीक घर तक पाव भरि जमीन। मुदा जीप महक सामानक उगाही हैत कोना? गामक एकोटा लोक त' मदति मे आओत नहि। सिपाही आ डरेबर ई काज करत नहि। कोबी मुश्किल मे पड़ि गेल। ओ जीप सँ उतरि पोखरिक मोहार तक आयल। संयोग सँ ओकर बाप सुरता चौपाल ओकरा भेटलै।

कोबी कँ देखइते सुरताक रंज ओकरा पकलाहा मौँछ पर फनफनाय लगलै। ओ कोबी कँ फज्झति करैत कहलक—सौंसे गामक लोक एक कात आ तौँ दोसर कात। मालिक बाबा संगे दुश्मनी कर' लेल तोरा कँ उसकैलकौए तकर नाम बाज? तौँ अगिमुत्तू बनल फुदकि रहल छँ से किएक? तौँ एहन बेहाया किएक बनि गेलँ?

—हौ बाबू, तौँ बूढ़ भेलह आ भसिया रहल छह। तोहर बुद्धिक डिबियाक तेल निंघटि गेल छह। तोरा एक डेग आगाँ तकक भुइयाँ सुझि नहि रहल छह। हमरा गुरुवर सदानन्द झा 'दीन'क कृपा सँ दू कोस आगाँ तकक जमीन देखाइ पड़ि रहल अछि। आब धियान सँ हमर बात सुन'। गंगा मालिक आ मंगलीक लटपट वला बात की नीक बात भेलै? यादव आ चमार मे कहियो रिस्ता भेलैए जे एखन हेतै? एहने बिआह कँ रोकै लेल ने गगन मालिक फाँड़ कसलखिन अछि। अहि मे गलती वला बात की भेलै? दोसर अहू सँ गंभीर आ गहींर बात कँ तौँ अपन मगज मे ढुक' दहक। गंगा मालिक आ मंगलीक बिआहक परमिशन देलथिन अछि हीरा मौसी। हीरे मौसी दुआरे मालिक बाबा चुप्पी सधने छथि। आब गगन मालिक ई बिआह कँ होब' नहिए देथिन्ह। मंगलीक वर आबि गेलैए। तखन हेतै की? मंगलीक सासुर जाइते गंगा मालिक बताह बनि बौरा जेथिन। एकर दुख आ क्वाथ मे मालिक बाबा ओछाइन ध' लेथिन आ शीघ्र परलोक बिदा भ' जेथिन। ललित मालिक अपन पढ़ाइ छोड़बे नहि करथिन आ ओ पटनेक वासी बनल रहथिन। तखन साधुपूराक अहि यादव सम्पत्तिक मालिक हेतै के? जवाब नहि फुराइ छह ने? हौ बाबू, जवाब हमरा सँ सुन'। अहि सम्पत्तिक मालिक हेथिन गगन मालिक आ हुनकर खरखाह हम मैनेजर बनबइ। जँ कल्लू, कारी मंडल, राउत आ तोहूँ नौकरी सँ निकालल नहि गेल' त' सभ हमरे अधीन मे रहब'। आब खुजल' तोहर आँखि, हम किएक गगन मालिकक पाट धैने छी?

बेटा जखन बालिग भ' जाए, गार्जियन बनि बाप कँ उपदेश दिअ लागए त' बाप कँ असीम प्रसन्नता होइत छैक। सुरता अपन बेटाक युक्तिसंगत तर्क सुनि आनन्दे विभोर भ' उठल। आब जीप महक सामान उघै लेल कोबीक परेशानी खतम भ' गेलै। ओकर बाप सुरता, माय धनुकाहीवाली एवं प्रेयसी कमली जीपक सामान उघैया मे लागि गेल।

थानाक जीप तीन खेप पीड़ापुर सँ साधुपूरा तक दौड़ल। चारिम खेप मे मंगलीक वर ललुआ, ओकर ससुर गंगुआ, जातिक माइनजन मुखिराम, दरोगा एवं गगन यादव सिनुरिया काकीक सजल-सजाओल दूरा पर पहुँचैत गेल। मिसरीलाल लाथ क' देलकै। गंगा हाथक भाला एवं राउतक फेकल झटहा ओकरा बिसरने ने बिसरल जाइत रहै।

सिनुरिया काकीक घर गामक एककात जिम्मर, सिम्मर आ जामुन गाछ सँ घेरल लगभग तीन धूर मे छलै। दलान पर बनल माटिक मतंगा आ खरहीक टाट सँ घेरल आँगन। आँगन मे एकेटा अलंग जाहि मे एकटा झाँझबला कोठली। ओही कोठली मे मंगली बन्द छलि। कोठलीक फड़की भिड़ाओल छलै आ ताला लगाओल रहै। सिनुरिया काकी स्वयं पहरा पर बैसलि छलि। मंगली सँ तीन बर्खक ओकर छोट बहीन देवकी ढेकी पर बैसलि चुपचाप तमाशा देखि रहल छलि।

मतंगा पर सतरंजी-जाजीम ओछाओल रहै। कोबी आग्रह क' वर, समधि आ माइनजन कँ बैसोलक। दुनू सिपाही नीचाँ कुर्सी लग ठाढ़े रहल। मुदा दरोगा एकटा कुर्सी पर बैसैत निःस्वास छोड़लक—"पुलिस की नौकरी मे कैसा-कैसा बेहुदा काम करना पड़ता है उसका नमूना कोइ यहाँ आकर देखे। करँ भी तो क्या करँ? साला विधायक का ऑर्डर है।"

गगन आँगन पहुँचल। सिनुरिया काकी कँ हिदायत दैत कहलक—गामक एकोटा छौंड़ा-छौंड़ी आँगन मे पयर नहि दिअए तकर धियान राखब। सभ अपन समाज दुश्मने अछि। काज कर' लेल कोबी आ फतुरनक बेटी कमली अछिए ने, तहन खगता कथिक? काकी, एकदमे सँ सावधान रहैक छै। तोहर चमार जातिक प्रतिष्ठाक सवाल छौ।

गगन सिनुरिया काकीक हाथ मे एकटा मोटरी देलक आ कहलक—अहि मे कनियाँ, कनियाँक माय-बहीन लेल नुआँ-बस्तर छौ। खरचा-बरचा तोरा करक छौहे नहि, तइयो पाँच सय टाका राखि ले।

सिनुरिया काकी वस्त्रक मोटरी आ रुपैया लेलक। तखन ओ गगनक आँखि दिसि तकलक। ओतए घृणाक ज्वालामुखी महक पिघलल लाबा बहि रहल छल। सिनुरिया काकी भय सँ काँप' लागलि। ओ मनहिमन बाजलि—हे छठि परमेसरी! हमरा क्षमा क' दिअ। हम गरीब, लाचार। हमर कोनो दोख नहि।

लग मे ठाढ़ कोबी कँ गगन सचेत करैत कहलकै—खरहीक टाट मे माटिक लेबा सैह भेल कोठलीक देवाल। एकरा चीरि-फाड़ि क' कियो पड़ा सकैत अछि। फड़की मे ताला लटकले रहि जेतै। कोबी, तोरा राति भरि जागि क' पहरा दिअ पड़तौक?

हाथ जोड़ि मूड़ी झुका कोबी जवाब देलक—अहाँ मालिक, हम सेवक। जँ अहाँ हुकुम देबै त' हम लछमन जकाँ राति मे सुतनाइए त्यागि देब, एक रातिक कोन कथा।

—कोबी, गप्प कँ बेशी चिआर नहि। मात्र अझुका राति तोरा जागि क' बितब' पड़तौक। चारि-चारि टा पेट्रोमैक्स आयल छौ। सिपाही कँ पेट्रोमैक्स लेस' अबैत छै।

घरक चारूकात लाइट लेस क' राखि देबहिन। अधिक इजोत त' चाहबे करी, किएक त' समूचा साधुपूरा विरोध मे छौ। कहुना राति बीति जाए। काल्हि भोरे जखन मंगली अपन सासुर चल जैत तखन हमर धर्मपरायण आ परोपकारी बाबा गंगाक बिआह ककरा सँ करौताह?

गगन अपन कन्हा पर सँ एकटा झोड़ा उतारलक। झोड़ा मे लाल-लाल पेय पदार्थ सँ भरल एकटा बोतल निकाललक। बोतल कँ कोबीक हाथ मे दैत बाजल–पिओर मिलिटरी वला थ्री एक्स रम छै। खेबा सँ पहिने गिलास मे चौथाइ भाग रम आ बाँकी मे पानि मिला क' शर्वत तैयार क' लिहँ। दलान पर सभटा पाहुन कँ एक-एक गिलास शर्वत पिआ दिहँ। सब टनटन भेल रहतौ। तकर बाद सभ कँ मुर्गा-पोलाव परसि दिहँ। तौँ अहि शर्वतक एको घोँट नहि पिबिहँ, नहि त' तोरा निशा पछाड़ि देतौ। तोरे पर सभटा काजक जिम्मेदारी छौ ने। एकटा औरो बात। वर जखन आँगन अबै त' विशेष, क' साकांक्ष रहिहँ। बेसी विधि-वाधक जरूरते की? बिआह त' नेनहि मे दुनूक भ' चुकल छैक। ओहुना ललुआ आ मंगली एके कोठली मे एके बिछौन पर सुतत त' सभटा विधि अपने-आप भ' जेतै।

गगनक अंतिम निर्देश सुनि कोबीक कवि हृदय मे श्रृंगार रस मे सराबोर प्रेमक अनुराग जनमि गेलै। कनेकाल तक मंगलीक अद्‌भुत सौन्दर्यक पताखा ओकरा मोन मे फहराइत रहलै। कोबीक ठोर पर अनायास मुस्की पसरि गेलै।

गगन यादव आ दरोगा आपस गेल। दलान पर ललुआ, गंगुआ आ मुखीराम तथा दलानक नीचाँ कुर्सी पर दुनू सिपाही चुपचाप बैसल रहल। साधुपूरा समयक धार मे शांत भेल भसिआइत रहल। दिन बीति गेलै। साँझ होइतहि सिनुरिया काकीक दलान-आँगन लाइटक इजोत मे नहा गेलै। मुदा मनुक्खक कोन गप्प, साधुपूराक कुकूरो ओतए खोज-पुछारि कर' लेल नहि अयलै।

छठिक सँझुका अर्घ पड़ि गेलौ। सभ अपन-अपन घर आपस गेल। साँझ अपन करिक्का चद्दरि पसारि सभ किछु कँ अन्ह्हार मे झाँपि लेलक। ताहि काल पछबा बसात सेहो सिहक' लागल छलै। अन्हरिया राति कँ चिरैत कतहु सँ एक झुंड छौंड़ाक आ दोसर झुंड छौंड़ीक नवकी पोखरिक पक्का घाट पर पहुँचल। जेना कोनो एकहि तरहक समस्या सभ कँ उद्विग्न कयने होइ तेहने सभक आचरण छल। छौंड़ा-छौंड़ीक झुंड मे कोनो तरहक हलचल नहि, मात्र हल्लुक ध्वनि मे फुसफुसा क' बाजब, जेना मधुमाँछी भनभना रहल होअय। सभ शांत मुदा अचल भेल घाट पर बैसल रहल। अंत मे छौंड़ाक झुंड सँ बचकुन आ छौंड़ीक झुंड सँ रामदीन कुम्हारक बेटी चनकी, एक कात मे जा क' खानगी कर' लागलि। अपन कथन कँ अन्त करैत चनकी कहलक–

मंगलीक बहीन देवकी आ रुदलाक बहीन निरमलिया एक उमेरक अछि आ अपना मे बहिन-पा लगौने अछि। दुनू मे प्रगाढ़ प्रेम, दुनू एक दोसरा कैँ सिनेह सँ फूलदाइ-फूलदाइ कहि सोर पाड़ैत अछि। हम निरमलिया कैँ सभ बात बुझा देलियैए। ओ देवकी कैँ तौयार क' लेत। देवकी निरमलियाक बात नहि कटतै। निरमलिया देवकी कैँ सभ बात बुझा क' ओकरा की-की कर' पड़तै तकरा लेल तैयार कइए लेत। चिंता नहि करू, सभटा काज भ' क' रहतै। गंगा मालिक गामक किसन-कन्हैया, मंगली राधा-रानी आ बाँकी सभठा छौंड़ी राधाक सखी-सहेली। दुनूक लेल जँ प्राणोक निछाबर कर' पड़तै त' गामक सभटा छौंड़ी खुशी-खुशी क' देतै। यौ बचकुन भैया, समय कमे छै। आब हमरा सभ कैँ अगिला कार्यक्रम मे लागि जैबाक चाही।

एक खास तरहक विचार स्थिर भेलाक बाद छौंड़ीक झुंड सोझ रस्ते आ छौंड़ाक झुंड उनटा रस्ते सिनुरिया काकीक घरक लग पहुँचल। चारि-चारि गोट पेट्रोमैक्सक इजोत मे सिनुरिया काकीक घर उधिया रहल छलै। मुदा कनिकबे हटल गाछ-वृक्ष लग तेहने धुप्प अन्हार छलै। कोनो योजनाक अधीन छौंड़ा-छौंड़ीक झुंड अन्हार मे संच-मंच नुका क' ठाढ़ भ' गेल।

कोबी गगनक देल थ्री एक्स रमक बोतल हाथ मे लेने बाहर-भीतर क' रहल छल। ओकरा कविताक निशाक स्वाद भेटल रहै मुदा बोतलक निशा सँ ओ अनभिज्ञ छल। गगन मना कयने रहै मुदा मुर्गा-पोलावक सुगंधि ओकर बुद्धि कैँ हरि लेने रहै। जे हेतै से बुझल जेतै। कोबी कमली कैँ लग मे बजा क' दू प्लेट मे मुर्गा-पोलाव परसलक। फेर गगनक देखौल फर्मूला सँ गिलास मे रम नामक मदिराक शर्वत बनौलक आ कमली संगे खायब-पिअब शुरू कैलक। ओकर गिलासक शर्वत निंघटि गेलै, तखन ओ अपना लेल एक आरो शर्वतक गिलास तैयार कैलक।

मदिराक करामात आ कोबीक अपन लुच्चपना वला आदति। ओकर नजरि ढेकी पर बैसलि देवकी दिस गेलै। एखन ओकरा देवकी परी सन सुन्दर लगलै। कोबी इशारा सँ देवकी कैँ लग मे बजैबाक लेल सुरफुराइए रहल छल आ कि ओकर नजरि कमलीक चिआरल आँखि मे ठक्कर मारलकै। कमली गिलास महक मदिरा पीबि चुकल छलि। कोबीक मंशा बुझि क' ओकर आँखि सँ चिनगी निकलि रहल छलै। कोबी अपन ओहि कालक बेगर्ता पर कन्ट्रोल कैलक। मुदा कमलीक सासुर गेलाक बाद देवकी पर जाल फेकत, तकर दृढ़ निश्चय ओ अबस्से क' लेलक।

कोबी कने काल तक सुन्दर-सुन्दर भाव मे तरंगित होइत रहल आ कि हठात ओकरा अपन कर्तव्य दिस धियान गेलै। पाहुनक स्वागत करब जरूरी छै ने? गगनक कहल बातक अनुसारे ओ थ्री एक्स रम आ पानि मिला क' एक लोटा शर्वत तैयार

कैलक। तीन गोट पाहुन आ दू गोट सिपाही, कुल पाँच जन लेल पाँच गोट गिलास आ शर्वत सँ भरल लोटा ल' क' कोबी दलान पर पहुँचल। टेबुल पर लोटा आ गिलास राखि ओ शर्वती आँखि सँ सभ के देख' लागल।

कोबी कैँ देखिते एक गोट सिपाही छटपटाइत ओकर लग पहुँचलै आ कहलकै–"कोबी बाबू, जुलुम हो गइल। हमर बीड़ीक डिब्बा कहूँ गिर गइल। सरौं के खोजत-खोजत थक गैली, मुदा ना मिलल। भोजन के बिना रह सकिला मुदा बीड़ी का बिना नहिखे। रौआ, कहुँआँ से एक मुट्ठा बीड़ी मंगबा दू, आदत का सबाल बा।"

कोबी घनघोर विपत्ति मे फँसि गेल। बीड़ी भेटितए छेदियाक दोकान मे। एखन ओमहर जयबा मे मारि खयबाक अंदेशा। तारतम्य मे पड़ल कोबी अकबकाइत ठाढ़ रहि गेल।

तखने एकटा आश्चर्यवला बात भेलै। जमुनी गाछक अन्हार छाँह सँ तीर जकाँ छेदिया बाहर आयल आ बीड़ीक मुट्ठा सिपाहीक हाथ मे दैत बाजल–साधुपूरा गाम मे अतिथिक स्वागत मे त्रुटि? एकरा हम बर्दास्त नहि क' सकैत छी। हैअय लिअ बीड़ी। हम सलाइ सेहो अनने छी।

बीड़ी की आयल मंगलीक बरियात मे हरबिर्रो मचि गेल। आनन-फानन मे दुनू सिपाहीक संग तीनू पाहुन बीड़ी सुलगा लेलनि। मंगलीक वर ललुआ बीड़ीक से ने सौंट मारलक जे उकासी करैत-करैत बेदम जकाँ भ' गेल।

छेदियाक नाटक चालुए रहलै। ओ मुखीरामक आगाँ भुइयाँ पर पट दंडवत भ' पड़ि रहल आ बाजल–धन्य भाग्य जे अहाँ सनक महात्माक चरण साधुपूरा मे पड़लै। समुच्चा गाम नेहाल भ' गेल। सभ सँ पैघ जाति आ सभसँ पैघ पाप जाति अपमाना। जातिक रक्षा लेल अहाँ सशरीर आबि गेलिऐए, आब चाहबे की करी।

सम्प्रति मुखीराम दोसरे तरहक समस्या सँ जूझि रहल छलाह। हुनक धियान छेदियाक चापलूसी दिस कनिको नहि गेलनि। हुनका दुनू साँझ बाध दिस जयबाक आदति रहनि। बड़ी काल सँ दिनका मुर्गी-पोलावक पारस हुनकर पेट मे खौँची मारि रहल छलनि। ओ अपन जातिक माइनजन छलाह तैँ अपन पेटक अंतरी कैँ अनुशासन मे रखने छलाह। मुदा बीड़ीक सौंट पड़ितहि हुनक आदति हुकर' लगलनि। कोनो बेजाए बात ने भ' जाए, मुखीराम टेबुल पर शर्बत भरल लोटा कैँ झपटलनि आ दुलकी मारैत बाध दिस दौड़ि पड़ला।

कोबी कैँ क्षोभ भेलै। टटके बाढ़ि आयल रहै। बाध मे की पानिक अभाव छलै? मुदा थ्री एक्स रम सँ बनल लोटा भरि शर्वत, जे बरियातक स्वागत लेल कोबी अनने छल, तकरा ल' क' मुखीराम बाध दिस चल गेल रहथि। एमहर एकाएक छेदियाक

प्रगट होयब, बीड़ीक मुट्ठा सिपाहीक हाथ मे देब, मुखीरामक आगाँ दंडवत होयब, सभटा तमाशा ओकरा अजीबे लागि रहल छलै। ओहि समय आंगन दिसका टाटक बाहर मे ठाढ़ि भेल कमली दिस कोबीक नजरि गेलै। मदिराक प्रभावे कमलीक मुह चिक्कन मुदा आँखिक डिम्हा कर्जनी जकाँ लाल भ' गेल रहै। ओ इशारा सँ कोबी कैँ बजा रहल छलि।

कोबी कमलीक लग मे पहुँचल। ताही काल गाछक छाँह सँ बाहर आबि चनकी कोबीक सोझाँ मे ठाढ़ि भ' गेलि आ अनधुन उलहन देब शुरू क' देलक–हयौ कोबी जी, कमलीक गौनाक गनल दिन रहि गेलैए ने? गामक सभटा छौंड़ी शपथ खेलकए जे कमलीक बिदागरी काल कियो फतुरनक दूरा पर पयर नहि देत।

कोबीक माथ मे ओहिना थ्री एक्स रम सनसनी भरि देने छलै। एखन चनकीक उलहना आ सेहो ओकर प्रेरणादायिनी कमलीक प्रति। कोबी छटपटाइत पुछलक–से किएक, से किएक?

–अहीं कहू जे सासुर गेलाक बाद कोनो छौंड़ी नैहर सँ नाता राखि पबैत अछि? मंगलीक वर आबि गेलथिनए। काल्हि भोरे मंगली सासुर लेल बिदा भ' जायत। मंगली की घुरिओ क' कहियो साधुपूरा मे आबि सकत?

कोबी जवाब देलक–सासुर गेलाक बाद नैहर कैँ बिसर' पड़ैत छैक। यैह रीति छै। अहि मे नव बात की भेलै?

–से अहाँ सही बजलहुँ। तखन मंगलीक अजुका विधि-व्यवहार, अपन संगी-सहेली सँ भैँट-घाँट, सभ किछु अहाँ रोकि किएक देने छियै? मंगलीक बिदागरी काल सिपाहीक पहरा? छिआ, छिआ। ई की नीक बात भेलै?

–नीक बात त' नहिए भेलै। मुदा हम की क' सकैत छी? गंगा मालिक आ मंगलीक लटपट बला बात द' त' अहूँ अबस्से सुनने हेबै? गगन मालिक अपन छोट भाइक कुकर्म कैँ बर्दास्त कर' मे असमर्थ छथि। हुनका लेल यादव परिवारक प्रतिष्ठा बचाब' लेल मंगली के गाम सँ बिदा करब जरूरी भ' गेलनि अछि। एखन अहाँ जे किछु देखैत छियैक सभटा हुनके हुकुम सँ भ' रहलैए। हम त' मुखिया मालिकक एकटा पिआदा मात्र छी।

10.

ताबे तक चारि-पाँच गोट आरो छौंड़ी इजोत मे आबि चुकलि छलि। कोबीक आरोप सुनि चनकी लोहछि क' बाजलि—गाम घर मे की की होइत छै से की नुकायल रहैत छै? साधुपूराक कएटा निदग छौंड़ी सासुर जाइए? ई सभ बात सभ ठाम सभ दिन भ' एलैए आ आगूओ होइते रहतै। मंगली आ गंगा मालिक कने-मने जिनगीक सुख भोगलखिन्ह त' अहाँक छाती किएक दरकैत अछि? अहूँ की कमली कैँ तहदर्ज छोड़लियै जे अनकर दोख कैँ उजागर करैत छी? कहलकै की ने, जँ गंगा मालिक लंपट त' अहाँ की?

कोबी अपन प्रशंसा सुनि चहकि उठल। ओकर छाती फूलि क' कुप्पा भ' गेलै। मुदा ताही काल गाछक दोगाठी सँ कोनो छौंड़ी फतबी छोड़लक—इजोत मे कोबी आ अन्हार मे एकर बाप। हगौ, एकर त' खानदाने लफन्दर छै।

सत्य कड़ू होइत छै। फबती सुनि कोबी फनिक उठल। अपन कुकृत्यक संग अपन पूज्य पिताक क्वालिफिकेशन सुनि ओ दुखी भ' गेल, कुपित भ' उठल। ओ जवाब की दितए, मुदा किछुओ जवाब त' ओकरा देबाक छलै। मुदा कोबीक मुह खोलक अवसर नहि भेटलै। चनकी फेर सँ चनिक उठलि—यौ कोबीजी महराज! कान खोलि क' सुनि लिअ। कमलीक सासुर गेलाक बाद जँ अहाँ गामक दोसर छौंड़ी लग नम्बर लगेबै ने त' सभटा छौंड़ी मिलि क' अहाँक मुह मचोड़ि लेत। सभ मिलि क' अहाँक से ने गंजन करत जे अहाँ गाम सँ पड़ा जायब। कहू त' एखन मंगलीक मोन केहन बेकल लगैत हेतै? भूखल-पिआसल घर मे बन्द। ने गीत आ ने नाद। मानलहुँ जे मंगली कैँ आब सासुर जाइए पड़तै, तखन एकटा गोसाउनियोक गीत होयब जरूरी छै कि नहि? मार बारहनि कोबी सनक मनसा कैँ। सभटा पाप अही कोढ़ियाक कपार पर बजरतै।

कोबीक माथ पर ठनका खसि पड़लै। नशा मे छल तैँ की? ओकर अपन अंधकारमय भविष्य आँखिक सोझाँ मे प्रगट भ' गेलै। कमलीक बिदागरीक बाद जँ ओ आन प्रेरणाक स्रोत ताकत त' ओकर की गति हेतै से चनकी बाजि चुकल छलि। गगन मालिकक फरमाइश एक दिस आ चनकीक खौँराठल बात दोसर दिस। सही

मे जँ सभटा छौंड़ी मिलि जेतै त' ओ की, ओकर बापोक बश नहि चलतै? कोबी कैँ दिव्यज्ञान होब' लगलै।

तखने ओकर प्रियदर्शनी कमलीक वाण ओकरा कर्णगोचर भेलै—हरौ निबुझ हरौ हरशंखा। काल्हि मंगली अपन दुल्हा जरे सासुर चलिए जेतै तखन तोहर पहरा कोन बातक? अपन भाभट समट आ छौंड़ी सभ कैँ आंगन जाए दहीन।

भगवतीक गीत गबैत सभटा छौंड़ी सिनुरिया काकीक आंगन मे प्रवेश कैलक। छठि दिन माँस-मदिराक सेवन? सिनुरिया काकीक करेज मे भय पैसल छलै। हे छठि परमेशरी! हमरा छिमा क' दिअ। नीक जकाँ जँ मंगलीक बिदागरी सम्पन्न भ' जेतै त' हम अगिला छठि मे अपना आँचर पर नटुआ नचायब, एकटा बेशी क' कोनियाँ उठायब। छौंड़ीक झुंड कैँ देखिते सिनुरिया काकीक मोन हर्षित भ' गेलै। छठि परमेसरी ओकर विनती सुनि लेलखिन। ओ हुलसि क' बाजलि—आबै जाह! आबै जाह!! मंगलीक स्वांग लेल, मंगलीक सोआमी लेल, मंगलीक सुख-मनोरथ लेल गोसाउनिक गीत गबैत जाह।

छौंड़ीक झुंड मे नव बिआहलि कनियाँ सेहो छलीह। नव कनियाँ घोघ सँ मुह झँपने छलीह। मंगलीक बहिन देवकीक प्राण जेना घुरि अयलै। ओ अपन फूलदाइ निरमलियाक गरदनि पकड़ि कान' लागलि। चनकी फरकीक ताला खोललक। जतय मंगली बन्द छलि ओही कोठली मे सभटा छौंड़ी ढुकि गेलि।

छौंड़ाक झुंड पिहकारी दैत दलान पर पहुँचि गेल। एखन दलानक मतंगा पर वर बनल ललुआ असगरे बैसल छल। छौंड़ाक मंडली ललुआ कैँ घेरि क' बेसि गेल। एकटा छौंड़ा खिखियाइत कहलक—देखहीं, मंगलीक दुल्हा कतेक सुन्नर छै। तकरा अनसुनी करैत बौना पुछलकै—अयँ यौ पाहुन, अहाँक चानि परहक जुल्फी किएक उड़ल अछि?

—उड़ल नइँ छै, कतरल छै। डाक्टर कतरि देने छै। फौँड़ा भ' गेल रहै। मलहम लगबै ले चानि परहक केश काटब जरूरी भ' गेल रहै।

सुपरिया प्रश्नक गोला दगलक—दरभंगा मे अहाँ कोन काज करै छियै? अहाँक काजक जगह कत' अछि?

—लहेरियासराय टॉवर लग हमर बाबू बैसैत छथिन। हम बूट पॉलिसक बक्सा लेने जजी, मुंशीखाना, वकालत खाना, कलकटरी सभ ठाम घुमि-घुमि क' लोकक जुत्ताक पालिस करैत छियै।

—एक दिन मे कते कमा लैत छी?

—से सुतार पर निर्भर करैत छै। लहि गेल त' साठइ-सत्तर टका आ नइँ लहल

त' कोनो-कोनो दिन बोहनीओँ पर आफद।

छेदिया दलानक नीचाँ सिपाही लेल खैनी चुना रहल छल। ओतहि सँ बाजल– मंगलीक नसीब लहलहा रह छै। मंगली राज करत, राज। एहन कमौआ साँय कमे छौंड़ीक भाग्य मे रहैत छै।

छेदिया थपड़ी बजा-बजा क' खैनीक चून झाड़लक। तखन ओतहि सँ पुछलक– अएँ यौ मेहमान, दरभंगा मे अहाँक डेरा कत' अछि? अहाँक गाम झटकाही लहेरियासराय सँ कतेक दूर?

ललुआक कंठ मे किछु अटकल रहै। ओ खोँ-खोँ करैत कंठक ढेसी कैँ मेटौलक तखन जवाब देलक–दरभंगा मे अफन डेरा? सपना देखैत छी की? भरिदिन खटलहुँ आ राति मे लाटफारम पर सुति रहलहुँ। लाटफारम पर सुतै लेल महिनबारीक पन्द्रह टका शुरुए मे दिअ' पड़ैत छै। कचहरी खुजल रहल त' काज-धन्धा चालू, बन्द रहल त' सोझे गामक रस्ता पकड़ू। गाम जेबा लेल पहिने बाइस नम्बरक गुमती पार करू। एक कोस तक पूब माथे चलैत रहू। तखन पक्की सड़क छोड़ि दिऔ। उत्तर मुँहे एकपेड़िया पकड़ने-पकड़ने चलैत रहू। रस्ता मे खाली डीठ बोरनक जंगल भेटत। ककरघटी टीसनक लग देने चलैत जाउ। कोस भरि रस्ता पार करिते झुटकाही पहुँच जाउ। लहेरिसराय सँ झुटकाही पहुँचै मे मुश्किल सँ मुश्किल दू घंटा लागत। बाबूक पयर मे बेमाय फाटल छनि ने, तैं हमरा आर कैँ बेसी समय लगैत छै।

छेदिया आरो किछु पुछितए कि तखने चनकी आ कमली छौंड़ीक झुंड संगे गीत गबैत आँगन सँ बाहर आयलि आओर मंगलीक वर कैँ ल' क' गेलि।

आँगनक एक कोन मे कोबी उदास बैसल छल। कमली ओकरा निर्बुध हरशंखा कहि क' फज्झति कयने रहै तँ ओकर कवि-हृदय छलनी भ' गेल रहै। क्षणभंगुर संसार सँ ओकरा विरक्ति भ' गेल छलै। कोनो काज मे ओकरा मोन नहि लगैत छलै। मुदा तइ सँ काज कोना चलितैक? ओकर एखुनका जिम्मेदारी ओकर माथ मे ढोल पीटि रहल छलै। ओ मनहिमन किछु विचारलक। गिलास मे आधा तक थ्री एक्स रम नामक मदिरा ढारलक आ बिन पानि मिलौने गटगट पीबि गेल। हँ, हँ, आब कोबी कैँ चैन भेटलइ। खिन्न भेल मोन दुरुस्त भेलै। एखन रंज करब नीक बात नहि छल। ओहुना आब कमलीक मोले की? महिनाक भीतरे ओ सासुर चलिए जाइत। एखन गगन मालिकक काज सभ सँ ऊपर। मंगलीक वर आँगन पहुँचि गेलैए। बिआहक विधि-बाध होइत रहतै। आब बरियात कैँ भोजन करायब सभसँ बेसी जरूरी काज। लोटा त' मुखीराम ल' गेलाह अछि। गिलास दलाने पर अछि। आधा खाली भेल बोतल ल' क' कोबी दलान दिस डेग उठौलक।

मुदा ई की भेलै रौ बाउ? कोबीक पयर डगमग-डगमग किएक कर' लागल छल। ओकर मदिराक निशा पचैबाक आदति नहि। कतेक मदिरा पिबाक चाही तकर ज्ञान नहि। गगन मालिक चेता गेल रहथिन 'तोँ मदिरा नहि पीबिहँ'। मुदा कोबीक मोन थ्री एक्स बोतलक आकार एवं रंगरूप मे फँसि गेल छलै। लोभ कैँ ओ दमन नहि क' सकल छल। तखन जे हेबाक चाही सैह भेलै।

सिनुरिया काकीक घर सँ हटल अन्हार मे एकटा ढेग पर बचकुन बैसल-बैसल सभ किछु देखि रहल छल। कनिए काल पहिने छेदिया, बौना आ मधुरिया सेहो ओतय पहुँचि अगिला कार्यक्रम द' विचार क' रहल छल। ताही घड़ी निशाँक झोँक मे लटपटाइत कोबी ओही ठाम पहुँचि गेल जतय बचकुन अपन अड्डा बनौने छल। नीचाँ जमीन पर बैसैत काल कोबी ओँघरा गेल, मुदा ओहू हालत मे ओ बचकुन कैँ चिन्हि गेल। कहुना अपन होश कैँ ठेकाना पर अनैत कोबी बाजल—बचकुन भाइ! आब तोरे भरोसा। हम त' अहि सार बोतलक खजरपना मे ओझरा गेलहुँ अछि। गामक प्रतिष्ठाक सवाल अछि। लाचार छी आ तैँ मदति लेल गुहारि करैत छी।

कोबीक मुहक दुर्गन्ध लगभग एक लग्गा जमीन मे पसरि गेल रहै। सभ काज मे अड़ंगा लगौनिहार कोबी अपनहि करतूत मे फँसि गेल छल। बचकुन चुपे रहल। मुदा परिस्थितिक करामात कैँ बुझैत बौना कोबीक कान मे मुह सटबैत कहलकै—कोबी भाइ! अहाँ भरि दिनक थाकल छी। तैँ अहाँक ई दशा भेल अछि। अहाँ सनक रेहल-खेहल कैँ बोतलक मदिरा की बिगाड़ि सकैत अछि? लाउ बोतल। हम सभ मिलि क' बरियात कैँ खुआ-पिआ क' टंच क' देबै। अहाँ मसुरी भरिक चिंता नहि करू।

कोबी चिंता करक दशा मे छलो नहि। ओ त' गहींर खत्ताक पैँदी मे पहुँचि फोँफ काट' लागल छल।

कोबीक जखन भक टुटलै, भोर होयबा मे बेसी बिलम्ब नहि रहै। कोनो कुकूर कोबीक मुह सुंघि रहल छलै। आरौ सार नहितन! कोबी धड़फड़ाइत ठाढ़ भेल। देखलक जे दरभंगाक अस्पतालक साइजक कैक गोट कुकूर मतंगा आ ढलानक नीचाँ घुमि-फिरि रहल अछि। मुर्गा-पोलावक गंध जे ने करए? एकटा कुकूर त' जातिक सरगना मुखीरामक देह पर टांग उठा कोनो अशोभनीए काज क' रहल छल। राम, राम, अतिथिक एहन दुरगति? कोबीक मोन पीड़ा सँ भरि गेलै। ओ झपटि क' एकटा फट्टा उठौलक आ ललकारा दैत कुकूर कैँ खिहारलक। कुकूरक हैँज लंक ल' क' भागल। हल्ला-गुल्ला मे अतिथिक निन्न टुटि गेलै। पहरा पर नियुक्त सिपाही जे भरि पेट मुर्गा-पोलाव खाए मतंगाक एक कात सुतल छल, सेहो जागि गेल।

कोबी आँगन पहुँचल। सिनुरिया काकी उक्खरि सँ ओँगठल निसभेर सुतलि छलि।

मदिराक निशाक चलिते कमली सेहो ओहिठाम काकीक पाँजरे मे सटलि निन्न छलि। मंगली अपन साँय संगे जाहि कोठली मे छलि तकर फरकी त' भिराओल रहै मुदा ताला नहि लागल छलै। कोबीक करेज धकधक करए लगलै। कहूँ मंगली फबकी पाबि पड़ा त' नहि गेलै? हे भगवान! ओ आब गगन मालिक कैँ कोना मुह देखाओत?

कोबी दुविधा मे पड़ि गेल। ओ कोठली मे जा क' अपन शंका मेटबए चाहलक। नव कनियाँ-वरक कोठली मे जैबा मे ओकरा असौकर्य होब' लगलै। कमली ओही ठाम छलि। ओ देखितै त' कोबीक दुर्दशा क' दितइ।

कोबी असमंजस मे छल। तखने मंगलीक वर ललुआ कोठली सँ बाहर आयल आ कोबी कैँ एक कात ल' जा क' कहलक—कनियाँ कैँ कनिए छुलियनि त' ओ से ने हबक्का कटलनि जे राति भरि कुहरि-कुहरि क' भोर कैलहुँए।

ललुआ धोती उठा पोन परहुक हबक्का देखा देलकइ। रतुका थ्री एक्स रमक प्रभाव एखनहुँ कोबीक माथ कैँ सनसनौने छल। ओकर प्रवल इच्छा भेलै जे एकटा कसि क' चमेटा ललुआक कनपट्टी पर बैसा दियै। बिआह केलए त' हबक्का त' पड़िते रहत'। मुदा कोबी अपना पर काबू कैलक। मंगली घरे मे छै से जानि ओकर चिंता समाप्त भ' गेल रहै। ओ चुचकारी दैत ललुआ कैँ कहलक—पाहुन, हबक्का कारणे जे अहाँ कैँ कष्ट भेल से जानि हम दुखी भेलहुएँ। मुदा ई हबक्का बिआहक विधि-व्यवहार छियै। ई सभ संगे होइत छै, हमरो संग भेल छल। एकरा बिसरि जाउ आ जल्दी-जल्दी तैयार होउ, बिदागरीक समय लगिचायल अछि।

कोबी सिनुरिया काकीक लग पहुँचि जोर-जोर सँ चिचिआयल—सुतले रहबै? भोर भ' गेलैए। जागू आ सभ कैँ जगाउ। तौयारी शुरू क' दिअ। बिदागरी सबेरे-सकाल हेतै ने! हम दलान पर सभ कैँ उकसियाब' लेल जाइत छी।

भोरुका आठ बजे समाद एलै जे थानाक जीप बिदागरी करब' लेल आबि गेलैए। मंगलीक बिदागरीक कार्यक्रम आरम्भ भेल। सिनुरिया काकी मंगली कैँ पकड़ि बफारि काटब शुरू कैलक—मंगली गइ मंगली... हम तोरा बिनु केना जिअब गइ मंगली...सुग्गा जँहित पोसलिऔ गइ मंगली...एखनी तँ सुग्गे बनल उड़ल जा रहल छँ गइ मंगली...।

समस्त साधुपूरा मंगलीक बिदागरी मे कान पथने छल। मुदा प्रचलित परम्पराक अनुसारे एकोटा जनानी सिनुरिया काकीक रुदन मे संग दिअ नहि अयलै। कमली आ कोबीक माय धनुकाहीबाली ओतहि छलि, सेहो कान' मे सिनुरिया काकीक सहयोग नहि देलकै।

सभसँ आगाँ वर, घोघ मे मुह झँपने कनियाँ, कनियाँ के पजियौने बिलखैत सिनुरिया काकी, तकर पाछाँ कमली आ धनुकाहीबाली, थोड़े बीच क' सुरता, गंगुआ

एवं मुखीराम आ ढनमनाइत एक हाथ मे राइफल तथा दोसर हाथे डाँड़ मे ससरैत पेन्टक बेल्ट पकड़ने दुनू सिपाहीक जुलूस जा रहल छल। सभक पाछाँ कोबी छल। जेना कोना कवि सम्मेलन मे कोबी कैँ दुपट्टा आ पाग बिदाइ मे भेटल होइ तेहने संतुष्टि आ विजयक भाव ओकर घोड़मुहाँ चेहरा सँ छिटकि रहल छलै।

गामक सभटा छौंड़ा-छौंड़ी आ आन-आन पुरुष-महिला दूरहि सँ मंगलीक बिदागरीक दृश्य कैँ देखि रहल छल।

बिदागरीक जुलूस नवकी पोखरिक मोहार पर पहुँचल। मोहारक आगाँ धानक खेत आ खेतक ओहि पार पीपर गाछ लग ठाढ़ थानाक जीप।

मुदा जुलूसक मोहार पर पहुँचिते एक अजीबे दृश्य उपस्थित भ' गेल। अजगुत बला बात भेल रहै। कनियाँ अपन घोघ हटा क' जोर-जोर सँ चिचिआय लागलि— देखै जाहक हौ गामक लोक! मंगलीक बदला हमरे कनियाँ बना क' बलजोरी ई मनसा ल' जा रहल अछि। हमरा बचबै जाह हौ गामक लोक।

देवकीक कानब आ चिचिआयब सुनि क' गाम भरि मे भयंकर प्रतिक्रिया भेलै। घमगज्जर बल हला भेलै। पिहकारी पड़' लगलै। चारूकातक मनुक्ख मोहार दिस दौड़' लागल। पल खसैत सम्पूर्ण साधुपूराक लोक मोहार पर जमा भ' गेल। सभटा छौंड़ी एकहि संग मेमिआय लागलि—हँ गइ, हँ गइ! ई त' सरिपाँक देवकी छियै, मंगली नहि छियै। तखन मंगलीक की भेलै गइ? मंगलीक जगह पर देवकीक बिदागरी? एहन त' कहिओ ने भेल रहै? मार बाढ़नि एहन बिदागरी कैँ। बज्जर खसतै एहन बिदागरी कर' बला पर।

सिनुरिया काकी, सुरता, कमली आ धनुकाहीबाली कैँ अबिचंक पैसि गेलै। गंगुआ आ मुखीराम अलगे मुह बाबि देलक। ललुआक पोन मे देवकीक दाँत काटल स्थान जोर-जोर सँ बिसबिसाय लगलै। दुनू सिपाहीक दिमाग फेल भ' गेलै। एहन परिस्थिति मे दुनू की करए तकर आदेश दरोगा देनहि ने रहै। गगन यादव बिदागरी करब' ले स्वयं नहि आबि मिसरीलाल कैँ पठौने छल। सभटा हँगामा कैँ देखि क' जीप पर बैसले-बैसल मिसरीलालक पथरी सटकि गेल रहै।

गंगा आ मंगलीक प्रेमक खिस्सा समस्त गामक हृदय मे राधा-कृष्णक प्रेमक लीला बनि स्थापित भ' गेल छलै। ताहू मे अहि प्रेमक खेला मे हीरा मौसी आ मालिक बाबाक सहमति छलनि, तखन एकर विरोध कियो करितए कोना? मुदा विरोध भेलै। विरोध कर' बला बनल गगन यादव। गगन यादवक पिआदा बनल छल कोबी। समस्त गामक क्रोध एवं आक्रोश जमा भ' ज्वालामुखी बनि भीतरे-भीतर उबलि रहल छलै। विस्फोट होबा लेल मार्गक तलास रहै। मार्ग भेटि गेलै। देवकीक चीत्कार सँ

सभहक मोन मे क्रोध प्रगट क' देलकै। सभटा क्रोध कोबीक कपार पर बजरलै।

छेदिया कोबीक नटी कँ गप्फा मे पकड़ि गरजि उठल—बचकुन भाइ! सभटा आफदक जड़ि इएह खच्चराहा कोबिया अछि। लाठी, भाला, गराँस लाउ। कोबिया सार कँ कुट्टी-कुट्टी काटि अही पोखरि मे भसिया दियौ। तकर बाद दोसर पर हाथ फेरब।

हे भगवान, आब की हेतै? स्तब्ध भेल गामक लोक छेदियाक गर्जना सुनि सिहरि उठल। खून-खराबा हेबेटा करतै। साधुपूरा मे जे कहियो ने भेल छल से हेतै। ई दोगला कोबिया सही मे सभटा बिपत्तिक जड़ि अछि। आब एकर प्राण नहिए टा बचतै।

मुदा उग्र भेल भीड़क क्रोध कोबिया पर प्रहार करितए से नहि भ' सकलै। ठीक ओही काल नवकी पोखरिक दक्षिणबरिया मोहार, जतय पक्का घाट छलै, सँ मटर खबासक टाहि सुन' मे अयलै। मटरा पुक्की पाड़िक' कानि रहल छल आ हृदय बिदारक स्वरे सोर पाड़ि रहल छल—यौ ललित मालिक, दौड़ू। दौड़ि क' आउ। देखियौ ने, मालिक कँ की भ' गेलनिए।

मटराक घेघियायब आ तकर कारुणिक ध्वनि नवकी पोखरिक जल कँ स्पर्श करैत उतरबरिया मोहार पर जमा भेल लोकक कान मे पहुँचलै। आशंका सँ अभिभूत सभक हृदय मर्माहत भ' उठलै। सभ पक्का घाट दिस दौड़ि पड़ल।

पछिला प्रत्येक बर्ख जकाँ मालिक बाबा अहू बेर भोरुका छठिक अर्घ सँ बहुत पहिने घाट पर आबि क' बैसि गेल रहथि। हाथ उठि जेतै, सभ अपन-अपन डाला उठा क' बिदा भ' जायत, तखन मालिक बाबा स्नान करताह, राधा-कृष्ण मंदिर मे पूजा करताह आ घुमि क' फेर घाट पर औताह। ताबे तक पार्वती आँगन सँ दू गोट छिपली मे छठिक परसाद अनने रहथिन। परसादक दुनू छिपली ल' क' मालिक बाबा हीरा मौसीक ओइ ठाम जयताह। मौसीक परसाद ग्रहण कैलाक बाद स्वयं परसाद कँ मुह मे देताह। ताही तरहक प्रथा छलै।

मुदा अइ बेरि किछु दोसरे बात भ' गेल रहै। जेना मालिक बाबाक सभ सँ प्रिय वस्तु हेरा गेल होनि, हुनक अहि संसार सँ उचाट भ' गेल होनि, ओ उदास भेल पीड़ापुर जयबा बला रस्ता दिस टकटक ताकि रहल छलाह। बड़ी काल तक हुनक आँखिक डिम्हा स्थिरे रहलनि, फेर हुनकर मूड़ी पाछाँ दिस उनटि गेलनि, आँखि मुना गेलनि।

सीमेन्टक ब्रैंचक नीचाँ कल्लू आ मटरा बैसल छल। छठि पावनिक सभटा काज समाप्त भेल, मटरा धोती-गमछा लेने ठाढ़ भेल आ मालिक दिस तकलक। जकर सेवा मे ओ जीवन बिता देने छल सैह मालिक ओकरा मझधार मे छोड़ि बिदा भ' चुकल छलाह। मटरा कानि रहल छल, घिघिया रहल छल, अहुछिया काटि रहल छल।

ललित आ हुनकर संग आंगनक सभटा महिला घाट पर पहुँचि गेलीह। सभ सँ

अन्त मे पल्लवी ओतए अयलीह। पल्लवी मालिक बाबाक नाड़ी छुलनि, तखन ललित दिस एना तकलनि जाहि सँ ललित कैँ जाहि बातक बोध होयबाक चाही से हुनका भ' गेलनि। ललित पछड़ैत बाबाक देह पकड़ि भोकारि पाड़ि क' कान' लगलाह। पार्वतीक हाथ मे छठिक परसाद छलनि। पार्वती परसाद नेनहि अचेत भ' खसि पड़लीह। समग्र साधुपूराक सम्मिलित क्रंदन सँ अकाशो द्रवित भ' गेल, सम्पूर्ण वातावरण कारुणिक भ' उठल।

राउत खरिहान दिस सँ आबि क' घाट पर पहुँचल। साधुपूरा मे राउत एसगरे एहन लोक छल जकर आँखि मे नोर नहि रहै। ओ कारी रंगक कुर्ता आ खद्दरक धोती पहिरने छल। राउतक बामा हाथ मे एकटा लिफाफ आ दहिना हाथ मे वैह पाथर छलै जकरा ल' क' ओ लगभग चालिस बर्ख पूर्व मालिक बाबाक सेवा मे आयल छल।

राउत किछु काल तक संसारक खेला कैँ चुपचाप देखैत रहल, फेर पल्लवीक लग मे आयल। पल्लवीक आँखि सँ नोरक धार बहि रहल छलनि। राउत अपन हाथक लिफाफ पल्लवीक हाथ मे देलक, फेर मालिक बाबा दिस घुमि क' अपन देवता कैँ अन्तिम प्रणाम कैलक। मालिक बाबाक प्रस्थानक बाद साधुपूरा मे राउतक कोन काज? हाथ मे पाथर लेने पूब दिस, जेमहर सँ ओ एक दिन आयल छल, बिदा भ' गेल।

अश्रुपूर्ण आँखि सँ पल्लवी हाथक लिफाफ कैँ निहारि रहल छलीह। पल्लवी लिफाफ खोललनि। लिफाफ सँ हीरा मौसीक पत्र एवं एकटा हीरा जड़ित मूल्यवान औंठी बाहर कैलनि। पत्र हाथ सँ लिखल अंग्रेजी भाषा मे छल जकर मजमून छलै :

प्रिय पल्लवी,

अहाँ कैँ जखन हमर पत्र भेटत, हम साधुपूरा सँ बहुत दूर पहुँचि गेल रहब। पीड़ापुर सँ दरभंगा हवाइ-अड्डा कार सँ आ ओतए सँ आगाँ प्राइवेट हवाइ-जहाज सँ हमर यात्रा निर्धारित अछि। हमर अगिला मोकाम द' ने हम किछु कहब आ ने अहाँ जिज्ञासा करी से हमर इच्छा रहत।

अहाँ सँ भेटक समय हम कहने रही जे सीता एवं हमर जीवन-चरित्र एकहि तरहक अछि, से सत्य नहि। सीताक धैर्य अंतहीन छलनि। ओ देवी छलीह। मुदा हमर धैर्यक सीमा छल। कारण हम मानवी छी। हमर तृष्णाक अंत नहि भेल छल। शिव कुमार घुमि क' हमर जीवन मे आबथि, तकर हमरा प्रतीक्षा छल, लालसा छल।

हमर पचास बर्खक धैर्य अपन सीमा कैँ प्राप्त कैलक। हमर उद्देश्यक पूर्ति मे सहायक भेल गंगा आ मंगलीक प्रेम। जहिना एक दिन पिताक मृत्यु देखि शिवकुमार एकाएक बिक्षुब्ध भ' गेल रहथि तहिना अपन अत्यन्त प्रिय गंगाक मंगलीक संग

बिबाह मे उपस्थित भेल अड़चन कैँ सहि नहि सकलाह। गंगा आ मंगलीक प्रेमक रक्षार्थ शिवकुमार हमर जिन्दगी मे आपस आबि साधुपूराक त्याग करबा लेल तैयार भ' गेलाह। सभटा बात एकाएक भेल आ हमर सभक यात्राक समय आनन-फानन मे निश्चित भेलै।

शिवकुमार, गंगा आ मंगलीक संग हम साधुपूरा सँ सदा-सदाक लेल जा रहल छी। गंगा आ मंगली हमरा दुनूक संताने नहि, हमर दुनूक सम्पत्तिक वारिस सेहो बनि गेल अछि। अहि सँ अधिक आब चाहबे की करी? साधुपूरा के धन्यवाद! ईश्वर कैँ लाख-लाख प्रणाम!

अहाँ के हम एकटा काजक भार दिअ चाहैत छी। लंदनक एच.एम.भी. मुम्बइक विविध भारती संसारक पैघ संगीत लाइब्रेरी अछि। मुदा हमर बाबा द्वारा संग्रहित संगीतक प्राचीन एवं अर्वाचीन पुस्तक, रेकर्ड आ टेप जकरा हम एतय सुरक्षित रखने रहलहुँ आ जकरा अहाँ हमर आवास देखैक क्रम मे घुमि-घुमि क' देखने छलहुँ, संसारक सभ सँ पैघ आ अमूल्य संगीतक लाइब्रेरी अछि। भारतक संगीत संगहि विश्वक अनेक देशक संगीत हमर लाइब्रेरी अर्थात हमर खजाना मे राखल अछि। हम अहि अनमोल संगीतक खजाना अहाँके सुपूर्द करैत छी।

पत्रक संग एकटा औंठी भेटत। ई हीरा मौसी दिस सँ अहाँ लेल सनेस अछि। अहाँ जाबे तक हमर देल औंठी अपन आँगुर मे पहिरने रहब ताबे तक हम अहाँक हृदय मे स्थापित रहब।

ढेरो शुभकामनाक संग,
सस्नेह
हीना (हीरा मौसी)

अहि संसार मे मृत्यु त' रोजे होइत छैक। हजार मे, लाख मे प्रतिदिन मनुक्ख धरती त्याग करै अछि। मुदा मालिक बाबाक मृत्यु? पल्लवी साधुपूराक चहुँ दिसि तकलनि, जेना साधुपूराक सूर्ये डुबि गेल होअय। बिना हीरा मौसी आ शिबू बाबाक साधुपूरा केहन लगैत छै? एतय की फेर प्रेम पनपि सकतैक, एकर माटि मे सुगन्धि आबि पौतैक? जाय दिऔ, अहि बातक विचार नहि करी सैह उत्तम होयत।

*****